# पहली रात का अंत

डॉ. उमेश कुमार सिंह

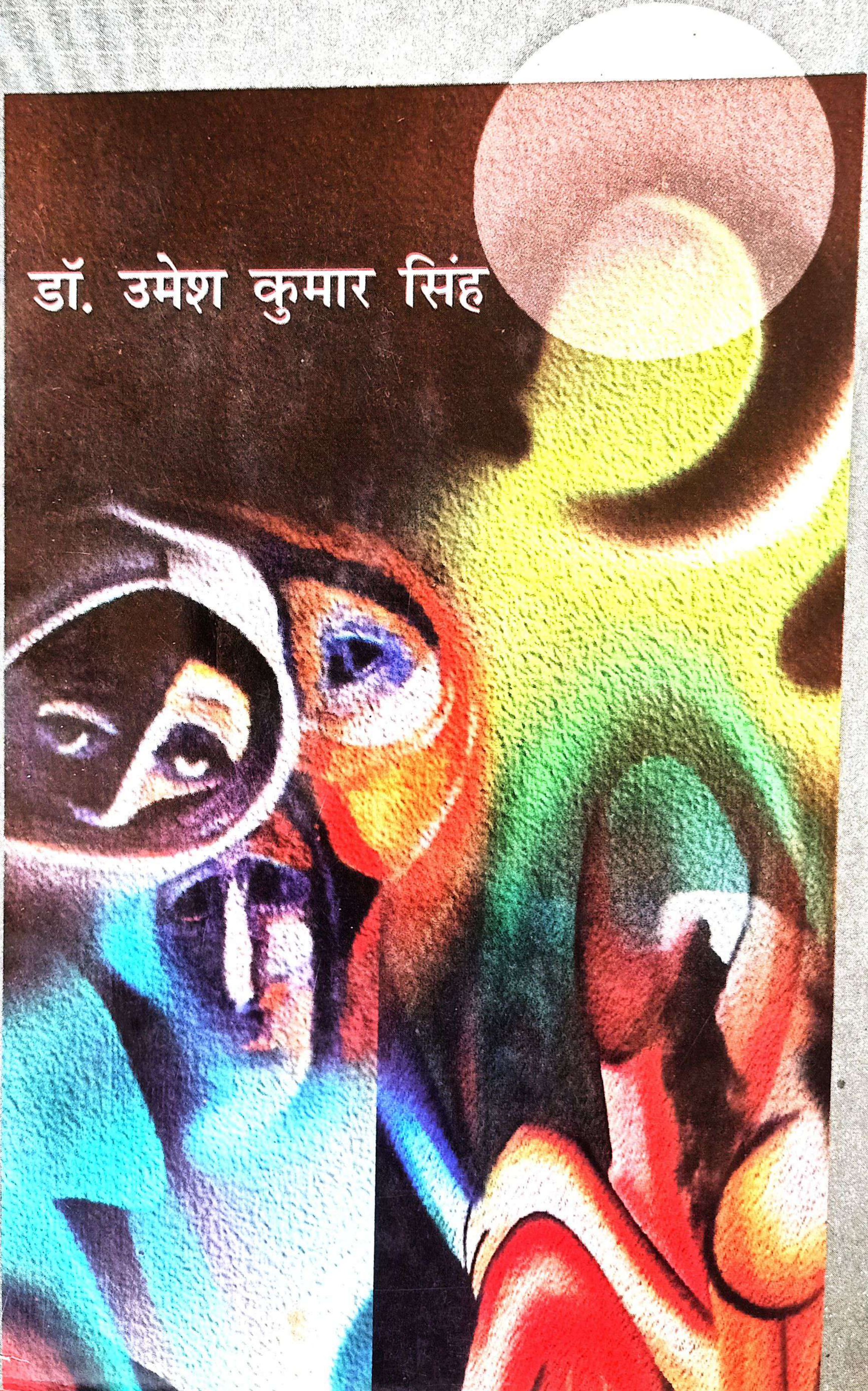

# पहली रात का अंत

डा. उमेश कुमार सिंह

साहित्य संस्थान
गाजियाबाद

I.S.B.N. : 81-89495-18-6

© : लेखक

मूल्य : 150
प्रथम संस्करण : 2007
प्रकाशन : साहित्य संस्थान
ई- 10/660, उत्तरांचल कालोनी, (निकट पाइप लाइन)
लोनी बार्डर, गाजियाबाद -201102
फोन : 0120-2603892
लेजर टाइपसैटिंग : रूहैला ग्राफिक्स फोन : 09213432657
मुद्रक : लक्ष्मी ऑफसेट
विश्वास नगर, शाहदरा दिल्ली

**PAHALI RAAT KA ANTH**
**by Dr. Umesh Kumar Singh**

*स्नेहमयी माँ*
*एवं आदरणीय पिताजी के लिए*
*जिनका आशीर्वाद मेरे सतत आगे बढ़ने*
*के लिए जीवन का संबल रहा हैं....*

# अनुक्रम


पृष्ठ संख्या

| | | |
|---|---|---|
| 1. | पहली रात का अंत | 9 |
| 2. | माफी | 30 |
| 3. | विश्वास | 39 |
| 4. | रात्रि भोज | 52 |
| 5. | उन्नति का राज | 59 |
| 6. | परिवर्तन | 65 |
| 7. | मुझे बाइ-बाइ कहना | 70 |
| 8. | जीवन-दान | 79 |
| 9. | रम्पो का चेहरा | 88 |

# पहली रात का अन्त

पृथ्वीपुर गाँव के एक मात्र जमींदार है ठाकुर चंदनसिंह। हजारों एकड़ जमीन के अकेले मालिक। पूरे गाँव में उन्हीं का राज चलता है। उनकी हवेली के कहने ही क्या? पूरा राजमहल है। राजमहल दस एकड़ जमीन में हवेली और बाग है, जिसमें भाँति-भाँति के फल-फूलों वाले वृक्ष लगे हुए हैं। हवेली की सात ड्योढ़ियाँ हैं जिनमें मेहरावों वाले बड़े-बड़े द्वार है। सुना जाता है कि इनके परदादा हाथी की सवारी पर चलते थे। आज भी इलाके में इंग्लिश बन्दूक इन्हीं के पास है। इनके यहाँ नौकरों की तो गिनती ही नहीं है।

आज भी गाँव के लोग जमींदार से डरते हैं। क्या मजाल है कि गाँव का कोई आदमी उनकी तरफ सिर उठाकर बात कर ले। सिर को कटवा लेते है। ठाकुर साहब आज भी ठाठ से राजा की तरह रहते हैं। आस-पास के हाकिम-हुक्कामों में उठना-बैठना है। जिले के कलक्टर, जज आदि तो मुलाकात करने आते है। असल में मुलाकात करना तो बहाना होता है। इस बहाने सैर-सपाटा और शिकांर का आनन्द उठाते हैं। जब भी कोई बड़े हाकिम यहाँ घूमने आते हैं यह पृथ्वीपुर गाँव की प्रशंसा किए बिना नहीं रहते। कहते हैं– 'गाँव क्या है, स्वर्ग है, स्वर्ग!' एक तरफ नदी, दूसरी तरफ नदी के उस पार सैंकड़ों किलोमीटर में फैला घना जंगल है जिसमें स्वच्छन्द विचरते जंगली जानवर कुलांचे भरते दिखते ही रहते हैं। इसी जंगल में सरकारी अफसर शिकार का मजा लेते हैं। ठाकुर साहब उनके लिए शराब और शबाव का पुख्ता इंतजाम करते हैं। वैसे वह भी खुब रंगीन मिजाज हैं।

कलुआ गाँव के जमींदार का कारिन्दा है। वह नाम से ही कलुआ नहीं बल्कि शरीर से भी एकदम काला है। जैसे किसी मलूक सूरत पर काजल पोत दिया गया हो। उसकी अम्मा हरेदेई कहती है कि कलुआ का जन्म उस साल हुआ था जिस साल अंधियार पाख में बाढ़ आई थी। आसमान में काले-घने बादल उमड़-घुमड़ रहे थे। बादलों की आपस में टकराहट से गड़गड़ाहट के साथ आसमान में बिजली कौंध रही थी। ऐसा ही योगीराज श्रीकृष्ण के जन्म के समय हुआ था। इस कारण माँ उसे प्यार से किशुन कहकर पुकारती है। पर उसके कहने भर से क्या होता है। काले रंग का होने के कारण बचपन से ही पूरा गाँव उसे कलुआ कहकर ही बुलाता है। कलुआ एकदम हट्टा-कट्टा छह फुटा जवान है पहलवान की तरह। मजाल है गाँव में उससे कोई आँख मिला जाय। दुहरी देह का पट्ठा जो ठहरा। पूरे गाँव में उसका लट्ठ पुजता है। ठाकुर साहब का मुँह लगा है। उसका दिन भर बस एक ही काम है सुबह से शाम तक हवेली के द्वार पर पाँच सेर का लट्ठ लेकर बैठे रहना। जमींदार का हुकमी है। जिसे भी बुलाने का हुक्म हुआ, बस उसी के घर जाकर लट्ठ गाड़ दिया। वह किसी के घर के आदमी साथ लाए बिना नहीं लौटता। उसे किसी की शादी-विवाह, मौत-बुढ़ापे, हारी-बीमारी से कोई लेना-देना नहीं। बहुत निर्दयी है। रोटी खाते आदमी को उठाकर जमींदार के सामने हाजिर कर देता है। उसके इसी काम से जमींदार बहुत खुश रहते हैं।

जब वह पन्द्रह वर्ष का था, तभी से वह जमींदार की ताबेदारी कर रहा है। वह मालिक के हर बुरे काम का एकमात्र गवाह और साझीदार है। उसकी जिन्दगी बस इसी प्रकार गुजर रही है। कभी उसे आभास भी नहीं हुआ कि वह कब चालीस को पार कर गया। उसे हुकम-अदूली के सिवाय कुछ सूझता ही नहीं। निपट गँवार, अनपढ़ और अंगूठा टेक है। उसकी बुद्धि में अपना काम करते हुए गर्व महसूस होता है। अपने जीवन-काल में उसने कभी एक क्षण को भी अपने बारे में नहीं सोचा। उसकी जाति के सभी लड़कों की एक के बाद एक, कब की शादियां



हो चुकी हैं। हालांकि उसकी जाति में छोटी उम्र में ही शादी हो जाने का रिवाज है, परन्तु उसका बाप तो कभी का मर चुका है जो शादी करवाने की चिंता करता। बस उसकी अंधी माँ है। वह भी क्या करे बेचारी। खुद ही पराश्रित है। वह वर्षों से मुहल्ले की औरतों से शादी की बात करती आ रही है, परन्तु हर समय उसका व्यवहार आड़े आ जाता है। इसलिए किसी ने उसकी शादी के बारे में बात नहीं चलायी। भला हो ठाकुर चंदन सिंह का जिन्होंने एक लड़की वाले को समझा-बुझाकर और उससे ज्यादा धमकाकर, शादी के लिए रजामंद कर लिया, वरना इस अधेड़ का धरेजा भी न होता।

आज कलुआ बड़ा प्रसन्नचित है। हो भी क्यों न, बारात जो जा रही है उसकी। उसके मुहल्ले के लोग भी बड़े खुश दिखाई दे रहे हैं। सभी आज नए कपड़े पहनकर इधर-उधर घूम रहे हैं और इस इंतजाम में है कि कलुआ कब तैयार हो और कब बारात रवाना हो।

आज वह बड़ी उमंग में है और फूला नहीं समा रहा है, परन्तु वह बहुत व्यस्त है। इससे पहले कभी भी वह इतना व्यस्त नहीं रहा जितना आज है। सभी काम उसी को जो संभालने पड़ रहे हैं। बेचारे का न कोई नाते-रिश्तेदार है, न घर-कुनबे का ही कोई बचा है। जो कुछ है वही है या उसकी अंधी-धुंधी माँ है।

माँ अँधी है तो क्या हुआ, आज उसका भी पाँव सवाया उठ रहा है। क्यों न उठे। बेटे की बारात जा रही है। इसी सपने को देखते-देखते वह अंधी हो गई है। बड़ी परीक्षा ली है उसकी भगवान ने। आज सुनी है, वर्ना उसकी तो सब आशाएँ टूट चुकी थीं। वह सवेरे से कई बार कह चुकी है, 'जा बेटा, हवेली में ठाकुर के आगे सीस नवा कर आ।' वह है कि सुनता ही नहीं है। इसी उधेड़बुन में पूरी दोपहरी बीत चुकी है।

कलुआ का घर तो कच्चा ही है पर उस पर सफेदी करवा देने से कुछ साफ लग रहा है। आगे छप्पर डलवा रखा है। उसी में माँ ने चूल्हा बना रखा है जिसके कारण सब काला-काला हो गया है। हजारों मकड़ी के जाले लगे हुए हैं जिनमें मकड़ियाँ अपने नए शिकार

मच्छर-मक्खियों को फँसाने में लगी हुई है।

आज घर के द्वार पर ढोल-तासे बज रहे हैं। बाजे वालों के साथ का एक लड़का स्त्री बना हुआ नाच रहा है। उसके नाच और कमर की लचक पर बच्चे, युवा और बूढ़े सभी हंसकर आनन्दित हो रहे है। इस अवसर पर बूढ़े अपनी युवावस्था की यादें ताजा कर रहे हैं। गाँव में इसके अलावा और कौन-सा मनो-विनोद का साधन है कुल मिलाकर कभी-कभी समय के अनुरूप स्वांग, आल्हा या होली पर होली गाने की मण्डलियों का गाना बजाना बस। बहुत हुआ तो ढोला गवैया का ढोला हो जाता है। रेडियो तक लोगों पर नहीं हैं। क्या करें, इतनी आमदनी ही नहीं है। जो कमाते हैं उससे पेट का गड्ढा ही मुश्किल से भर पाता है।

बारात निकासी से पूर्व शुभ मुहूर्त के अवसर पर दूल्हें को नए कपड़े पहनाए जाने लगे तब स्त्रियाँ मंगल गीत गाने लगी। आज द्वार पर बहुत धूम मची है। शरारती लड़के आपस में धक्का-मुक्की कर रहे हैं। जब बनड़े ने कपड़े पहन लिए, तो वह अपनी माँ से बोला, 'माँ ठाकुर की हवेली में चल।' माँ बोली– 'अब तू अकेला ही जा। मै सवेरे से ही कह रही हूँ कि जाकर ठाकुर को सीस नबाय आ बेटा, पर तू है कि सुनता ही नहीं, अब तू ही भुगत।'

कलुआ हठ कर गया। आखिर में माँ से बोला– 'तू साथ न जावेगी तो मैं भी बारात लेकर नहीं जाऊँगा।' एकदम बच्चे की तरह अड़ गया। हाथ पकड़कर खींचने लगा। तब बुढ़िया साथ में चल ही दी। रास्ते में वह अपनी माँ से धीमे से बोला, मैं हवेली वालों की नस खूब जानता हूँ, उन्हें क्या अच्छा लगता है, क्या नहीं। मेरा तो रोज का काम लोगों को बुलाने का है। कितने ही आदमियों को मैं नीम से बांधकर मार खाते हुए देख चुका हूँ। अम्मा, तू भी खूब जानती है कि तेरे न जाने पर ठकुरानी नाराज होती।'

'मैं सब समझती हूँ बेटा! यह मेरे बाल धूप में सफेद नहीं हुए हैं। इसलिए तो सुबह से तेरे पीछे पड़ी हुई हूँ कि हवेली चला जा, पर तूने मेरी एक नहीं सुनी।' बातों में दोनों इतने खो गए कि उन्हें पता



ही नहीं चला कि कब हवेली आ गई।

कलुआ अचानक बोला, 'अम्मा, हवेली आ गई।' माँ के साथ हवेली में घुसते ही ड्योढी से ही उसने 'पांय लागू सरकार' कहकर अभिवादन किया।

'खुश रहो! ठाकुर चंदनसिंह ने आर्शीवाद दिया, फिर नाराज होते हुए बोले, 'क्यों रे कलुआ, तेरा अब सवेरा निकला है। यहाँ इंतजार करते-करते हमारी आँखें दुखने लगी। नवाब का बच्चा, अब निकल कर आया हैं।'

कलुआ और उसकी बूढ़ी माँ दोनों डर से कांपने लगे। दोनों एक साथ माफी मांगते हुए उनके पैरो में गिर पड़े।

चन्दन सिंह चेहरे पर गम्भीरता लाते हुए बहुत देर तक सोचते रहे फिर कुछ देर बाद जैसे यादों के गहरे सागर में डुबकी लगाकर आए हों, बोले, 'खैर, चल माफ किया। तू तो हमारा कारिन्दा है, भई तुझे तो माफ करना ही पड़ेगा। चल उठ, ठकुरानी तुझे कुछ देना चाहती है उन्हें प्रणाम करके ले ले।'

ठकुराइन सुनयना देवी ने पहले कलुआ को आशीर्वाद दिया, फिर एक कुर्ता-धोती और इक्यावन रुपए देने के लिए हाथ बढ़ाया। कलुआ ने कुर्ते की झोली फैलाकर उसमें सगुन ले लिया।

वह सगुन लेकर खुश हुआ। एक बार फिर ठाकुर और ठकुरानी दोनों को 'पांव लागू' कहर अपनी माँ का हाथ पकड़कर लपकते पैरों से घर की ओर चल पड़ा। वह जब रास्ते में जा रहा था तब चौक में खड़े कुछ लोग काना-फूंसी करते और बुदबुदाते नजर आए। वह धीरे-धीरे कह रहे थे। इस ससुर कलुआ को अब मालूम पड़ेगी। बड़ी धौंस जमाता फिरता था। गाँव में किसी की शादी होकर बारात पहुँची नहीं कि आ धमका। खैर जब अपनी दुल्हन भेजेगा तो.... बहुत लाटसाहब बना घूमता फिरता था।

आँखों की तरह बेचारी कलुआ की माँ के कान भी जवाब दे चुके थे। वह लोगों की इन ज़हर में बुझी बातों को न सुन पाई। परन्तु

कलुआ को लोगों की इन बातों का मतलब अच्दी तरह समझ में आ गया। इन बातों के सुनते ही उसका चेहर एकदम जर्द पीला पड़ गया और उसके पैर डगमगाने लगे। मगर उसे लगा कि सच्चाई शायद यही है। अब उसका कलेजा बाहर को उमड़-उमड़कर आने लगा। कभी अपने पच्चीस बरस के सेवा काल में ऐसा समय नहीं देखा था। उसने हजारों शादियां देखी थी। कभी मस्तिष्क में ऐसा विचार न आया कि ऐसा समय भी आयेगा जब वह पर कटे पंछी की भांति तड़पता रहेगा। कुछ करने में इतना असहाय होगा। बुदबुदाते-बुदबुदाते वह दांत पीसने लगा और जोर से चिल्लाया 'हरामखोर....तेरी तो मैं जरूर खबर लूँगा।'

माँ बोली, "बेटा क्या बात है, दांत क्यों पीस रहा है क्या किसी ने कुछ कह तो नहीं दिया?"

वह बात को घुमा गया और बोला, 'नहीं अम्मा ऐसी कोई बात नहीं है। बस यों ही कुछ पुरानी बात याद आ गई थी। माँ, ये लोग किसी का खाया-पीया नहीं देख सकते। जब भी मौका मिला तो जले पर नमक छिड़के बिना नहीं रहते हैं।' यह सब बातें उसने अपनी माँ का मन समझाने के लिए कही थी।

इन बातों को सुनकर माँ भी सोच में पड़ गई। उसे कुछ शंका हुई कि कहीं कोई अनहोनी न हो जाय। भगवान सब ठीक रखना। फिर स्वंय ही अपने मन को समझाते हुए बोली, 'भगवान इतना निर्दयी कभी नहीं हो सकता है जो मेरी इस खुशी को भी न देख सके। फिर गहरी सांस लेते हुए बोली, 'में भी निरी भोली हूँ, पता नहीं अनाप-शनाप क्या-क्या सोचती रहती हूँ।'

दूल्हे के आने का सभी बाराती बड़ी बेचैनी से इंतजार कर रहे थे। उसे आता देखते ही सभी मशीन की भांति स्वतः ही चलने की तैयारी में जुट गए। गाड़ियों में बैल जुते कब से खड़े थे। सभी तैयारियाँ तो पहले ही कर ली गयी थी। दूल्हे के बैठते ही सभी बैलगाड़ियां हांक दी गई।



बरात राजपुरा में नियत समय के बाद ही पहुँची। इस समय उजाले की सफेद चादर अंधेरे के आगोश में समा चुकी थी। चारों ओर झींगुरों, मंजीरों का संगीत गूंज कर अंधेरे की खामोशी को भंग कर रहा था। बारात पहुंचते ही बारूद वाले ने दो गोले छोड़कर बारात आने का संकेत लड़की वाले को दे दिया था। सभी लोग भांड़ो के सजते ही दूल्हे के साथ पैदल ही चमारों के मुहल्ले तक चलने लगे। वैसे दूल्हे के मन में तो घोड़े पर बैठकर बरात चढ़ाने की इच्छा थी, परन्तु बारात-चढ़ने से पहले ही लड़की का पिता स्वयं आकर सूचित कर गया था। गाँव के ठाकुर बारात चढ़ने नहीं देगें। आप लोगों से विनती है कि आप हमारे मुहल्ले में ही बारात चढ़ाना, नहीं तो बिना वजह राड़ हो जायेगी। रंग में भंग पड़ जाएगा। बस मेरी पगड़ी की इज्जत रख लेना।

बुजुर्गो ने बेटी वाले की बात मान ली थी। उन्होंने दुनिया देखी थी, सो समय की नजाकत पहचान कर बारात न चढ़ाने का निर्णय ले लिया। करते भी क्या? नहीं तो बिना वजह पिटना पड़ता।

दूल्हे के तो हाथ फड़क रहे थे। आँखें लाल लो गई थीं। वह गुस्से में आकर कहने लगा, 'रास्ता इनके बाप का है। हम रास्तें को बांधकर थोड़े ही ले जायेंगे। घंटे भर में बारात चढ़ जाएगी। मैं यहाँ बारात लेकर ब्याह करने आया हूँ नहीं तो ठाकुरों की सब ठकुरहट निकाल देता। मैं अकेला ही दस पट्ठों के लिए बहुत हूँ। हम इन्हीं की दिन-रात ताबेदारी करते हैं और ये हैं कि हमारी खुशी भी नहीं देख सकते।'

अधेड़ उम्र के एक समझदार बाराती ने उसे समझाया, 'चल बेटा, कोई बात नही हैं। इनके मुँह लगता है। इनका ही राज है, इनके ही हाकिम थानेदार है। हम लोगों की कौन सुनता है। यह लोग हमें तो कुत्तों से भी बदतर समझते हैं। भले ही आज हम उनकी बराबरी कर सकते हैं। हमारी जाति के लोगों में धन की कमी है, नही तो सब मजा चखा देते'

इन बातों ने आग में घी का काम लिया। दूल्हे का विद्रोह भड़क उठा पर कुछ सोच कर वह चुप रह गया। मन ही मन में ही बोला कि मैं ब्याह के बिना ही रहता तो ठीक था। जाने और कौन-कौन से अपमान सहने पड़ेंगे। मैं इन ठाकुरों को मजा चखा कर ही रहूँगा। आज न सही, फिर कभी सही। मैंने भी माँ का दूध पिया है।

बरात मुहल्ले तक पैदल ही गई। मुहल्ला शुरू होते ही बारात चढ़ने लगी। ढोल-बजने शुरू हुए और भांड नाचने-गाने लगे। जब बरात दरवाजे पर पहुँच गई। तब गाँव की बड़ी-बड़ी औरतें मिलकर गीत गाने लगी। गाँव में शादी-विवाह के अवसर पर गाली भरे गीत गाना अच्छा-शगुन माना जाता है। दूसरे, इनसे मनो-विनोद का वातावरण भी बनता है। ऐसे अवसरों पर बूढ़े भी हँसी-ठट्टे का भरपूर आनन्द उठाते हैं भले ही वह पैर कब्र में लटकाए हुए बैठे क्यों न हों।

जावित्री देवी मुहल्ले भर में गाली भरे गीत गाने में उस्ताद मानी जाती हैं। उन्होंने यह विशेषता अपने अस्सी बरस के अनुभव के कालिज में पढ़कर हासिल की है। औरतें कहती है कि उनकी माँ भी अपने गाँव में गीत गाने की हैड मास्टर थी। सभी-गीत जावित्री ने अपनी माँ से बचपन से ही सीख लिए थे। जब वह इस गाँव में ब्याहकर आयी थी। तब बहुत शरमाती थी। हमेशा पर्दे के पीछे से गीत गाती थी, पर अब मंच पर खुलकर अपने पोपले मुँह से गाती नहीं थकती है।

*कारे बुलाए, भूरे आए री बिल्ली*
*पर कूंइ कूंड कूंइ......*
*मिर्चा ऊपर मिर्चा सारे तुम्हारी बहनको*
*लै के भाग जाय भत्ता कलकत्ता*
*पर कूंइ कूंइ कूंइ.....*

लडकी की माँ ने वर को दरवाजे पर बुलाकर टीका करके नेग दिया। साथ ही घर, कुनबों की औरतों ने भी वर-वधु को अच्छे



पारिवारिक जीवन का आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर दरवाजे पर औरतों की भीड़ लगी हुई थी, परन्तु एक को भी बतलाने से फुर्सत नहीं थी। औरतें चाहे गाँव की हों या शहर की, मुलाकात हुई नहीं कि बतराना शुरू हुआ। चाहे शुभ कार्य हो रहा हो। चाहे अशुभ। वे बतराने का अवसर हाथ से नहीं जाने देती हैं। उन्हें तो बस बोलने के लिए विपक्षी दल की तरह मुद्दा चाहिए। वर अभी दरवाजे पर हीं खड़ा हुआ था। मुँह पर ही कानाफूसी और खुसर-फुसर करने लगी। एक बोली, हाय बहना कलुआ चून की लोई लेकर उड़ गया री।'

दूसरी हंसती हुई बोली, 'भागमल की फूट गई है क्या? जो बूढ़े लोग को करके आए हैं।

तीसरी ने कहा, बहना अब क्या हो सकता है। अब जो भाग्य में लिखा है। वह तो होकर ही रहेगा।

जावित्री से भी न रहा गया। वह बोल ही पड़ी, 'अरी बहना, छोरी तो बहुत भोली है। बेचारी अभी सोलह की ही हुई है, जि कलूटा-चालीस बरस का बूढ़ा। छोरी रो-रोकर मर जाएगी।'

औरतों में बातें अभी चल ही रही थी। बारात चढ़ गई। बारातियों ने जनवासें में अपना डेरा डाल लिया। बाराती भूखे भिर्रा रहे थे। आनन-फानन में सभी को यथा शीघ्र दावत खिला दी गई।

लड़की की माँ अपनी बेटी को समझाने में लगी थी। आखिर माँ जो ठहरी। वह मन में भुनभुनाती हुई अपने आदमी को कोसती जा रही थी। 'भग्गा तेरे कीड़े पडेंगे। दारी-जार मेरी मुल-मुला सी छोरी को ऐसे मलूक को करके आया है। नैक नाते-निश्तेदारन को चले जाने दे। तेरी नाक मैंने अपने पैरों में न रगड़वाई तो मेरा नाम मलूकी नहीं। मुझसे चुपड़ी-चुपड़ी बात बनाकर कह रहा था। नाते-रिश्तेदार मालदार और हैसियत वाले हों तो अच्छा रहता है। बहुत हैसियत वाला है। हाथी है हाथी। भगवान मेरी छोरी की रक्षा करना।'

भागमल की आशंका हुई कि कहीं कोई इस शुभ कार्य में विघ्न न पड़ जाय। इस डर से वह अपने बहनोई को समझा रहा था कि जल्दी

से छोरी की भांवरे डलवा दो।

उसके बहनोई समझदार थे। वह थोंडे में ही सब समझ गए। तुरन्त उन्होंने बारात में जाकर कहा, 'जल्दी से लड़का भांवरों के लिए भिजवा दो। मैंने वहाँ सब तैयारी करवा दी है।'

खैराती लाल बिचौलिया मान और दूल्हा को भाँवरों के लिए घर पहुँचाने स्वयं आए।

लड़की की माँ ने दूल्हा-दुल्हन को मण्डप के नीचे कन्यादान के लिए स्वयं बैठवा दिया। मुहल्ले में भी कन्यादान की खबर करने के लिए एक आदमी को भिजवा दिया गया।

भागमल ने अपनी पत्नी मलूकी के साथ सर्वप्रथम बेटी का कन्यादान किया। इसके बाद रिश्तेदारों और बस्ती वालों ने कन्यादान की रस्म पूरी की। रात में लोगों को नींद से जगा-जगाकर कन्यादान के लिए लाया गया। पूरी रात बैठे-बैठे निकल गई। तब जाकर कहीं भांवरों का नम्बर आया। सात भाँवरे लेते हुए सुबह हो चुकी थी। बेचारे दूल्हा-दुल्हन की तो बैठे-बैठे ठंड में कमर ही अकड़ गई। बड़ी मुश्किल से उठ पाए।

सुबह बरातियों को साग पूडी खिलाकर, लड़की वाले ने बरात विदा होने की घोषणा करवा दी। आनन-फानन में गाड़ियाँ सज गई। बाराती भी उनमें पलक झपकते ही बैठ गए।

दूल्हन को रोते हुए लड़की के मामा ने गोद में उठाकर गाड़ी में बैठाया। लड़की अभी अबोध थी। उसे ठीक से रोना नहीं आ रहा था। उससे साड़ी का पल्लू भी नहीं संभाला जा रहा था। दुल्हन के गाड़ी में बैठते ही सभी गाड़ियाँ हांक दी गई। गाँव से धीरे-धीरे निकलने के बाद बैल चकरोट पर पड़ी लीक पर पड़ गए। जब रास्ता साफ आया तो बैल सरपट दौड़ने लगे। गाड़ियों में बैठे बराती आपस में चुहलबाजी करने लगे, जिससे हँसी मजाक का दौर शुरू हो गया। गाड़ीवान जल्दी से रास्ता तय करने में लगे हुए थे ताकि दिन रहते गाँव पहुँच जायं। शाम ढलते हुए झुटपुटे में जाकर कहीं उन्हें गाँव



हाथ आया। सभी ने अपनी-अपनी गाड़ियाँ अपने घेरो में खोली। बस दुल्हा-दुल्हन की गाड़ी उनके घर के आगे खोली गयी।

हरदेई चार औरतों के साथ गा-बजाकर बहू को घर में लिवाकर लाई। औरतें कहने लगीं बहू तो बहुत गौरी है परन्तु अभी उम्र कच्ची हैं बेचारी की...।

माँ घर में बेटे को एक ओर से ले जाकर बोली 'तू हवेली में बुलाया है। दो पहर से कई बार आदमी आ चुका है।' कलुआ को अपनी माँ की बाते सुनते ही बदन में आग लग गई। माथे पर बल पड़ गए। उसे अब अच्छी तरह से समझ में आ गया कि हवेली में क्यों बुलाया है। उसके दिमाग में अनेक विचार आ-जा रहे थे। बहुत सोचने के बाद इस निर्णय पर पहुँचा कि अब वक्त आ गया है। कुछ तो करना ही पड़ेगा। इस नासूर को अब मिटाना ही होगा। नहीं तो यह बीमारी खत्म नहीं होगी।

उसने अपनी माँ को एक ओर ले जाकर धीरे से कहा, 'माँ आज तू मेरी बात को ध्यान से सुन। हमें आज की रात हर हाल में गाँव को छोड़कर' जाना पड़ेगा। यहाँ हमारे पास रखा भी क्या है। यह कच्चा मकान, मिट्टी के बर्तन, यही तो हमारी जागीर है। मेहनत-मजदूरी करके सब पेट भर लेंगे। हाथ पैरों की मेहनत तो हमसे कोई छीन नहीं लेता है।'

माँ आँखों में आँसू भरकर बोली, 'पर बेटा, इसमें तेरे बाप की यादें है। तू क्यों मेरी बुढ़ापे में ख्वारी करने पर तुला हुआ है। जो रीत है हमें निभानी पड़ेगी। तू अकेला दुनिया के रिवाजों को थोड़े ही बदल देगा।'

कलुआ दांत पीसते हुए बोला, 'अम्मा! मैं जो कह रहा हूँ। तू वह सुन। गीत मत गा। अगर तू मेरी बात नहीं मानेगी तो मेरा मरा मुँह देखेगी। यह मेरा अंतिम फैसला है।'

हरदेई घबरा गई। माँ जो ठहरी। एक अबला ऐसी विषम परिस्थिति में और कर भी क्या कर सकता है। वह बोली, 'तू तो मेरे

बुढ़ापे की लाठी है बेटा। मैं तो अंधी-धुधी हूँ। तुमसे ही आस लगाए बैठी हूँ। जब तू ही न रहेगा तो मैं जीकर क्या करूँगी। आखिर बात क्या है, तू मुझे बता तो सहीं। मैंने तुझे माँ-बाप दोनों का लाड़ प्यार दिया है। तेरा बाप तो तुझे चार महीने का छोड़कर मर गया था। तब से मैं तुझे अपनी छाती से लगाकर बस्ती में पड़ी रही हूँ। मैंने अपनी जवानी तेरी खातिर, एक आस के सहारे काट दी कि तू बड़ा होकर जरूर मुझे पूछेगा माँ तुम्हें क्या कष्ट है? तू उदास क्यों रहती है। बेटा, मैंने अपनी जवानी की उमंगों पर पत्थर रख लिया था कि तू मेरा सहारा बनेगा। मेरे इस त्याग का आकलन कमकर तू मेरा अपमान कर रहा है। तू क्या जाने, यौवन की धधकती आग में रिश्ते-नोत, मान-मर्यादा, ऊँच-नीच, छुआछूत सब पिघलकर धरती से निकलने वाले ज्वालामुखी के लावे की तरह बह जाते हैं, जिसकी आग की लपटें सामने आने वाली हर चीज को पिघलाकर एंव जलाकर राख बना देती है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी इस धधकती आग में जलकर भस्म हो गए हैं। मैं तो एक इन्सान हूँ। जिसे पेट भरने के लिए अपना श्रम बेचना पड़ता है। इतना सब तेरे लिए बर्दाश्त किया। सोने जैसा शरीर तिल-तिल कर गल गया मगर मैंने ऊफ तक नहीं की। आज तू मुझसे कहता है कि मैं मरना चाहता हूँ। तूने मुझसे पूछा मुझे क्या दर्द है। तेरा बाप काला भुजंग था। मेरा शरीर धुली चाँदनी की तरह साफ और कोमल था। जो जीवन की भट्टी की अग्नि में तपकर तांबे जैसा बन गया हैं।

कलुआ माँ की करुणा कहानी सुन रहा था। इससे उसका हृदय द्रवित हुए बिना न रह सका। द्रवित आँखें हृदय के वेग को न रोक सकी। वह बह निकली। टप-टप कर आँसू उसकी झोली में बहुत देर तक गिरते रहे। इन आँसुओं के बोझ से वह अपने को धरती में धंसता हुआ महसूस करने लगा। फिर भी संभलकर बोला, माँ तू नहीं जानती है कि पहली रात दुल्हन को ठाकुर की हवेली में गुजारनी होती है।'

हरदेई बोली, 'बेटा! मैं यह सब जानती हूँ।



कलुआ ने कहा, 'माँ, मैं तेरी बहू को हवेली में नहीं भेजूँगा। मैंने इस ठाकुर के लिए सब भला-बुरा किया है। मैं इसी के लिए लोगों का भी बुरा बना हूँ। परन्तु इस त्याग के बदले ठाकुर मेरे साथ भी सबके जैसा व्यवहार कर रहा है। लानत है मेरी जवानी पर। मैं आज इसे सबक सिखाकर ही रहूँगा।'

माँ बोली, 'बेटा! तू सच में कुछ करना चाहता है।'

'हाँ माँ, तेरी सौगंध।'

'बेटा, तू सच में मेरा ही लाल है। मेरा ही खून तुझमें बह रहा है। मैं तेरे साथ हूँ बेटा। तूने आज चालीस बरस के बाद फिर से नासूर कुरेद दिया है, वह फिर से बह निकला है। सुन-मैं इस गाँव में नई दुल्हन ब्याह के आई थी। तेरा बाप एकदम तुझ जैसा था। वह भी मुझे हवेली में नहीं भेजना चाहता था, परन्तु इस ठाकुर के बाप के आदमी जबरदस्ती मुझे घर से उठा ले गए। मैं रोती-बिलखती एक कमरे में बन्द करवा दी गई थी। ठीक रात के दस बजे जब घड़ी में दस घंटे बजाए थे। तभी ठाकुर का बाप मेरे कमरे में शराब पीकर आया। मैं उसके सामने बहुत रोई, गिड़गिड़ाई परन्तु उस निर्दयी का दिल न पसीजा। मेरी आवाज उसने नहीं सुनी थी। रात भर मुँह काला करता रहा था। सुबह अंधेरे ही एक आदमी मुझे साथ चलने को कहने लगा। मैं टूट चुकी थी। मुझसे खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था। तब वह मुझे सहारा देकर घर छोड़ गया था। तेरे बाप ने मेरी हालत देखी तो रो पड़े थे। मैंने उसी बखत सोच लिया था, अगर लड़का हुआ तो उसे ऐसी शिक्षा दूंगी जो मेरा बदला ले सके। तुझे मैंने वही करने की सलाह दी जिससे तू गाँव के जमींदार के नजदीक होता जाय। तुझे पता भी नहीं चला कि तू क्या करने वाला है। मैं जानबूझकर सुस्त रहती थी कि तू मुझसे पूछे। परन्तु तूने कभी नहीं पूछा। मैं इसी दिन के लिए औरतों से तेरी शादी करवाने की बात करती थी। जब तेरी शादी न हुई तो मैंने अपना सपना भूलने का निर्णय ले लिया था। जब तूने मुझे अपनी शादी की बात बताई। वह भी ठाकुर ने शादी तय करवाई। तब मैं समझ गई कि अब उसका

समय आ गया है। नहीं तो बिन मौसम बरसात के बादल न आते। मुझे तेरे बाप की याद आई। मुझे याद है उस दिन वह बहुत लाचार थे। लेकिन एक दिन ठाकुर के बाप से लड़ पड़े थे। उसने अपने आदमियों से खूब पिटवाया था। अधमरा करके घर पर पटक गए थे। बेटा, मैंने उनकी खूब दवा-दारू की थी। वह ठीक तो हो गए थे। परन्तु उसके बाद दिन-रात सोचते रहते थे। इस तरह उनका शरीर गिरता गया। एक बरस के बाद तुझे मेरी गोद में, तेरे ऊपर मेरा हाथ रखकर इस दुनिया से मुझे अकेला छोड़कर चले गए। जब मरे तब उनकी आँखे खुली थी। जैसे मुझसे कुछ कह रही हों। मैं भी बस इसी दिन के लिए जी रही थी।' कहते हुए हरदेई ने अपने आंसुओं की बहती हुई नदी पोंछ डाली।

कलुआ अपनी माँ की करुण कहानी के एक-एक शब्द को बड़े ध्यान से सुन रहा था। साथ में फफक-फफक कर रोता भी जा रहा था। जब माँ चुप हुई तो वह कह बैठा, 'माँ, तुमने यह सब पहले बताया होता तो मैं उस जानवर को पहले ही....।'

हरदेई बोली, 'जा बेटा, हवेली में घूम आ। तू जैसे कहेगा मैं और बहू दोनों वैसा ही करेंगी। बेटा, तेरे लिए मैंने भूख-प्यास में दिन इसीलिए काटे थे। तुझे कुछ बताने से पहले में चाहती थी कि ठाकुर तुझ पर पूरा विश्वास कर ले। आज पहली रात आ गई है बेटा। चालीस बरस बाद सूरज निकलने को है पर बादलों से आँख-मिचौली कर रहा है।'

'अम्मा सुन! तू जल्दी से रोटी बनवा ले। जाड़े के दिन है। लोग जल्दी अपने घर की किवाड़ बंद करके सो जायेंगे। तुम दोनों सास-बहू चुपके से रोटी और तीन मोटी चादर ले करके गाँव से निकल जाना। सीधे चकरोट-चकरोट जाकर कंकड़ की सड़क पर पड़ जाना। तीन कोस पर धर्मशाला की प्याऊ है। उसी पर बैठ जाना। मैं सीधा वहीं पहुँचूंगा। अब मैं हवेली में जा रहा हूँ तुम जल्दी अपना काम निपटा लो।

हवेली पहुँचकर कलुआ ने घुसते ही पांय लागू, सरकार



'खुश रहो।' चंदन सिंह ने आशीर्वाद दिया। फिर बोले, 'अहमक, मैं तेरा कब से इन्तजार कर रहा हूँ। तू अब आया है।'

'सरकार! बस अभी पहुँचा हूँ कि सीधा आपकी खिदमत में हाजिर हो गया हूँ।

'अच्छा! यह तो ठीक है परन्तु यह बता कि तू हवेली का दस्तूर तो जानता है न?।'

कलुआ ने अनभिज्ञ-सा बनतें हुए कहा, 'क्या सरकार?'

'अच्छा, तो तू आज सब भूल गया। तूने हवेली का नमक खाया है। खुद आज तक हवेली की हर रिवाज कायम रखी है। और आज तू ही....।'

कलुआ अपने अंर्तमन की टीस दबाकर बोला, 'नहीं सरकार! भला हवेली का दस्तूर कैसे भूल सकता हूँ। आप चिन्ता न करें। आपकी चिंता मेरी चिंता है। आपके पसीने की जगह मैं खून बहाऊँगा। फिर मैं तो आपका गुलाम हूँ, सरकार। बस एक प्रार्थना है। मैं देर रात, अंधेरे में दबे पांव दुल्हन को अपने साथ लाऊँगा। आप मेहमानों वाले कमरे का द्वार, जो बाग की ओर खुलता है, खुलवा देना।

चन्दन सिंह आज बड़े खुश थे। सो कलुआ को चाबी देते हुए बोले, 'अरे भाई, तूने बडी चिन्ता की। तू खुद उस कमरे को अभी से खोल दे। बाद में हम भूल गए तो। हम ठीक नौ बजे मेहमानखाने में आयेंगे। वैसे भी आजकल सरदी का मौसम है। हम जल्दी ही सो जाना चाहते है।'

ठाकुर साहब से उसने चाबी लेकर बाग की ओर का दरवाजा खोल दिया। उसने घेर में से कुट्टी काटने वाला गंड़ासा लेकर पहले ही पलंग के पास कालीन के नीचे छिपा दिया। वह हवेली का विश्वासपात्र कारिन्दा था। किसी को उस पर शक नहीं हुआ। फिर चाबी लौटाकर जल्दी ही घर की ओर चल दिया। वह रास्ते में सोचता रहा। आज उस अमानवीय चलन का अंत कराना ही होगा। मैंने बहुत हुक्म बजाया

है। इस ठाकुर का, आज जल्दी सुलाने का भी हुक्म पूरा करूँगा। 'ठाकुर चिंता मत करो, वक्त आ गया है कि आज पसीने की जगह आपका खून बहाया जाय। तभी तो हजारों अबलाओं के आँसू धुल पाएंगे। बस नौ बजे तक और इन्तजार कर लो। कुछ खा-पी लो। मैं तुम्हें माफ भी कर देता, परन्तु तेरे बाप ने मेरी माँ के साथ.....। विचारों पर रोक लगते ही दो सच्चे मोती उसकी आँखों में छलक आए।

घर पहुँचकर कुंडी खटखटाई, 'अम्मा! अम्मा!' तब तक दुल्हन ने कुंडी खोल दी। वह पूछ बैठी, 'बड़ी जल्दी आ गए। सब ठीक-ठाक तो है।' निकलने का प्रबंध करके आए हो कि नहीं? मेरा तो दिल घबड़ा रहा है।'

'हाँ! आज उसे सुलाकर ही दम लूँगा। बाग की ओर का द्वार खोल दिया है। कोई खटका नहीं है। तू चिंता मत कर।' फिर माँ से बोला, 'अम्मा! रोटी ला, बहुत भूख लगी है।'

'अरी बहू, रोटी करके तो दे, मेरे लाल को। बेटा अब तो बहू घर में है। तू उसी से रोटी मांगा करना। मुझे तो दिखता भी नही हैं। अब अपनी आदत बदल, हाँ।

बहू ने खाना उसके आगे बढ़ा दिया। वह रोटियों पर टूट पड़ा जैसे कई दिन का भूखा हो। जल्दी से खा-पीकर अपनी दुल्हन से बोला, 'भूदा, तू मुझे अपनी शादी वाली लाल साड़ी पहना दे।'

नई दुल्हन जो अपने सुहाग की रात, सुहागरात का बड़ी मुद्दत से इन्तजार करती है। अरमानों को सजाती है। वही आज अपने हाथों से पति को साड़ी पहनाते वक्त। विचारों में उठे तुफान से दिल में बाढ़ सी आ गई। आँखों से झर-झर झरना बह निकला। उसे रोते देख कलुआ को भी रूलायी आ गयी। वह रोते हुए बोला, 'भूदा तू घबड़ रही है। अरी भगवान, मैं तो समाज का कार्य करने जा रहा हूँ। मर भी जाऊं तो तू आँसू मत बहाना। मैं हमेशा तेरे साथ रहूँगा, याद बनकर।'

भूदा आँसू पोंछते हुए बोली, 'मरे तुम्हारे दुश्मन, शुभ-शुभ बोलो। क्या मरने की बात कर रहे हैं। मैं तो तुम्हे वीर पुरुष मानती हूँ जो



अपनी पत्नी की रक्षा करने जा रहे हो। तुम सफल होकर ही आओगे। परन्तु पहले चलकर दिखाओं। कैसे लग रहे हो। मैं भी तो देखूँ नई दुल्हन आज कैसे चलेगी।'

वह ऊपर सिर उठाकर ऊँट की तरह चलने लगा।

'किसी ने तुम्हें ऐसे चलते हुए देख लिया तो गजब हो जाएगा।' सब किए कराए पर क्षण में पानी फिर जाएगा। भूदा बोली अपना सिर थोड़ा झुकाकर के चलो। औरतें और नई दुल्हन ऐसे नहीं चलती है, तुम्हारी तरह।'

'ठीक है, जैसे तू कह रही है। मैं वैसे ही चलूँगा।' वह साड़ी पहनकर चारपाई पर बैठ गया। बैठते ही झपकी लग गई। झपकी में स्वप्न चलने लगा। वह पन्द्रह बरस का बालक है। गलियों में खेलता फिर रहा है। तभी उस पर जमींदार की नज़र पड़ गई। उसने अपनी हवेली में काम पर रख लिया है। फिर युवा हो गया। दुहरी देह का पट्ठा है। ठाकुर ने उसे अपने कारिंदे का पद दे दिया है। काम बहुत कम है। बस लोगों को बुलाकर लाना है। जमींदार का हर हुकुम बजाना है। उसे याद आया कि उसने होश में पिछले पच्चीस बरस में जब भी कोई विवाह गाँव में होकर आया। वह उस दुल्हन को हवेली में पहली रात ठाकुर साहब के हुकुम से स्वयं उसे बुलाकर लाया। सुबह सूरज निकलने से पहले उसे वापस घर भी छोड़कर आया। बेचारी रोती बिलखती आतीं। रोती-बिलखती ही चली जाती। यही जीवन का नियम बन गया था। फिर याद आया कि कितनों को वह खाना खाते से उठाकर लाया था। हर दृश्य एक के बाद एक चल रहा था फिर आज उसका विवाह होकर आया है। उसे अपनी दुल्हन को खुद हवेली में पहुँचाने का हुकुम हुआ है। कैसा दिन देखना पड़ रहा है। मैंने बहुत अपराध किए हैं। इसी की सजा मिल रही है। मुझे जीने का हक नहीं है। तभी सोचने लगा। मैंने अपराध किए तो है लेकिन अपराधी कोई और है, उसे ही सजा मिलनी चाहिए न कि। अचानक उसके दांत किट-किटाने लगे। तभी अचानक जोर की आवाज के साथ ठकुरा तेरी

तो...।'

भूदा ने तभी झकझोर कर उसे जगा दिया, 'ए जी, सुनो! क्या बात है? तुम्हारी आवाज क्यों भर्रा रही है। तुम्हें अब हवेली में जाना है। हम दोनों बस अब निकल रही हैं।'

कलुआ चौककर उठते हुए बोला–'क्या हुआ?' तभी समझते हुए बोला, 'अच्छा! तुम दोनों जा रही हो ठीक है! जल्दी से निकल जाओ। मैंने जो कहा है वैसे ही करना।'

भूदा अपनी सास की उंगली पकड़कर मुहल्ले से होती हुई खेतों की ओर ले गई। वहाँ से खेतों-खेतों चलती हुई चकरोट के सीधे रास्ते पर आ गयी। आज बुढ़िया के जैसे पर लग गए थे। वैसे जरा सी चली नहीं कि हांफने लगती थी। आज थकान उससे कोसों दूर थी। चलती-चलती दोनों तीन कोस पर प्याऊ की जगत पर बैठ गयी। चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छाया हुआ था। बस बीच-बीच में सियारों के बोलने की आवाज ही सुनाई पड़ती थी। सियारों की आवाजें घुप्प अंधकार का मौन भंग कर रही थी।

कलुआ रात के अंधेरे में साड़ी पहने सिर झुकाए हवेली की ओर चला। मन में अनेकों विचार बड़ी तीव्र गति से आ-जा रहे थे। फिर भी लक्ष्य की ओर तीर की भांति लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ चला जा रहा था। वह बड़ी फुर्ती के साथ बाग की ओर से होता हुआ मेहमानों के कमरे में बिना आहट किए हुए दाखिल हो गया। हवेली में मेहमानों का कमरा बड़ा भव्य और आलीशान था जिसमें शेरों के कटे हुए सिर करीने से सजे हुए हर बड़ी कुर्सी के बीच में रखे हुए थे। दीवारों पर बारहसिंगा हिरणों के सींग स्रिर के साथ लटकते हुए कमरे की सुन्दरता में चार चांद लगा रहे थे। बड़े आलीशान सोफे, गद्दे, कुसियाँ व्यवस्थित ढंग से रखी गई थीं। विलायती झाड़-फानूस छत से लटकाए हुए थे। कमरे में एक और बड़ा-सा पलंग, जिस पर विदेशी चादर बिछी हुई थी। बस एक खिड़की से ही ठण्डी हवा अन्दर आ रही थी। जिससे महीन पर्दा खिड़की पर झोकों से हिल रहा था। उसी में



ताजगी और सजीवता नजर आती थी। वहाँ अन्यथा सब बासी और उबाऊ लग रहा था।

दीवारों पर पुरखों के आदमकद चित्र लगे हुए थे। जो पिछले सौ सालों के इतिहास की एकमात्र यादगार थे। यही उन खूनी दरिन्दों की एकमात्र निशानी बची हैं। कहें तो उचित ही रहेगा। जमाना बदल गया। दुनिया बदल गई। इन भेड़ियों के खून चूसने की आदत नहीं बदली। आज उसी शानो-शौकत और दरिन्दगी का अंत होने में कुछ क्षण बाकी है। तभी दरवाजा खटकने की आवाज आई। ठाकुर चंदन सिंह डगमगाते करमों से कमरे में आए।

दुल्हन बना कलुआ सिकुड़कर गठरी बन गया। 'पाँय लागू सरकार' कहा ताकि उसे शंका न हो जाय।

ठाकुर गर्माए हुए थे ही। सीधे आकर दुल्हन पर हाथ बढ़ाने लगे।

'सरकार मैं भागे थोड़े ही जा रही हूँ। इस रोशनी को तो बुझा दीजिए। मुझे बहुत शर्म आ रही है। फिर आप जो कहेंगे मैं वह सब करूँगी।'

चंदन सिंह दुल्हन की इस बात से बहुत खुश हुए। प्यार-भरे मीठे बोल सुनकर मोम की तरह पिघल गए। लालटेन को बुझाने के लिए बढ़ते हुए सोचने लगे, पिछले पच्चीस साल में ऐसे दिल खोलकर कहने वाली दुल्हन नहीं मिली। सब रोती गिड़गिड़ाती आयी और रोती गिड़गिड़ाती हुई चली जाती। मैंने सबका जबरन यौन सुख लूटा। कुंवारियों को दुःख देने में बहुत सुख पाया। अनछुए, ताजे, गरम गोस्त का बहुत लुत्फ उठाया है। आज क़ोई जिगर वाली मिली है। पहले मूछों पर ताव दिया। फिर धीरे से सांकल बंद करके रोशनी बुझा दी।

दुलहन बना कलुआ बस इसी इंतजार में करीब घंटे भर से बाट जोह रहा था। वह घड़ी अब आ पहुँची। तुरन्त चीते की सी फुर्ती से उछलकर ठाकुर साहब की गर्दन में अपनी बलिष्ठ भुजाओं की कैची डाल दी। अपनी भुजा को बस कसते ही चला गया। हलकी सी आवाज गरर....मुश्किल से निकल पाई। छटपटाते हुए गर्दन छुड़ाने की

लाख कोशिशे की। भला गर्दन अब कहाँ छूटने वाली थी। करीब एक मिनट तक पैर रगड़ते रहने के बाद प्राण पखेरू उड़ गए। जीवन-लीला समाप्त हो गई। फिर भी जीने के लिए आखिरी वक्त तक संघर्ष करता रहा। उसका टंटा दूर करने के लिए आखिर में गर्दनधड़ से अलग कर दी। वह आज किसी प्रकार का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। उसके सिर पर आज खून सवार था। आँखे अंगारे की तरह धधक रही थी। मानो जैसे कोई दो मशाल जल रही हों। बिना समय गँवाए वह बाग के द्वार से बाहर निकलेकर, कुंदी लगाकर, साड़ी हाथ में लेकर बाहर निकला खेतों की फसल को रौदता हुआ। पूरी ताकत से दौड़ने लगा। खेतों के बाद कंकड़ की सड़क पर दौड़ता हुआ सीधा प्याऊ पर जाकर दम लिया।

माँ ने आते ही पूछा, 'बेटा, काम निपटा आया?' उसने बस 'हाँ' में ही गर्दन हिलाई। बेटे के इस कार्य से संतोष की लम्बी सांस लेकर माँ ने अपने गले से लगा लिया। 'तूने मेरे दूध की लाज रख दी। आज तूने उस जानवर को खत्म करके हजारों अबलाओं की लाज बचाई हैं।'

भूदा भी पति के साहसी कारनामे से फूली नहीं समा रही थी। आज उसे अपने पति पर गर्व था। कि मेरी लाज की खातिर अपनी जान जोखिम में डालकर लाज लूटने वाले दरिन्दे को खत्म करके मौत की नींद सुला आया है।

कलुआ अपनी माँ से बोला, 'माँ अब हमें चल देना होगा, क्योंकि रात भर में हमें नदी पार खादर तक की यात्रा पूरी करनी पड़ेगी। नहीं तो प्राण बचाना मुश्किल होगा।'

बेटे के आग्रह पर माँ तुरन्त चल पड़ी। रात में तीस कोस की मंजिल पार करनी है। जो इस ठण्डी रात में तय करना मुश्किल लग रहा है। तीनों बिना रूके चलते रहे। हालांकि चलते-चलते थक गए और पैंरों में छाले भी पड़ गए फिर भी पैर रुक नहीं रहे थे। मौत पीछे खड़ी थी। आगे जीवन नजर आ रहा था। पसीने से तर-बतर इसी लोभ में चले जा रहे थे। अचानक कल-कल बहती नदी की आवाज सुनाई देने लगी। तो दोनों सास-बहू सुस्ताने को बैठ गयी। 'अब तो



हार गए है। अब एक कदम भी चला नहीं जाता है।'

कलुआ गुस्साते हुए जोर से बोला, 'तुम्हे सुस्ताने की पड़ी है। यहाँ जान के लाले पड़े है।' इतना सुनते ही भूदा तो चल पड़ी, परन्तु बुढ़िया न उठ सकी। कलुवा ने उसे पीठ पर लाद लिया। दुगने वेग से लम्बे-लम्बे कदम भरके चलने लगा। अभी मुश्किल से कोस भर ही चल पाए होंगे कि नदी आ गई। सभी के चलते चलते गले सूख गए थे। वहाँ सबसे पहले तीनों ने खूब पानी पिया। फिर नदी पार की।

फागुन के महीने में भी चैत-बैसाख की तरह तीनों के कपड़े पसीने से तर-बतर थे। नदी पार खादर मे तीन कोस चलने पर आसमान में पूर्व की ओर लाली दिखाई देने लगी।

भूदा पति से बोली, 'अब तो थोड़ा बैठ लो। क्या हमें भी मारकर ही दम लोगे। देखो दिन निकलने वाला है, सूरज की पहली किरण निकल रही है।'

माँ बोली, 'क्या रात खत्म हो गई।' तब तो दिन निकलने वाला होगा। खूब बड़ा लाल-लाल सूरज होगा। बेटा। चालीस बरस बाद आज पहली बार सूरज निकल रहा है। इतनी बड़ी रात तो ईश्वर ने भी कभी नहीं देखी होगी। मैंने बड़े दुःख झेले है, इस शरीर ने बड़े कष्ट सहे है। अब और सहा नही जाता । तू अब जा बेटा।'

कलुआ और नई नवेली दुल्हन को कुछ शंका हुई। दोनों एक ही स्वर में बोले, 'अम्मा, अब तुम राज करना।'

'बेटा, मेरा दिल घबड़ा रहा है। लगता है मेरा आखिरी वक्त आ गया। देख, तेरे बापू मुझे बुला रहे हैं.......। देखो, तुम्हारे बेटे ने शादी कर ली हैं, इन्हें आशीर्वाद तो दे दो....। देख बेटा तुझे आशीर्वाद दे रहे है तुम्हारे पिताजी! तुम दोनो खुश रहना। मैं तो इसी दिन के लिए अंधी-धुधी नरक भोगकर भी जी रही थी कि 'पहली रात का अंत' कभी तो होगा। आज वह अंत हो गया बेटा।' कहने के साथ ही माँ की गर्दन कलुआ की गोद में लुढ़क गई। ❐

# माफी

कप्तान रघुनाथ परवार अपने सरकारी बंगले में मित्रो के साथ चाय की चुस्कियों का आनन्द लेने में मशगूल थे। बीच-बीच में हँसी मजाक का दौर भी चल रहा था। इससे बिल्कुल भी आभास नहीं होता था। वह घर किसी महार का हो सकता है। घर के मुख्य हाल में छत से लटकते झाड़ फानूस, फर्श पर बिछे ईरानी कालीन, विदेशी नस्ल के चार बड़े-बड़े कुत्ते, दो नई कारे, नौकर चाकर सभी कुछ तो था। उच्च वर्ग के लोगों में भी उन्हें पूरा सम्मान मिलता था। उनके साथ जाति को लेकर कभी किसी ने दुव्यर्वहार नहीं किया था। अपनी सम्पनता के चलते उनके पास अपने लोगों से मिलने, उनकी समस्याएँ सुनने का समय नहीं था।

कभी उनके गाँव का कोई भूला भटका आदमी लोगों के जुल्मों से तंग आकर उनके पास सिफारिश के लिए आ जाता तो वह उसे अपमानित करने, ताने उलाहने देने के लिए पूरा समय निकाल लेते थे। फिल्म के खलनायक की तरह उन्हें हर डॉयलॉग कब और कैसे बोलना है, बखूबी आता था।

दोपहर ढल चुकी थी। जब सखाराम परवार कप्तान साहब के बंगले पर पहुँचे। उन्होंने संतरी से पूछा रघुनाथ साहब घर पर हैं। मुझे उनसे मिलना है मैं उनके गाँव से आया हूँ। संतरी सुनते ही कोठी के अन्दर गया। साहब को जय हिन्द सर करने के बाद कहा– सर आपके गाँव के कोई व्यक्ति आपसे मिलना चाहते हैं। गाँव का नाम सुनते ही कप्तान रघुनाथ की आँखें गुस्से से लाल हो गयीं। क्रोध की



ज्वाला की उठती लपटें देखकर संतरी पीछे हट गया। उसे लगा कि उसने कोई भारी अपराध कर दिया है। कप्तान काले विषधर की तरह फुंकार भरते हुए बाहर आए। आते ही सखाराम पवार पर बरस पड़े। बिना कुछ सुने शर्म नहीं आती है तुम्हें। बिना बात शिकायत लेकर चले आते हो। नहा धोकर नहीं आ सकते है। कम से कम ये कपड़े तो न पहनकर आते। साले भंगी चमारों की तरह चले आते हैं। अपने बाप का घर समझ रखा है।

सखाराम परवार बूढ़े थे। गांव के नाते से चाचा लगते थे वे रघुनाथ कप्तान की तिगुनी उम्र के होकर भी उनके पैरों में गिर पड़े। "साहब मेरे बेटे को बचा लो। मैं उम्र भर आपका एहसान नहीं भूलूँगा। मेरा एक ही बेटा है। उसे बिना वजह खून के जुर्म में पकड़ लिया है। इस झूठे केस में उसकी जिन्दगी खराब हो जाएगी। रहम करो साहब, अपने इस बूढ़े चाचा पर।"

कप्तान रघुनाथ उबल पड़े तुम लोग हो ही ऐसे। ज़रूर कुछ न कुछ किया होगा। बिना घाव के स्याही कहाँ बैठती है?

"नहीं सरकार। मेरे बेटे छिद्दा को झूठे केस में फँसाया है। आप जानते हैं। हम मेहनत मजदूरी करके अपना पेट भरते हैं। हम लोग किस लिए खून करेंगे सरकार। हमारी ज़मीन जायदाद तो है नहीं। बस फूँस की मढ़ैया और टूटे फूटे सिलबर के बर्तन हैं। यही हमारी जायदाद है। सरकार।"

रघुनाथ साहब ने ऊँची और कड़कती आवाज़ में संतरी को आदेश दिया। "इस बुढ़े को उठाकर बाहर फेंक दो। फरियाद लेकर चले आते है। समय भी नहीं देखते हैं। बस मुँह उठाए जानवरों की तरह कोठी में चले आते हैं।"

सखाराम परवार अपना सा मुँह लेकर गाँव को उल्टे पाँव लौट पड़े। वे दिमांग में रह-रह कर उठते विचारों के तूफान में खोए हुए रास्ते पर चलते रहे। उन्हें आभास तक न हुआ कि कब गाँव आ गया। बेटे को बचाने की चिंता से छुटकारा पाने गए थे। मगर बेटे

को बचाने की चिंता का दर्द और भी बढ़ गया था। उन्हें लगने लगा कि अब फाँसी से परिवार को कोई नहीं बचा सकता है। तभी किसी की राम-राम से उनकी तद्रा भंग हुई। राम-राम भाई!

गाँव में कप्तान साहब के पिता बुधराम परिवार खैर खबर सुनने के इंतजार में कब से बाट जोह रहे थे। उत्सुकता वश पूछ ही बैठे "सुखाराम भाई! मिल आए रधुनाथ से। क्या कहा जरा हम भी तो सुने?" सखाराम बिसूरते हुए बोले— "भाई बुधराम बड़ी बेइज्जती की है। आपके रघुनाथ ने। पानी तक की भी नहीं पूछी। ऊपर से गाली गलौच भी की है।"

"अरे सखाराम! मैंने तो पहले ही मना की थी। तुम मत जाओ उस कपूत के पास सिफारिश के लिए! उसने आज तक अपमानित करने के अलावा और दिया ही क्या है? भइया, वह हमारे अंश का ही नहीं है। ससुर बड़े लोगों की ही बात मानता है। लगता है अब तो वही उसके सगे संबंधी है।" बिद्रूपता का भाव मन में लिए हुए बुधराम कहते ही गए। सखाराम तुम तो उनके गाँव के नाते से चाचा ही लगते हो। मैं तो उसका बाप हूँ। इन हाथों से बरसों खिलाया है। मेरे इन हाथों को ध्यान से देखो। काम करते-करते घावों से भरे पड़े है। मैंने उसे दिन-रात खून पसीना बहाकर पढ़ाया था। उसे पढ़ाने के लिए कर्ज भी लिया था। यही सोचकर कि बेटा, मेरे बुढ़ापे की लाठी बनेगा। मैंने कभी आराम नहीं किया। दूर-दूर से बांसों के गट्ठर सिर पर ढोकर लाता था।....

दिन रात में तीन तो कभी चार टोकरी बनाता था। ताकि चार पैसे ज़्यादा मिल जाएंगे तो मेरा रघुनाथ आराम से पढ़ेगा बढ़ेगा। उसने बड़े दिवा स्वप्न दिखाये थे। बापू मेरी नौकरी लग जाएगी। तब तुम आराम करना। तुम्हें तो हमेशा अपने साथ रखूँगा। बैठे बैठे नौकरों पर हुकम चलाना।.... बस, अब तो मर जाने को जी चाहता है। भगवान तुम मुझे उठा लो, अब और अपमान नहीं सहा जाता है। वह गाँव के इन्हीं लोगों के सामने साथ खेला कूदा और बढ़ा हुआ है।



आज उनका ही अपमान करता है। अरे लानत है तुझ जैसे बेटे पर। मेरे जाति भाई की इज़्जत और मेरी इज़्जत कोई अलग-अलग है? अरे, मैं तो तुझे तब ही समझ गया था। जब तूने अपनी जाति की लड़की छोड़कर दूसरी जाति की लड़की से शादी कर ली थी। जब तू मेरा ही न हुआ। तब गाँव वालों का क्या होगा? तूने आज तक मुझे अपने पास नहीं रखा। मैं आज भी मेहनत मज़दूरी करके ही अपनी रोटी खाता हूँ। अब तो उसे मुझे देखने गाँव आने में भी शर्म आती है। कहता है। हम गन्दे रहते हैं। हमें रहने का सलीका नहीं है। अब बड़ा साहब जो बन गया है, तो बड़ी-बड़ी बातें तो करेगा ही। अरे मूरख, तू भी तो इस गन्दगी में पलकर बड़ा हुआ है। इसी गाँव के बच्चों में खेल-कूदकर पढ़ा है पर्वत नदी झरने समुद्र के किनारे, हवायें सब वही तो हैं। जिनमें हम सदियों से रहते आए हैं। सभी बूढ़े, बच्चे जवान सभी तुम्हारी तरह अपस्वार्थी बन जाये। बड़े होकर इस समाज और बस्ती के लोगों से दूर चले जायें। श्रीमंत होते ही अलग हो जायें। तब इनकी गरीबी दूर करने के बारे में, इनके बच्चों को पढ़ाने के बारे में और इस समाज को सुधारने के बारे में, कौन सोचेगा। कभी यह भी सोचा है। सब कुछ कहना आसान लगता है। करना बहुत मुश्किल है। तुम्हारी तारीफ तो तब थी जब सरकार से अपने समाज के लोगों की सहायता करवाता। इनके बच्चों को पढ़ाने की व्यवस्था अपनी ओर से करवाता। इनके दुख दर्द को महसूस करता। इनके आँसू पौंछता और सहारा देता। काश! इनके कष्टों को दूर करने वाला कृष्ण बनता। बेटा! तूने तो मेरे जीवन की सारी तपस्या व्यर्थ कर दी।

बूढ़ा अपनी धुन में कहे जा रहा था। बड़-बड़ करते हुए उनकी दोनों आँखों से झरते मोतियों की निर्झर नदी में ऐसी बाढ़ आई कि जिसे रोकना चाहकर भी वह रोक नही पा रहा था। निरन्तर सिसकियों से गला भर आया था। धीरे-धीरे बोल निकलना भी बंद हो गया और वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा।

बुधराम की हालत देखकर सभी सकते में आ गये। किसी तरह उन्हें उठाकर बांस की चटाई पर लिटाया गया। मुँह पर ठण्डे पानी के छींटे लगाकर होश में लाने की लाख कोशिशें की गयीं। परन्तु हालत में कोई सुधार न हुआ। नाड़ी रुक-रुक कर चल रही थी। उनकी हालत बिगड़ती देख लोगों के चेहरों पर खौफ छा गया।

चन्दूराम परवार डाक्टर को बुलाने कई बार जा चुके थे परन्तु डाक्टर हर बार उन्हें अलग रंग की गोली हाथ में थमाकर टरका देता। मरीज को देखने के लिए आने में आनाकानी कर रहा था। लाख कहने पर कि वह गोली नहीं खा पा रहे हैं, सरकार। आप चलकर उन्हें बस एक बारगी देख लें। वह तब भी नहीं आया। अंत में भगत को बुलाया गया। तो उसने झुंझलाते हुए कहा। तू जा, कुछ नहीं होगा। उसे होश आ जाएगा। मैंने मंत्र पढ़ दिया है। चन्दूराम परवार उसकी बात पर विश्वास करके हरिजन बाड़े में वापस लौट आए। ढलती शाम की अंधेरी चादर पल-पल प्रकाश की किरणों को अपने आगोश में समाने को बेताब नज़र आ रही थी। उधर बुधराम की हालत बिगड़ती ही जा रही थी। सभी लोग असहाय भाव से उनकी हालत सांस रोके खड़े देख रहे थे। वे अलावा देखने के कर भी क्या सकते थे? सभी मौन बने मोम के पुतले जान पड़ रहे थे।

बुधराम को इसी बीच न जाने कैसे अचानक होश आ गया। उन्होंने अपनी टूटती सांसों के बीच हिम्मत बटोरकर बस्ती वालों के हाथ जोड़े। फिर वही आसुंओं की झड़ी के बीच रुंधे कंठ से बोले बस्ती वालों, मुझे माफ करना। इतना कहना था कि उनकी सांस जोर जोर से चलने लगी। अपने भाई चन्दू का हाथ अपने हाथ में लेकर कुछ कहना ही चाह रहे थे, मगर कंठ से बोल बाहर न निकल पाया। आसमान की ओर देखते देखते उनका सिर चन्दू की गोद में एक ओर लुढ़क गया। वहाँ उपस्थित जन समुदाय की सिसकियाँ एकसाथ फूट पड़ीं। वातावरण गमगीन हो गया। रोआ-राई में कोई किसी की नहीं सुन रहा था।



चन्दू परवार बोला— भाईयों मैं रघुनाथ को सूचना देने जा रहा हूँ। तब तक आप इनका ख्याल रखना। यदि सूचना देने पर भी वह नहीं आयेगा। तब हम सब भाई बुधराम का क्रिया कर्म कर देंगे।

चन्दूराम रात में पैदल ही रघुनाथ को सूचना देने के लिए पणजी के लिए चल दिये। कप्तान साहब के बंगले पर पहुँचते-पहुँचते लगभग आधी रात हो चुकी थी, जब कहीं जाकर मंजिल हाथ आई। उन्होंने द्वार पर पहरा दे रहे संतरी को कहा आप साहब को जाकर सूचना दे दो। अब उनके पिता नहीं रहे हैं। दरबान जो कभी सुनता भी न था। आज उसने भी मुस्तैदी दिखाई तुरन्त ही अन्दर जाकर साहब को सूचना दी गई।

कप्तान रघुनाथ परवार झिलमिल करती गाउन पहने हुए बाहर आए। उन्होंने फिर इशारे से चन्दू चाचा को अपने पास बुलाया। उनके चेहरे पर हवाईयाँ उठ रही थी। चाचा क्या हुआ? साहब आपके पिता नहीं रहे। चन्दू किसी तरह हिम्मत जुटाकर बोल पाए। यह सुनते ही उनकी आँखों से आँसू छलक आए। आँसू छिपाने के लिए तुरन्त ही कोठी के अन्दर चले गये। साठ बसंत पार कर चुकी चन्दू की पैनी नज़र से कप्तान अपने आँसू न छिपा सके। ख़ून में उठे भयंकर ज्वार में बाढ़ आ चुकी थी। अब वह कहाँ रुकने वाला था। मुश्किल से पन्द्रह मिनट ही हुए होंगे। वह फिर से बाहर आए। अपनी गाड़ी निकाल कर चाचा को साथ लेकर गाँव के लिए चल पड़े।

जिस राह को तय करने में चन्दू को आधीर रात लग गई थी। उसे सेन्ट्रो कार से तय करने में मुश्किल से एक ही घंटा लगा। कि उसका गाँव आ गया।

रघुनाथ परवार लगभग दो बजे अपने गाँव उस्पा पहुँच गए। गाँव में पूरी बस्ती के लोगों को पिता की लाश के पास बैठा हुआ देखा। उन्हें अपने आप पर शर्म आने लगी। उन्हें एक-एक करके पिछली सभी घटनाँए याद आने लगीं। कैसे-कैसे लागों को उन्होंने अपमानित किया था। सखाराम की घटना तो कल ही घटी थी। फिर भी उसका

पूरा परिवार उनके पिता की लाश के पास बैठा हुआ है। वह कार से उतरते ही सीधे पिता की लाश के पास गए। पिता के चेहरे को देखते ही ग़म और उदासी के गहरे सागर में खो गए। उन्होंने थोड़ी देर चुप रहने के बाद चुप्पी तोड़ी। वह अपने चाचा चन्दू से बोले दाय की लाश का क्रिया कर्म करवाने का शीघ्र प्रबंध करो। मुझे लगता है कि रात किसी के घर चूल्हा नहीं जल पाया है।

आसाराम ने कहा। रघुनाथ तुम ठीक कह रहे हो। कल रात पूरी बस्ती के बच्चे बिलख-बिलख कर भूखे ही सो गए। किसी के घर चूल्हा नहीं जला। जो कुछ रूखी सूखी सुबह की रोटी बची थी। वही बच्चों में बांट दी थी।

किसी का मन कुछ करने को नहीं कर रहा था। ऐसा लग रहा था किसी ने हमारे हाथ पैरों की जान ही निकाल ली है। आप भी खूब जानते हैं। बस्ती में लाश पड़ी हो तब किसी के घर चूल्हा कैसे जल सकता है।

चन्दू परवार से भी न रहा गया। वह बोले बेटा तुम तो पढ़े लिखे हो। सरकार के बड़े हाकिम भी हो। अपने दाय की लाश लगाने का खुद प्रबंध कर लो। हम गरीब बस्ती वालों से तुम्हारा क्या लेना देना। हम तो गन्दे लोग हैं। हमें कुछ भी नहीं आता है। जिनके छूने मात्र से तुम अपवित्र हो जाते हो। वह तुम्हारे दाय की लाश को कैसे छू सकते हैं।

रघुनाथ अचकचाते हुए बोले। चन्दू चाचा तुम भी मेरे दाय की लाश के सामने ऐसी जली-कटी सुना रहे हो। ऐसे समय में पराये भी कुछ नहीं बोलते हैं। आप तो मेरे अपने हैं। इतना सुनकर वे बोले ठीक कह रहे हो, बेटा। जो कुछ मैंने कहा। यह भी तो तुम्हारा ही कहा हुआ है। हमारे मुँह से सुनते हुए तुम्हें दर्द हो रहा है।

क्या? तुम अपनों का मतलब जानते हो। अपनों को दुत्कारा नहीं जाता है। तुमने विदेशी नस्ल के कुत्तों की फौज पाल रखी है। उन्हें खूब दूध बिस्कुट खिलाते हो। हमारी बस्ती के बच्चे दाने-दाने को



मोहताज रहें। यही अपनों का प्यार है। हमें अपना कहते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती। तुमने बस्ती वालों को कम अपमानित किया है। अब क्यों हमारा पल्लू पकड़ रहे हो।

चाचा मैं अपने व्यवहार पर खुद ही शर्मिन्दा हूँ। पद के नशे में अपनों को भूल गया था। लेकिन जब मैं गाँव में आया बस्ती वालों को दाय की लाश के पास देखा तब से लज्जा अनुभव कर रहा हूँ इस मुसीबत की घड़ी में मेरी और परीक्षा मत लो। आपके पैरों में झुककर मैं आपसे माफी माँगता हूँ।

यह देखकर चन्दू परवार पिघल गए। बोले रघुनाथ, नहीं बेटा। मैं तो किसी तरह मानवता के नाते तुम्हें बुलाने चला गया। ताकि बाद में कहीं तुम हम सभी बस्ती वालों को जेल की हवा न खिला दो। दाय की हत्या करने का इल्जाम लगाना कौन बड़ी बात है। तुम तो बड़े हाकिम हो। कुछ भी कर सकते हो। मैं कौन हूँ। तुम्हें माफी देने वाला। पूरी बस्ती सामने बैठी है। माफी माँगनी है तो बस्ती वालों से माँगो। जिन्हें तुमने अपमानित किया है। वैसे तुम क्या जानो? अपनो का प्यार दुलार क्या होता है? अभी तुम आसमान में उड़ रहे हो। जब एक दिन थक जाओगे। तब अवश्य दम लेने के लिए ज़मीन पर बैठोगे। तब तुम्हें यही लोग मदद करेंगे। आदमी का पैसा कुछ हद तक उसकी मदद कर सकता है। लेकिन कभी-कभी पैसे की नहीं, बल्कि सहानुभूति भरे मीठे बोल के मलहम की ज़रूरत पड़ती है।

रघुनाथ नीची नज़र किए सब कुछ एकाग्रचित मन से सुन रहे थे। उनका हृदय द्रवित हो चुका था। आँखों से रुक-रुक कर आंसुओं की मानसूनी बरसात अंतर्मन को साफ़ कर रही थी। इस बिन मौसम हुई मानसूनी बरसात के जल से मन पर वर्षों से जमीं धूल की परत धुल गई। इससे मन भी कुछ हल्का सा हो गया था। उन्हें लगा अपनों पर किए गए गुनाहों को स्वीकार करने का सही समय आ गया है। वह रात में ही पिता का दाह संस्कार कर देना चाहते थे। बस्ती के भूखे लोगों की आत्मा की बद् दुआ से बचना चाहते थे। यह सोचकर उन्होंने वहाँ उपस्थित लोगों से घुटने के बल झुककर हाथ जोड़कर अपने सभी गुनाहों के लिए माफी

माँग ली।

चन्दू परवार बोले तुम कल भी हमारे थे, और आज भी हमारे ही हो। लाख पूत-कपूत हो जाय परन्तु बाप के लिए कभी पुत्र पराया नहीं होता है। हम तो तुम्हारी परीक्षा ले रहे थे। ऐसा न होता तो तुम्हारे रूखे व्यवहार के बावजूद भी पूरी बस्ती के नर-नारी भूखे पेट तुम्हारे दाय की लाश के पास न बैठे होते। यह सभी प्यार और सहानुभूति के भूखे हैं। सभी कमाकर रूखी-सूखी खाकर पेट भर ही लेते हैं। हमने तुम्हारे दाय की क्रिया कर्म का सभी प्रबंध पहले ही कर लिया है। वह हमारी बस्ती की एक हस्ती थे। पक्षपात और धोखाधड़ी उनके मन से कोसों दूर थी। उनका मन जंगल के बीच सरोवर में खिले कमल की तरह स्वच्छ था। तुम नहीं जानते हो। तुम्हारे दाय ने अपने प्राण क्यों त्याग दिए हैं। तुमने कल सखाराम परवार की सहायता करने के बजाय, उनको अपमानित करके भगा दिया था। बस्ती के अपने भाई के अपमान से वह तड़प उठे थे। तुम्हारी कहीं गई एक-एक बात को याद करके घंटों रोते रहे। अंत में उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए।

सुनते ही कप्तान रघुनाथ परवार डीक फोड़ कर रो पड़े। □



# विश्वास

सीनियौर कर्नल पीटर अपनी हवेली के मुख्य कक्ष में आराम कुर्सी पर आधी रात गुजरने के बाद भी सोने में नाकामयाब रहे थे। आज थकान के बाद भी आँखों से नींद कोसों दूर थी। मस्तिष्क में वैचारिक मंथन जो चल रहा था। उसके चलते आज की घटना भुलाए नहीं भूल पा रहे थे। वह बादलों में तड़कजी बिजली की तरह रह-रहकर उनके दिमाग में कौंध रही थी— प्रभु मेरे पूरे जीवन काल में, किसी ने मेरे ऊपर उँगली तक न उठाई थी। आश्चर्य हो रहा है कि आज लोग मेरे ऊपर आवाज उठाने लगे हैं। मैंने तो पूरा जीवन निःस्वार्थ सेवा में व्यतीत कर दिया है। कभी किसी दीन-दुःखी या धर्म सेवा के नाम पर भेद न किया। छूत-अछूत के भेद को कभी मस्तिषक में जगह न दी। चालीस बरस से अपने शारीरिक सुख को तिलांजलि दे दी है, फिर भी लोगों ने मेरे चरित्र पर, पीटर के चरित्र पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। प्रभु! इस दुनिया में जीना कितना मुश्किल है। आज मेरे पूरे जीवन की तपस्या भंग होती नजर आ रही है....। प्रभु यीशु, तुम्हीं मुझे राह दिखा सकते हो। मैं तुम्हारे बताए मार्ग पर बरसों से चल रहा हूँ। मैं तेरी हर परीक्षा में सफल हुआ। हर धर्म ग्रंथ में लिखा है कि तू दीन-हीन, गरीबों, मजलूमों के घर में वास करता है। मैंने सदैव उनकी सेवा की। उनको हर मुसीबत में सहारा दिया। आज मैंने उस असहाय स्त्री लिवि परेरा को लोगों के जुल्मों से बचाने की कोशिश की। जुल्म और जुल्मियों के विरोध में उठती मेरी आज से आहत लोगों ने अपनी तुष्टि के लिए मुझे घायल ही नहीं किया है, बल्कि मुझे एक ही वार

में चारों खाने चित कर दिया है। शादी के बंधन को मैंने कभी स्वीकार नहीं किया। तेरी इबादत करने के लिए अपना संसार नहीं बसाया। हमेशा के लिए तेरा दामन थाम लिया था। आज फिर से उस नासूर में रिसाव होने लगा है। प्रभु। मेरा कसूर इतना है कि मैंने लिवि परेरा पर लांछन लगाकर अपमानित कर रहे लोगों से उसकी रक्षा की थी। जब लोगों ने ऊँची आवाज में मुझे बताया कि यह कलंकित स्त्री ही नहीं है, बल्कि सूदिर (शूद्र) क्रिश्चियन भी है। इसे हमारे बीच रहने का कोई अधिकार नहीं है। सीनियौर पीटर तुम बीच में मत आओ वर्ना....।

वर्ना क्या? आप मुझे अपमानित करेंगे? बताओ बाइबिल में कहाँ लिखा है। क्रिश्चिन सूदिर होते हैं या क्रिश्चियन सूदिर हो सकते हैं। सभी क्रिश्चियन ईश्वर के बताए मार्ग पर चलते हैं। वे छूत-अछूत नहीं होते हैं। प्रभु हमारे पापों को प्रायश्चित करने पर माफ कर देते हैं। माना इस स्त्री ने गुनाह किया भी है तब भी कल चर्च में ईश्वर को साक्षी मानकर यह प्रायश्चित कर लेगी। तब फिर से यह आप जैसी हो जाएगी।

तभी भीड़ के बीच से कड़कती हुई आवाज आई—

*"इसे हमारे बीच रहने का अधिकार नहीं है।"*

"कलंक कभी नहीं मिट सकता है क्या? किसी का कलंक प्रायश्चित करने पर भी समाप्त नहीं हो सकता है, फिर तो आप में से किसी को भी इस समाज में रहने का अधिकर नहीं है। मेरी नज़र में आप सभी गुनहगारों की श्रेणी में आते हैं। आप स्वयं सोचों। क्या बचपन से लेकर आज तक आपने कभी भी पराई सुन्दर स्त्री को देखकर दिल पर हाथ नहीं रखा। उसे पाने की कामना मन में नही की है। कभी आपने अपनी दृष्टि से सुंदर स्त्री के मांसल उरोजों को स्पर्श नहीं किया है। विवाहित होते हुए भी रूपवती युवती को देखकर मन में तूफान नहीं उठा। पत्नी के अलावा परस्त्री के शरीर को छूना जघन्य पाप की श्रेणी में नहीं आता है? किसी पुरुष का विपरीत लिंग, स्त्री



जाति के प्रति आकर्शित होना स्वाभाविक गुण है। आप सदियों से जानते हैं कि रुई और आग का, बेर और केले का, कभी साथ नहीं होता है। मित्रो, काम-वासना की आग अष्टधातु को भी पिघलाकर मोम बना देती है। क्या आपने ऐसी चरित्रहीनता कभी नहीं की है। प्रभु की नज़र में हर गलत कार्य, जिससे किसी प्राणी मात्र को कष्ट पहुँचता हो, पाप की श्रेणी में आता है। चाहे वह किसी प्रकार का पाप क्यों न हो। मैं इतना जानता हूँ कि प्रभु यीशु व्यक्ति द्वारा किए गए पाप को, प्रायश्चित करने पर समाप्त कर सकते हैं।"

"सीनियौर कर्नल पीटर, वाक् चातुर्य तो कोई आपसे सीखे। आपने अपने वाक्-चातुर्य से हम सभी को भ्रमित कर दिया है। माना आपकी नजर में चरित्रहीनता अन्य पापों की तरह ही एक पाप है। तब आप इस सूदिर क्रिश्चियन स्त्री से शादी क्यों नहीं कर लेते हैं।"

"क्या कहा, मैं इस ढलती उम्र में शादी रचाऊँगा? इस पके हुए फल का क्या भरोसा कब टपक जाए। मैं इस अबला का जीवन बरबाद नहीं करूँगा। प्रभु मुझे इस अपराध के लिए कभी क्षमा नहीं करेंगे। आज क्या, ये विचार मेरे मन में युवावस्था में भी कभी नहीं आए। तब अब कैसे आ सकते हैं। मैंने प्रण किया है। मैं इसी तरह लोगों की सेवा करके अपना जीवन गुज़ार दूँगा। यही प्रभु यीशु की इच्छा है।"

"सीनियौर कर्नल पीटर, अब प्रभु यीशु को बीच में क्यो लाते हैं। यह क्यों नही कहते है। यहाँ-वहाँ मुँह मारकर ही अपनी काम-वासना शांत करते रहोगे। कंबल ओढ़कर घी पीना सबको अच्छा लगता है। जिम्मेदारियाँ भी निभाकर देखो। बहुत हो गया तुम्हारा नाटक। इस स्त्री को अपनी बस्ती में रखने से हमारे परिवार भी पथ-भ्रष्ट हो सकते हैं। फिर चरित्रहीनता तो महापापों की श्रेणी में आती है। तुम चाहते हो कि हम इसे छोड़ दें। तुम इससे शादी कर लो अन्यथा हम इसे इस बस्ती से निकालकर ही दम लेंगे।"

"नहीं-नहीं! जेम्स, यह सरासर अन्याय है। इसमें इस बेचारी का क्या कसूर है। प्रभु ने तो सभी आदमी और औरतों को अच्छा बनाया है। इस दुनिया में औरतें लोगों के संपर्क में आकर, उन पर विश्वास करते ही अपना सब कुछ खो देती हैं। फिर शील भंग होने का कलंक स्त्री पर ही क्यों लगाया जाता है। शील भंग करने वाले पुरुषों का भी उतना ही कसूर होता है जितना एक स्त्री का। आप सब लोग मात्र लिवि परेरा को ही क्यों सजा देने पर तुले हुए हैं। प्रभु की नज़र में स्त्री-पुरुष सब समान हैं। क्रिश्चियन-क्रिश्चियन हाते हैं, सूदिन क्रिश्चियन तो कभी नहीं। धर्म के ठेकेदारों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए सूदिर क्रिश्चियन बनाए हों। यह अलग बात है। लिवि परेरा आप बताओ आप! क्रिश्चियन हैं! अथवा सूदिर क्रिश्चियन।"

"सीनियौर कर्नल पीटर! मैं अकेली ही गोवा में आपका सम्मान नहीं करती हूँ बल्कि पूरे गोवा के सभी सूदिर क्रिश्चियन आपका सम्मान करते हैं। सच बात तो यह है कि में सूदिर क्रिश्चियन ही हूँ। जो वास्तविकता है। मैं उससे कभी मुँह नहीं मोड़ सकती हूँ। आप इस भेद-भाव को नहीं मानते हैं, यह आपका बड़प्पन है। परंतु यह वास्तविक सच्चाई है कि हमें गोवा के ब्राह्मण क्रिश्चियन कभी बराबर का दर्जा नहीं देते हैं। हम चर्च में साथ बैठकर प्रार्थना करने तक ही सीमित हैं। हमें ब्राह्मण क्रिश्चियन अपने घरों में अंदर कभी नहीं बैठाते हैं। हमारे साथ हमेशा से अछूतों की तरह ही व्यवहार किया जाता रहा है। इतना ही नहीं, बल्कि ब्राह्मण क्रिश्चियन हमसे शादी भी नहीं करते हैं। हमारी रिश्तेदारी में एक लड़की रोजी जो बहुत खूबसूरत और हजारों में एक है, उसने ओल्ड गोवा के एक ब्राह्मण क्रिश्चियन लड़के से लव मैरिज की है। बेचारी पर आज भी बहुत अत्याचार होते हैं। घर में उसके साथ नौकरों की तरह व्यवहार किया जाता है। प्रतिदिन ताने-उलाहनों के साथ-साथ अतिथियों के सामने अपमानित भी किया जाता है। लेकिन बच्चों को सभी प्यार करते हैं। रोजी अपमानित होकर भी इस उम्मीद में जी रही है। कभी तो प्रभु



यीशु सवेरा लाएँगें।"

"मुझे माफ करना लिवि परेरा, अगर रोमन कैथोलिक क्रिश्चियनों में इस तरह की गलत परंपरा विकसित हो रही है। तो यह दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं बिना किसी भेदभाव के सभी जरूरतमंदों की सहायता करता हूँ। प्रभु यीशु की नज़र में सभी क्रिश्चियन और दूसरे इंसान समान हैं। न कोई छोटा है और न कोई बड़ा है। सूदिर क्रिश्चियन तो कभी नहीं। मैं क्रिश्चियनों के घर ही नहीं बल्कि सभी गोवा वासियों के घर खा लेता हूँ। सभी जन क्रिश्चियन, हिंदू, मुस्लिम बौद्ध... मेरे घर में आकर मुख्य कक्ष के सोफों पर ही बैठते हैं।"

"हम और इंतजार नहीं कर सकते हैं। हमें इसी वक्त आप अपना निर्णय बताओं कि तुम लिवि परेरा से शादी करने के लिए तैयार हो। अन्यथा, हमारे मार्ग में अड़चन मत डालो।"

"कौन? रोडरिक्स डिकोस्टा! तुम भी चरित्रवान बन गए हो। अपने गार्डन के माली की पत्नी से व्यभिचार वाली बात दो महीने में ही भूल गए। अरे मूर्ख, मौसम भी बदलने में चार महीने लेता है। क्यों पाप कमा रहे हो। मैंने ही दो बीघा जमीन दिलवाकर तुम्हारा पिंड छुड़वाया था। नहीं तो समुद्र के किनारे फोर्ट आग्वाद के नज़दीक वाली जेल में चक्की पीस रहे होते। जब बाहर आते। तब सब बाल पक गए होते। तुम्हारे जीवन के सब रंगीन सपने और हसीन रातें बस ख्वाबों में ही आतीं। आज इतनी ऊँची आवाज में बात कर रहे हो कि आसमान भी काँप उठे। मैंने तो कोई अपराध भी नहीं किया है। रही बात शादी करने की। चाहे मैं पहले शादी न भी करता। अब मैं लिवि परेरा से शादी अवश्य करूँगा। क्योंकि वह सूदिर क्रिश्चियन है। मुझे शादी करने में कोई शिकायत नहीं है। मैं लिवि परेरा से शादी करके गर्व महसूस करूँगा। क्यों लिवि, आप मुझसे शादी करने को तैयार हैं!"

"सीनियौर कर्नल पीटर! आप मुझसे शादी करेंगे? मैं सूदिर क्रिश्चियन हूँ। नहीं-नहीं। मुझे पाप लगेगा। मैं आपको धोखा नहीं दे सकती हूँ।"

"मैडम लिवि, आप किसी बात की चिंता मत करो। मैंने स्वयं शादी का प्रस्ताव रखा है। अब अपने इस फैसले को बदलना मेरे हाथ में नही है। मैं इस शादी को अपने प्रभु की इच्छा समझ रहा हूँ। आप इस समय हाँ के अलावा कोई शब्द मत बोलना।"

"सीनियौर कर्नल पीटर! मैं आपसे शादी करने के लिए तैयार हूँ। मैं अपनी सहर्ष स्वीकृति भी देती हूँ। परंतु मेरी एक शर्त है। शादी करने से पहलें मैं अपने बारे में आपको सब कुछ बता देना चाहती हूँ। प्रभु मुझे माफ करना। आपने मुझे अच्छा वर दिया है। अब मुझे कुछ हिम्मत भी देना। मैं अपने बारे में अपने होने वाले पति को अपने जीवन की सभी घटनाएँ सविस्तार बता सकूँ।"

"लिवि परेरा! मैंने अब आपको अपनी पत्नी स्वीकार कर लिया है। आप चाहें तो आज ही अपने बारे में मुझे सब कुछ बता सकती हो। मैं पीटर सीक्वेरा यहाँ उपस्थित जन समुदाय के समक्ष लिवि परेरा का हाथ अपने हाथ में लेता हूँ। मैं घोषणा करता हूँ कि अब से लिवि परेरा को मेरी पत्नी माना जाए। आप सभी अपनी स्वीकृति दें तो मैं लिवि को अपने साथ ले जाना चाहता हूँ।"

लिवि की आँखों से धवल अश्रु धार की निर्झर धारा बड़े तीव्र वेग से झरने लगी। इसी के साथ लोगों के मन की मुराद पूरी हो चुकी थी। सभी उपस्थित जन खुशी में उछल रहे थे। कुछ सीनियौर कर्नल पीटर के अभूतपूर्व निर्णय की प्रशंसा करने के बहाने नित नए मौकों की शुरुआत होने पर खुशी का इजहार कर रहे थे। सभी हर्ष ध्वनि के साथ नव दंपति का स्वागत करने के साथ-साथ, घर जाने की विदाई तालियों की ध्वनि के साथ कर रहे थे।

लिवि परेरा सीनियौर कर्नल पीटर की हवेली के बड़े मुख्य कक्ष की भव्यता देखकर दंग रह गई। बड़े-बड़े पुर्तगाली विदेशी सोफे, कालीन, झाड़, फानूस और खुदाई की गई दर्जनों आबनूस और हाथी दाँत की कुर्सियों की चमक समय की धूल तले दब चुकी थी। लिवि सोचने लगी। मैं मामूली गरीब घर में पली बड़ी हुई। कभी एक घड़ी आराम



नसीब न हुआ। सदैव पेट की क्षुधा शांत करने के लिए मेहनत-मजदूरी के भाड़ में झुकती रही। शादी का सपना तो उम्र ढलने के साथ ही भूल चुकी थी। प्रभु तेरा लाख-लाख धन्यवाद। तेरे खजाने में सब कुछ अखंड है। इस दुखियारी को देवता समान पुरुष पति के रूप में बख्शा है। तेरा मैं पुनः धन्यवाद करती हूँ।

सीनियौर कर्नल पीटर अपने हाथ में कॉफी के दो कप के साथ सोफे पर बैठते हुए बोले—

"लिवि, अब मैं भी बहुत थक चुका हूँ। मुझे सख्त आराम की आवश्यकता है।"

"सीनियौर पीटर! धन्यवाद। मैं सभी काम सँभाल लूँगी। मैंने होश सँभालते ही बस काम ही तो किया है। आज से मेरे जीवन पर आपका अधिकार है। जब भी माँगोगे, हँसत-हँसते लौटा दूँगी।"

"लिवि, हमें आशावादी होना जरूरी है। नहीं तो जीवन नरक बन जाता है। जब हम किसी तरह का छायाचित्र बनाते हैं तब उसे सजाने के लिए मनचाहा रंग भरते हैं। उसी तरह जीवन को भी रंग भरकर रंगीन और खुशहाल बना सकते है। जीवन ईश्वर का दिया हुआ है। उसी को लौटाना है। मदद करने का मतलब मानवता के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना है, किसी को गुलाम बनाना नहीं है।"

"सीनियौर कर्नल पीटर, आप ठीक ही कर रहे हैं। मेरी तुच्छ बुद्धि ने बस इतना ही सीखा है कि कोई दिल से मदद करे तो उसका पूरी उम्र-भर अहसानमंद रहना। उससे सदैव झुकना।"

"यह सरासर अन्याय है। जिस व्यक्ति ने बुरे समय में हमारी मदद की है, उसने अपने मानव होने का बस ऋण चुकाया है। तब सदैव उसके गुलाम क्यों रहें। हाँ हमें इतना याद रखना जरूरी है कि जब भी उस व्यक्ति को किसी प्रकार की मदद की आवश्यकता हो। तब उसकी मदद अवश्य करनी चाहिए।"

लिवि कॉफी का घूँट भरकर प्रशंसा करते हुए बोली, "कॉफी बहुत जायकेदार बनाई है। लगता है। आप खाना भी स्वादिष्ट बनाते होंगे

सीनियौर!"

"हाँ, लिवि! बचपन से अच्छा स्वादिष्ट खाना खाने का बहुत शौक रहा है। आजकल लोग मुझे खाना खाने के बाद ही अपने घर से आने देते हैं। कभी-कभी बिना खाना खाए ही सो जाता हूँ। इस उम्मीद में कि कल प्रभु खाना भेजेंगे। तब कुछ ज्यादा खा लूँगा। मैं जब भी घर में खाना बनाता हूँ। स्वादिष्ट बिरियानी और पुडिंग बनाता हूँ। बचपन में माँ को खाना बनाते हुए देखा था। उस समय देखकर थोड़ा-बहुत सीख लिया था। उसी अनुभव के आधार पर अपना गुजारा कर रहा हूँ।"

"सीनियौर कर्नल पीटर! मैं आपको कॉफी की चुस्कियों के साथ-साथ अपने जीवन के बारे में बताना चाहती हूँ।"

"तुम सब कुछ बताओ लिवि! मैं अवश्य सुनना चाहूँगा। लेकिन मुझे आपके बारे में और अधिक जानने की जरूरत नहीं है। आप जैसी भी हैं। मैं आपको पहले ही अपनी पत्नी स्वीकार कर चुका हूँ। आपके बारे में अधिक जानकर मुझे खुशी कम और दुख अधिक होगा, क्योंकि मेरा हृदय बहुत शीघ्र द्रवित हो जाता है। तुम जो कुछ कहना चहाती हो? कहो"

"सीनियौर कर्नल पीटर। बात तब की है। जब मैं आठ बरस की थी। तभी से विपत्तियों ने आकर मुझे घेर-सा लिया है। साँप के काटने से मेरी माँ जौनिथ मैन्डेस की दुर्भाग्य से मौत हो गई। मेरी दो छोटी बहनें थीं। पिता मारियन मार्शेल शराब के नशे में माँ को भूलने का प्रयास करने लगे। परंतु उनकी माँ को भूलने की हर कोशिश नाकामयाब रही। इसका मुख्य कारण पिताजी का माँ से बेइन्तहा मोहब्बत करना था। मेरी एक बूढ़ी दादी भी थी। जो हम सब बहनों को बहुत प्यार करती थी। उसने हमारी सब जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर ले ली थीं। प्रभु गरीब की बेटी को भरपूर रूप-सौंदर्य देता है। वह रूप-सौंदर्य वरदान न बनकर उसके लिए अभिशाप-अवश्य बन जाता है। मेरी दादी दिन-रात मेरे बारे में सोचती रहती थी। उसे दिन-रात



एक ही चिंता सताती रहती। कहीं मुझे कोई बरबाद न कर दे। मेरा शील भंग न कर दे। यही सोचकर मेरी दादी ने मुझे स्कूल की नन्स के साथ काम पर लगा दिया। मैं स्कूल होस्टल में नन्स के साथ रहकर काम करती थी। महीने में एक बार ही घर अपनी दादी को पैसे देने के लिए जाती थी। इसी तरह मैंने स्कूल में आठ बरस गुजारे। इसी बीच हमारी दादी इस दुनिया में हमें रोता-बिलखता छोड़कर चली गई। पिताजी देर-सबेर शराब पीकर घर लौटते थे। छोटी बहनें कहाँ रहें। उन्हें कौन खाना दे। यही सोचकर मैंने स्कूल हॉस्टल में नन्स की नौकरी छोड़ दी। इतना दुःख कम न था। एक दिन पिताजी भी अधिक शराब के नशे की हालत में इस दुनिया में अकेले छोड़कर चले गए।

हमारे पास रहने के लिए बस घर के लिए ही जगह थी। उसी में झोंपड़ी बनाकर रहते थे। मैं भूखी-प्यासी बहनों के साथ रहती थी। मैं तो एक बार को भूखी भी रह सकती थी। मुझसे बहनों की आँखों में निर्झर आँसू न देखे जाते। मजबूर होकर मैंने पड़ोस के घरों में काम करना शुरू कर दिया। मेरे दुर्भाग्य ने यहाँ भी मुझे नहीं छोड़ा। लोगों की नज़रों के वार से अपने आपको बचाती रही। बकरी कितना भी कसाई से बचकर रहे। उसे एक न एक दिन कसाई के छुरे के नीचे आना ही पड़ता है।

एक भंयकर काली रात में अपनी झोंपड़ी में बहनों के साथ सो रही थी। हर रोज जब भी कुत्ते भौंकते तो मुझे डर लगता था। कहीं चोर-उचक्का न आ जाए। मैं उस रोज कुत्ते के लगातार भोंकने की आवाज सुनकर बाहर आई थी। तभी दो बलिष्ट हाथों ने मुझे दबोच लिया। मेरी चीख निकल गई। परंतु उसके बाद उन्होंने मेरे मुँह में कपड़ा ठूँस दिया। तड़पने और छटपटाने के साथ-साथ बज्र के प्रहारों की पीड़ा बर्दाश्त न कर सकी। जब मुझे होश आया, तब पूरा बदन टूट रहा था। कपड़ों में रक्त के निशान मेरी बरबादी की गवाही दे रहे थे। गुजरे वक्त की पीड़ा को याद करके मेरा बदन काँपने लगा। मुझ अबला को दरिंदों ने अपनी हवस का निवाला बनाकर निगल लिया

था। उस रात सचमुच मैं मरना चाहती थी। फिर बहनों की परवरिश कैसे होगी। इसका ख्याल करके मैंने अपना इरादा बदल लिया। मैं इस घटना को लोगों को बताना चाहती थी। फिर शायद मेरी शादी न हो पाएगी। इसका ख्याल करके मैंने अपनी जुबान पर ताला लगा दिया। मैं ऐसी जिल्लत की जिन्दगी जीने लगी। बदनसीबी ने फिर भी पीछा न छोड़ा।

हमारी पाँच सौ गज जमीन थी। उसे भी मेरे पड़ोसी हड़पना चाहते थे। वे आए दिन मुझसे लड़ाई करते ताकि मैं परेशान होकर कहीं भाग जाऊँ या आत्महत्या कर लूँ। सोच-सोचकर मेरा बदन सूख रहा था। एक दिन मैं बहुत मजबूर हो गई। मैंने एक बार फिर मजबूरी में दोना पावला जेट्टी की ऊपरी मंजिल से छलाँग लगाकर मरने का फैसला किया। जेट्टी पर अचानक मेरे मस्तिष्क में एक विचार बादलों में कौधंती बिजली की तरह चमका। मैं किस लिए मर रही हूँ। मेरा अपराध क्या है। खूब सोच-विचार के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची। मेरा गुनाह बस इतना है। मैं जवान हूँ। असहाय अबला नारी हूँ। मैंने अपनी इच्छा से कोई अपराध नहीं किया है, फिर मैं क्यों आत्महत्या करूँ। मैंने निर्णय किया कि हर हालत में अपनी बहनों के लिए जीती रहूँगी।

इस घटना के ठीक एक माह के बाद फिर इस घुट-घुटकर जीने और लड़ाई से तंग आकर (सीमेंटरी) कब्रिस्तान में रात के बारह बजे गये। उस रात मेरी पड़ोसिन महिला ने मेरे पैर उखाड़ दिए। मैं घबरा गई। मैं कब्रिस्तान में अपने पिता की कब्र पर रोती रही। वहाँ पर मैंने प्रभु यीशु से प्रार्थना की। प्रभु यीशु तुम मुझे इस संसार से उठा लो। किसी डैविल (शैतान) को भेज दो जो मुझे मौत दे दे। उस रात भी मैं कब्रिस्तान से और दिनों की तरह खाली हाथ लौट आई। इसके बाद मैंने अपनी चिंता छोड़ दी। मैं किसी भी तरह अपनी बहनों की शादी करना चाहती थी। मेरे लिए जो भी शादी के प्रस्ताव आते, उन प्रस्तावों पर बारीकी से सोच-विचार करके मैंने जैनित और जैनिफर



दोनों बहनों की शादी करवा दी। अब मैं अकेली रह गई। मैं नियमित बाइबिल पढ़ती। प्रभु की प्रार्थना करती। मैंने हर रविवार चर्च में प्रार्थना की। पता नहीं फिर भी मेरे मन के एक कोने में आग-सी जलती रहती। जिसे मैंने कभी भी किसी के सामने इजहार नहीं किया। कम उम्र में जबरदस्ती मेरे शरीर को दो दरिंदों ने अपवित्र कर दिया था। इसके बाद मेरे स्वभाव में लगातार परिवर्तन आता गया। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। में बार-बार प्रभु की प्रार्थना करती— प्रभु, तू धन न दे। तो कोई बात नहीं है। पर किसी गरीब बाप को बेटी मत देना। बेटी देना तो उसके सिर पर से माँ-बाप का साया मत उठाना। प्रभु, मुझे माफ करना। मुझे बिल्कुल पता नहीं है। मैं क्या कर रही हूँ। मैं इतना जानती हूँ कि जिस राह पर लोगों ने मुझे धकेल दिया है। वह ठीक नहीं है। फिर भी न जाने कौन-सी ताकत है जो मुझे उस ओर ढकेल रही है। मैं क्या करूँ। प्रभु मुझे राह दिखाओ। में बचपन से तेरी प्रार्थना कर रही हूँ। कभी कुछ नहीं माँगा पर आज माँगती हूँ। प्रभु तू मूझे बस इतना बता दे, क्या मुझे इस बदनाम जिंदगी को जीने के साथ-साथ नरक भोगने के लिए ही पैदा किया था। यह कब तक चलता रहेगा। मैं प्रभु तुझसे आज शिकायत कर रही हूँ। यह जानते हुए कि तुम्हारे पास प्रत्येक प्राणी के लिए एक योजना होती है। मैं मजबूर हो गई हूँ। प्रभु! तुम कुछ नहीं दे सकते हो। तो तुझे मौत ही दे दो। आज एक माह पूरा हुआ है। मात्र दो दिन पहले मेरे बारे में बदनामी की बात पूरे गाँव में आग की लहर की तरह फैल गई। आज जब लोगों ने मुझे अपमानित कर बस्ती छोड़ने का निर्णय लिया। तो मैं बहुत खुश हुई। चलो अब इस जिल्लत की जिंदगी से छुटकारा मिल जाएगां। मुझे सारी जिंदगी अपमान सहना पड़ा। अब बेघर और कर दिया। यही तुम्हारा न्याय है। इसके बाद की घटना आप जानते ही हैं....” आँखों से फूटते गर्म सोले के साथ रुंधे कंठ की सिसकियों के बीच से बड़ी मुश्किल से निकल पाया।

"लिवि, तुमने बड़े दुःख सहे हैं। मैं तुम्हें पाकर धन्य हो गया।"

सुबह ग्यारह बजे सेंट ऑगस्टाइन चर्च में फादर पाल डिसूजा ने सादे समारोह में सीनियौर कर्नल पीटर की शादी करा दी। वह अपनी पत्नी लिवि के साथ अपनी हवेली में हँसी-खुशी से रहने लगे। पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए जीवन की नाव धीरे-धीरे बहने लगी। पीटर जिम्मेदारियों के बावजूद भी दिन-रात दीन-दुखियों की सेवा में लगे रहते। सामने आने वाली हर मुश्किल का सामना बड़े धैर्य से करते हुए सदैव आगे बढ़ते रहते। वे शादी के बाद से हर हालत में रात अपनी हवेली में गुजारते। इस प्रकार समाज में उनका लगातार प्रभाव बढ़ रहा था। जिस कारण गोवा के अमीर लोग उन्हें अपना विरोधी समझने लगे। उन्हें अपमानित करने के किसी भी अवसर को हाथ से न जाने देते। एक बार पीटर को जरूरी काम से बाहर जाना पड़ा। दो दिन तक नहीं लौटे। लिवि ने अपने पति की चिंता में खाना भी छोड़ दिया था। पीटर की तलाश करने के लिए कई लोगों को भेजा, परंतु कोई पता न चल पाया। तब वह पूरे पाँच रोज बाद लौटकर घर आए थे। उस दिन बड़ी मुश्किल से लिवि को समझा पाए थें। पहली बार लिवि की रो-रोकर सूज गई आँखों को देखकर घबरा गए थे। आते ही नहा-धोकर फिर जाने लगे। लिवि ने कहा–

"सीनियौर, कुछ खा लो।"

"नहीं-नहीं, मुझे पहले ही देर हो चुकी है। बाद में आकर खाऊँगा। मुझे चर्च के उद्घाटन के धार्मिक समारोह में व्याख्यान देना है। शाम को सब कुछ विस्तार से चर्चा करेंगे।"

"ठीक है सीनियौर, जैसी आपकी इच्छा।"

कर्नल पीटर नए चर्च में लोगों को व्याख्यान दे रहे थे। पूरे चर्च हॉल में लोग शांत मन से व्याख्यान सुन रहे थे। जब व्याख्यान समाप्त हुआ तब जॉर्ज कोरियन ने प्रश्न किया–

"हमें धार्मिक व्याख्यान देने वाले कर्नल पीटर, अपने घर में भी व्याख्यान दे दिया करो। आपको पता है कि आपकी पत्नी के कितने



लोगों से संबंध रहे हैं।"

इस प्रश्न से विचलित हुए बिना शांत स्वभाव से पीटर ने कहा–

"मिस्टर जॉर्ज कोरियन, मुझे इस संबंध में जानकारी लेने में कोई दिलचस्पी नहीं है। हाँ, शायद आपको दिलचस्पी है। आप अपने इस ज्ञान को मुझे अपमानित करने के लिए अपने पास ही सुरक्षित रखो। शायद फिर कभी काम आ जाए। एक बात और सुनो। जब भी आपकी मुलाकात मेरी पत्नी लिवि से हो जाए तो उससे कहना। मैं लिवि को बेइन्तहा मुहब्बत करता हूँ। शादी का पवित्र बंधन दो आत्माओं का मिलन होता है। जो विश्वास के पवित्र धागे से बँधा होता है। मुझे अपनी पत्नी पर आज भी पूरा विश्वास है। लिवि मेरी पत्नी है। और सदैव विश्वासपात्र पत्नी रहेगी।"

❑

# रात्रि भोज

हीरा सिंह संखवार बस में बैठते ही मन ही मन सोचने लगे। आज पूरे चौदह बरस के बाद अपने गाँव गुटैहा जगनपुर लौट रहा हूँ। आँखों में खुशी की चमक थी। मन में उमंग की लहरें जोर-जोर से हिलोरें ले रही थी। आज माँ-बाप का वर्षों पहले देखा सपना पूरा करके आए थे। आज अम्मा सूरजकली को देखे तो चौदह साल बीत गए थे। मुझसे बापू जरूर शहर में कभी कभार मिल आए थे। वर्ना बापू सदैव मनी आर्डर के रूप में ही दिखते थे। इन बीते सालों में मेरे मन में कई बार आया था। अम्मा को देख आऊं, परन्तु पैसे के टोटे ने बेबस कर रखा था। मैं तो जैसे तैसे पढ़ाई पूरी कर रहा था। दूसरे मेरे बापू ठाकुर प्रसाद भी नहीं चाहते थे। मैं गाँव में आऊँ। इस बात की खबर बिना बात के बडी जात वालों को लगे। हरिया का बेटा शहर में पढ़ाई कर रहा है। उन्हे डर था कि हो सकता है कि कहीं वे इससे नाराज होकर मेहनत मजूरी पर से भी न हटा दें। तब मेरा हीरा कैसे पढ़ेगा। मेरा हीरा जब हीरा बन जाएगा। तभी ससुरो को अपने बेटे हीरा को दिखाऊँगा।

मुझे खूब याद है कि मैंने अपने कितने दिन नमक की खिचड़ी खाकर दिन काटे हैं। मैं यह भी बखूबी जानता था। मुझे तो किसी तरह खाना मिल जाता है। किताबें मिल जाती है। मुझे सदैव एहसास रहता था। मेरे माँ-बाप ने मेरी पढ़ाई पूरी करने के लिए कितनी मेहनत मजूरी की होगी। कितनी रातें बिना खाए ही सोए होगे। तब जाकर कहीं। मैं मजस्ट्रेट बन पाया हूँ। आज वर्षों बाद माँ-बाप के पढ़ाई पूरी करने के बाद, एक साथ दर्शन होगे। यही सोचते-सोचते उनकी न जाने कब आँख लग गई।



बस कन्डक्टर की गुटैहा जगनपुर आ गया। आवाज सुनकर हीरा सिंह की नीद की झपकी टूट गई। जल्दी से संभलकर सामान के साथ बस से गांव की सड़क पर उतर पड़े। अपने गाँव की पक्की सड़क देखकर सहसा उन्हे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। सब कुछ उन्हे सपना लग रहा था। उन्हे खूब याद आ रहा था। आज से चौदह वर्ष पहले की बात है। वे घुटने तक पानी में पैदल चलकर बढ़ी मुश्किल से अपने बापू और अम्मा के साथ सड़क तक आ पाए थे। सभी की सांस फूल गई थी। हर साल चार महीने चौमासे के शहर जाने के लिए सबको यही कसरत करनी पढ़ती थी। मन में अच्छा लगा। चलो जमाना बदल रहा है। फिर तो अवश्य ही लोगों के ख्याल भी बदल रहे होगें। छुआ-छुत का चक्कर भी मिट रहा होगा। मुझे पढ़ाई पूरी करने में तथा नौकरी मिलने में चौदह साल लग गए। यहाँ दुनियाँ ही बदल गई। यह सोचते हुए, मन में विचारों का मंथन चल रहा था। अपने मुहल्ले में कब पहुँच गए, पता ही नहीं चला।

मुहल्ले में घुसते ही मेरे आने की खबर आग की तरह फैल गई। सबसे पहले मेरे हम उम्र संगी साथी मुहल्ले के बच्चों के साथ शोर मचाते हुए उछलते-कुदते हमारी मढैया पर जमा हो गए। जैसे बाबरे गाँव में ऊँट आ गया हो। मैंने अपनी हँसी दबाते हुए उनसे पूछा। भाई शोर क्यों हो रहा है। इतना कहाना था कि वहाँ शान्ति छा गई। मैं यह सब देखकर अपनी हँसी दबा न सका। जोर-जोर से हँसने लगा। मुझे हँसता देखकर सबके सब खिलखिलाकर कर हँस पढ़े। हँसी का दौर रूका ही था। तभी किसी ने पूछा लिया। हीरा जज्जु बन गया है। मैं फिर हँसते-हँसते लोट पोट हो गया। अपनी हँसी रोकर बड़ी मुश्किल से कह पाया। हाँ मैं जज्जु है गयौ हूँ।

मुहल्ले के सभी लोगों की आँखे मेरी ओर बढ़ी आशा से देख रही थी। सभी ने मुझसे बढ़ी उम्मीदें बाँध रखी थी। उन्हे आशा थी कि मैं जैसे ही आऊँगा। सबके कष्ट एक क्षण में मिटा दूँगा। सांबरी चाची तो उस समय अपने को रोक न पाई। उसने सोचा होगा कि कहीं उसे कहने में देर न हो जाय। वह झट से बोल उठी हीरा भईया अपने छोटे भईया मोहना की नौकरी लगवाइ दईयो। मैंने हँसते हुए हामी भर दी। चाची कुछ न कुछ जरूर प्रबंध करूँगा। तुम चिन्ता मत करो। मैं इतना ही कह पाया था कि अम्मा हफ-हफाती, गिरती-पढती हुई भागती आती हुई दिखाई दी। मुझे देखते ही उसकी आँखों से आँसुओं का सागर उमड़ आया था। बिन मौसम के ही आँखों से आँसुओं की घनघोर बारिष होने लगी थी। वह अपनी छलछलाती आँखों से मुझे देख भर पाई थी। कि बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। बड़ी मुश्किल से लगभग एक घंटा सेवा-सुश्रूषा और दवा-पानी करने के बाद जाकर उसे होश आ पाया था। होश आने पर अपनी तसल्ली के लिए मुझसे पूछने लगी।

भईया तू जज्जु है गयो है का। तेरे बापू बता रहे थे। पर मोइ सांचु नाइ आयोओ।

हाँ तेरी सौ अम्मा। तेरा बेटा हीरा सिंह संखवार अब जज्जु बन गया है।

अच्छा बेटा। अब तू सब अपनी जाति बिरादरी वालों की खूब मदद करना। तेरे से कोई बात छिपी थोडे ही है।

आज मुझे ऐसो लगि रहियो है। हमने भूखे प्यासे रहकर मेहनत मजूरी करके जो तपस्या की है। वह आज सफल हो गई है। भगवान कहीं है कि नहीं। अब तो उस पर से विश्वास भी उठ गया है। हमारे लोगों की गरीबी उनके साथ, पीढ़ी दर पीढ़ी, साथ नहीं छोड रही है। किसी को भर पेट खाना नसीब नहीं होता है। सबके सब तीस चालीस के होते होते बूढे से दिखाई देने लगते हैं।



मैंने अम्मा से कहा! अम्मा धीरज रख। धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा। जमाना बदल रहा है। वो दिन भी आएँगे। जब सबको भरपेट खाना मिलेगा। सबके पास काम होगा। सबके पास तन ढकने को कपड़ा होगा। अम्मा अब कुछ ठीक सी हो गई थी। तब मैंने कहा। अम्मा प्यास सी लग रही है। इतना कहना भर था। पास में बैठा नथुआ कुएँ से ताजा पानी की बाल्टी भर लाया। तब जाकर कहीं मैंने झिककर पानी पिया। सब अपनों को चौदह साल बाद देखकर भूख मर सी गई थी। झुटपुटा होने को आया था। उस दिन एक भी आदमी हमारी मढैया छोड़कर जाने को तैयार नहीं था। मैंने कहा कि में कोई भागे थोडे ही जा रहा हूँ। कल फिर मिलूँगा। अभी गाँव में पूरे पन्द्रह दिन रहूँगा। तब जाकर कहीं लोग वहाँ से हटे।

मेरे जज बनने की उड़ती-उड़ती खबर गाँव के जमींदार रहे, बड़े घर के मालिक पंडित रामकिसुन ने भी सुन रखी थी। इस खबर की पुष्टि नहीं हो पाई थी। हमारी जाति के कुंदन चाचा पंडित रामकिशुन के घर बँधऊ काम करते थे। उन्होंने पंडित जी को मेरे गाँव आने और जज्जु बनने की सूचना दी। उन्होंने फिर से पूछा। उन्हे विश्वास ही नही हो पा रहा था खबर पक्की है, हाँ बामन देबता खबर सोलह आना सच्ची और पक्की है। पंडित रामकिशुन का खबर पक्की सुनते ही उनके कलेजा में छोंक सा लग गया। चेहरा जर्द पीला पड़ गया। गाँव का आज तक उनसे कोई आगे नहीं निकल पाया था। बहुत देर चुप रहे। बाद में मौन तोड़ते हुए बोले। चलो अच्छा हुआ। अछूतों में कोई तो आगे बढ़ा। कुन्दना हीरा से कहना। वह कल शाम हमारे घर रात्रि भोज करने आ जाय।

कुन्दन ने सीधे स्वभाव कहा। आप चिन्ता मत करो। मैं दोपहर तक काम से निपट कर इस खबर को हीरा तक पहुँचा दूँगा। शाम को कुंदन चाचा हमारे घर आए। वे बढ़े प्यार से बोले तेरे जज्जु बनने की खबर जब मैंने पंडित रामकिशुन को दी। वह पहले तो बहुत देर तक

चुप रहे। फिर कुछ सोचकर बोले! चलो अच्छा हुआ। अछूतों में कोई तो आगे बढ़ा। उन्होंने मुझसे कहा कि कुन्दना कल हीरा को हमारे घर रात्रि भोज पर बुला लाना। बताइ जावैगों नाहीं। मैंने टालने वाले अंदाज में जवाब दिया। चाचा पंडित जी से कहना। अभी तो आया हूँ। इतनी जल्दी क्या है। मैं उनसे मिलने अवश्य जाऊँगा परन्तु उनके घर रात्रि भोज नहीं करूँगा। कहाँ वह राजा भोज और कहाँ हम कंगला तेली। हम अछूत और वे उच्च वर्ण खानदानी रईस। हमारा और उनका क्या मेल।

कुन्दन चाचा ने हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा। सो तो ठीक है बेटा परन्तु बढ़े लोग जब तुझे मान दे रहे हैं। तब तुम्हें जाने में क्या हरज है। नहीं चाचा! तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आएगी। जो आदमी हमारी जाति वालों को कभी पूरी मजूरी नहीं दे सकता है। हम सबको जानवर कुत्ता बिल्ली से सदैव नीच समझाता है। सदैव आसमान में उढ़ने वाला पंछी आज जमीन पर कैसे आ बैठा है। कुछ तो बात है।

जब यह बात कुन्दन ने पंडित रामकिशन को बताई। तब वह आग बबूला हो उठे। गुस्से से लाल होकर कहने लगे। आज हरिया को छोरा इतनो मनबढ़ है गयो। हमारी बात नहीं मानता है। बाद में शांत होते हुए कुछ सोचकर बोले। अच्छा भाई। वह जज है। मैं स्वयं उसे बुलाने उसके घर अवश्य जाऊँगा।

पंडित रामकिशुन के आने की कहने से मुझे हर दिन डर लगा रहता। कहीं पंडित रामकिशुन घर न आ धमकें। किसी तरह छुट्टियों का चौदहवाँ दिन आ गया। मैंने सोचा था। चलो अच्छा हुआ। सिर से बला टली। कल तो मैं चला जाऊँगा। इसी समय पंडित रामकिशुन घर आ गए। मैं घर बैठा हुआ था। मैंने पंडित ज़ी को बुजुर्ग होने के नाते सम्मान देते हुए बाबा गोड़ लागू कहा। उन्होंने सुखी रहो भर कहा। हीरा सिंह तुम हमसे नाराज हो क्या। तुम जज हो गए हो। मुझे इसकी बड़ी खुशी है। आज शाम को हमारे घर रात्रि-भोज करने



के लिए आ जाना।

पंडित जी हमने तो रात्रि भोज आज तक नहीं किया है। हम लोग सदा दो रोटी रूखी-सूखी प्याज से खा लेते हैं। बस यही हमारे लिए रात्रि भोज से बढ़कर होता है। आपकी कृपा दृष्टि बनी रहे। हमारे लिए इतना ही बहुत है। वह फिर भी बोले। नहीं तुम्हे आज शाम हमारे घर रात्रि भोज करने के लिए आना ही होगा। मैंने लाख मना किया पर वे अपनी जिद पर अडे रहे। मैंने अंत में उनसे कह दिया। मेरा पेट खराब है। मैं किसी भी हालत में रात्रि भोज पर नहीं आ पाऊँगा। उन्होंने अपनी बात पर जोर देकर कहा। तुम्हे गाँव में रहना है या नहीं। मैं आज शाम को अपने घर पर रात्रि भोज पर तुम्हारा इन्तजार करूँगा। यह मेरा अंतिम फैसला है। मेरा फैसला आज तक किसी अछूत जाए ने टाला है। जो तू टालेगा। यह कहते हुए वे वहां से उठकर चले गए।

हमारी जाति के कुछ उनके हितैषी लोगों के साथ लटूरी ताऊ एक स्वर में कहने लगे। बेटा जब इतने बड़े आदमी रात्रि भोज पर बुला रहे है। तब चले क्यों नहीं जाते हो। तुम्हारा क्या घट जाएगा। मैंने कहा लटूरी ताऊ। मैंने तो रात्रि भोज का नाम आज ही सुना है। किसी भी कीमत पर भोज-वोज पर नहीं जाऊँगा।

रामधन ताऊ जो हमारे सदैव हितैषी रहे हैं। वे बोल। जब तुम्हारा मन नहीं है बेटा। तो मत जाओ। उस रात हमारी बस्ती के किसी आदमी-औरत को नींद नहीं आई। सबके सब सहमे हुए हमारी मढैया पर आग जलाकर लाठी, फरसा, बल्लम और भाले लेकर विपत्ति का सामना करने के लिए बैठे रहे। पूरी रात बात-चीत करते बीत गई। सुबह तक कोई हादसा नहीं हुआ। हमने सोचा था। चलो अच्छा हुआ कि बला टल गई।

मैं सुबह नहाने के बाद अपनी नौकरी पर जाने के लिए बिस्तर बाँधने का काम निपटाकर बैठा ही था। तभी कुन्दन चाचा हमारे घर

मढैया पर आ गए। उन्होंने बतलाया मुझे लगता है। पंडित जी के घर से फैके हुए खाने को कल रात कुत्ते बिल्ली खा गए होगे। तभी गढ़ी में एक बिल्ली और दो कुत्ते मरे हुए मिले। मैं उन्हें अभी पोखर के पास के गड्ढों में खीचकर डाल आया हूँ। यह कहते-कहते उनकी सांस फूल गई थी। जैसे मीलों भागकर आए हों। तुतलाते हुए बोले मैं इस घटना से भीतर तक हिल गया हूँ। इस ब्राह्मण रूपी जानवर का असली चेहरा आज समझ पाया हूँ।

□



# उन्नति का राज

सदा की भाँति अकेले ही बापू अपनी चौपाल पर अलख सबेरे अलाव लगा देते। इससे उन्हें हुक्का भरने के लिए आग आसानी से मिल जाती थी। दूसरे आपने घर-कुनवा की बहुबेटियों को सबेरे-सबेरे आग उपलब्ध करवाने की परेशानी में डालने से भी छुटकारा मिल जाता था। उन्होंने अनेक बार देखा था। बहु-बेटियाँ बेचारी शरम के मारे घूँघट करके जलते चूल्हे से उपले की आग दे देती थी। कई बार जल्दी करने के कारण पैर में साड़ी फसने की वजह से बेचारी गिर पड़ती थी। ऐसी विकट स्थिति में उन्हें उठा भी नहीं पाए थे। गाँव में आज भी अपनी बहू-बेटियों को छूना भी पाप समझते हैं। इस धर्म का पालन आज इक्कीसवीं सदी में वे गर्व से करते हैं। उन्हें अलाव लगाने से अकेले पन से बहुत हद तक छुटकारा मिल जाता था। साथ में आग की ताप से ठंड भी दूर हो जाती थी। जब अलाब लगभग तैयार हो जाता। जब बस्ती तथा पास-पडौसी भी दैनिक प्रथम कार्य से निवृत्त होकर उस पर आ बैठते। फिर शुरू होता लंबी चर्चाओं का दौर। अपनी गरीबी की मजबूरियों का मंथन। बापू अपनी गुरबत में भी अलख सबेरे भजनों में खुशी तलाश ही लेते। मजबूरी में भी कभी निराश नहीं होते। दूसरों को भी उत्साहित करते। मर्द हो। हिम्मत मत हारो। मेहनत करो। तुम्हारी सभी मुश्किलें आसान हो जाएँगी।

आज बापू अलाव लगाकर बैठने वाले अकेले नहीं थे। उनका बेटा हीरा सिंह भी उनके साथ में था। जो अभी हाल ही में मजिस्ट्रेट बनकर शहर सें लौटा था। दोनों एकांत पाकर बतलाने लगे। पिछली

रात लोगों के हुजूम के कारण बातें ही नहीं कर पाए थे। उन्होंने सदैव की भाँति राजी-खुशी पूछने के बाद पूछ लिया। हीरा सिंह तुम्हें रुपयों की जरूरत तो नहीं है।

हीरा सिंह– नहीं बापू। मुझे रुपयों की बिल्कुल जरूरत नहीं है। मुझे अब नौकरी मिल गई है। मैं स्वयं आपको देने के लिए भी रुपये लाया हूँ। आपको मेरी बिल्कुल चिंता करने की जरूरत नहीं है। मैं तो कहता हूँ कि अब आप चिंता करना छोड़ दें। यही अच्छा होगा।

बापू– चिंता कैसे छोड़ दूँ बेटा। पास पडौसियों के बडों एवं बच्चों के पास ही नहीं। घर कुनवा के लोगों के पास भी तन ढकने के लिए कपड़ा नसीब नहीं होता है। खाना नसीब नहीं होता है। इस अन्तहीन पीड़ा की कसक के कारण उनकी आँखों के सागर में उठे ज्वार की लहरों को तीव्र वेग से आँसू झलझला आए। हृदय की वेदना से द्रवित आँखों से झरते सच्चे मोतियों को पोंछते हुए बोले। बेटा इन सबकी चिंता में मुझे नींद नहीं आती है। इसी उधेड़ बुन में सोचते सोचते सारी-सारी रात कट जाती है। जाने कब स्वतंत्रता की एक किरण की झलक हमारे घरों मे आएगी। हमारे समाज को और कितना धैर्य धारण करना होगा। हम सबको सवर्ण अछूत कहकर अपमानित करना अपना अधिकार समझते हैं। इसका अंत कब होगा।

हीरा सिंह– बापू अब इस ऊँच-नीच और गैर बराबरी का अंत बहुत नजदीक है। इतना ही कह पाए थे कि भगीरथ अलाव पर बैठने के लिए आते हुए दिखाई दिए। बापू को राम-राम कहने के साथ आते ही प्रश्न की बौछार कर दी। क्या बातें चल रही हैं। बाप बेटे में। सवेरे-सवेरे। अरे भाई। दिन तो निकल दिया जाने होता।

बापू ने बदलते हुए उत्तर दिया। कुछ नहीं भागीरथ। बस यों ही मैं हीरा के हाल चाल पूछ रहा था। कल तो समय नहीं मिल पाया था। वह जानते थे। अब अलाव पर लोगों का ताँता लग जाएगा। बात बढ़ाने में कोई फायदा नहीं निकलेगा। इसी प्रकार कुछ ही समय में एक-एक दो-दो करके अलाव पर बहुत से लोग इकट्ठे हो गए। दो



चार को छोड़कर आने वाले सभी बापू की उम्र के लोग थे। जो अपने जीवन के पचास-पचास, साठ-साठ बसंतों को देख चुके थे।

हीरा सिंह को उनसे कुछ पूछते न बनता था। उनमें बस एक बनवारी लाल ही हम उम्र संगी साथी थे। जिन्हें गाँव भर के सभी जन बड़े प्यार से नथुआ कहकर बुलाते थे। नथुआ भी बनवारी लाल कहकर पुकारने से न सुनते। नथुआ पुकारने पर पल भर में दौड़े चल आते थे। इस प्रकार नथुआ अपना असली नाम बनवारी लाल कब का भूल चुके थे।

नथुआ की उम्र मुश्किल से अभी चालीस की ही रही होगी। उनके सिर के बालों के साथ-साथ दाड़ी मूछों के बालों पर भी सफ़ेदी ने अपनी दस्तक दे दी थी।

हीरा सिंह ने सकुचाते हुए प्यार से पूछ ही लिया। नथुआ भइया तुम्हारे कितने बालक हैं।

नथुआ ने सीना तानकर हँसते हुए जवाब दिया। हीरा सिंह भइया एक लड़का और सात लड़की बस आठ बच्चे हैं। सभी आपस में बहुत लड़ते झगड़ते रहते हैं। तेरी भाभी कूँ चैन नहीं लेने देते हैं। बेचारी दिन भर इनकी रोटी पानी में ही लगी रहती है। सबेरे से शाम तक दो-चार लड़ाई झगड़ों की शिकायत लाना तो मामूली-सी बात है। मैं। सोचता हूँ। सब सुधर जाएँगे। जब उनके ऊपर जिम्मेदारी आएगी। भइया एक कूँ तो तुम अपने साथ ले जाओ। कोठी की घास-फास निकालता रहा करेगा।

हीरा सिंह – ठीक है। मैं एक को अपने साथ ले जाऊँगा। अब आप यह बताओ कि अब भाभी के कोई और बच्चा तो नहीं होने वाला है।

नथुआ– हाँ भइया। एक तेरी भाभी के पेट में है। एक दो महीने में हो जाएगा।

हीरा सिंह– भाईया। क्रिकेट की टीम के खिलाड़ियों की तरह पूरे बारह बच्चे पैदा करने का इरादा है।

नथुआ– नहीं नहीं भईया ऐसी कोई बात नहीं है। तुम खुद जानकार होने के साथ-साथ समझदार भी हो। इस दुनिया में औलाद और धन से किसी का पेट नहीं भरता है। जब भगवान हमारी झोली में डाल रहा है। तब मैं कैसे मना कर दूँ। भगवान अब मत दो।

हीरा सिंह– नथुआ भईया बुरा मत मानना। हमें भगवान बच्चों के साथ-साथ गरीबी भी मुफ्त में दे रहा है। हमारी गरीबी का एक बड़ा कारण अधिक बच्चे होना भी है। हम लोग दिन रात मेहनत करके भी आगे नहीं बढ़ पातें है। आमदनी कम है खर्च दुगुना है। आप मेरी बात मानो। अब बच्चों के होने पर पूर्ण विराम लगवा दो। अपनी नसंबदी करवा लो। इतना सुनते ही नथुआ ऐसा बिदका। जैसे कहीं कोई साँप निकल आया हो।

नथुआ– ना भाई ना। मैं नामर्द नहीं बनूँगा। इन बालको को कौन कमाकर खिलाएगां। मेरे बेचारे मुलमुला से बच्चे बिलख-बिलख कर मर जाएँगे।

हीरा सिंह– नथुआ तुम्हें किस मुर्ख ने बहका दिया है। नसबंदी करवाने से नामर्द बन जाओगे। मुझे तुम्हारी इस नादानी पर हँसी आ रही है। आज विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि वैज्ञानिक चाँद के बाद अब मंगल गृह पर जाने की तैयारी कर रहे हैं। भारत अपना मानव यान चाँद पर भेज रहा है, आप हैं कि आज भी दक्रियानूसी बातों में उलझे हुए हैं। अरे भाई। हमें जमाने के साथ-साथ चलना होगा। नहीं तो हमारे साथ-साथ, हमारी पीढ़ियाँ भी पिछड़ जाएँगी। नसबंदी से बच्चे होना बंद हो जाते है। कम बच्चे होने से सबसे बढ़ा फायदा खर्च कम हो जाता है। कम खर्च होने से बच्चों को अच्छा खिला सकते हो। बच्चों को बिना किसी परेशानी के पढ़ा सकोगे। सबसे बढ़ी बात आपका और भाभी का स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा।

नथुआ– हमारा स्वास्थ्य कैसे ठीक रहेगा।

हीरा सिंह– सीधी सी बात है कि जब बच्चा पैदा होता है। इससे औरतों के शरीर में कमजोरी आती है। हमारी औरतों को घी दूध की



क्या चलावे। दिन रात बह-बह कर खाना भी भर पेट नहीं मिलता है। अब आपने हमारी किला बाली बुआ को देखा हैं। बापू बताते हैं कि जब उनकी शादी हुई थी। तब वह दुहरे बदन की बहुत सुंदर दिखती थीं। अब उनका शरीर अस्थि पंजर का ढाँचा भर रह गया है। जानते हो क्यों। क्योंकि एक एक करके उनके नौ लड़की और चार लड़के हुए। उनको जीवन भर खाने को कुछ खास मिला नहीं। अब उनकी उम्र पचपन की है। अभी भी तीन बच्चे विवाह के योग्य है। अब तुम्ही बताओ। यह जीवन पूरी जिंदगी भर बहने के लिए ही है क्या। पता नहीं उन्हें कब आराम मिलेगा।

नथुआ– हीरा सिंह तुम पढ गए हो। अभी गुने नही हो। तुम्हे इतनी भी समझ नहीं है। कि अधिक बच्चे होने से घर कुनवा बड़ा होता है। लड़ाई-झगडे में अधिक आदमी ही काम आते है। एक सीधी सी बात है। घर में अधिक आदमी होगे। तब आमदनी भी अधिक होगी। भईया! तुम्हें! मैं ही! यहाँ नासमझ दिखता हूँ। जो मुझे बहकाने पर तुले हुए हो। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। तुम मेरी बुढ़ापे में अपनी भाभी से फजीहत क्यों करवाने पर तुले हो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ।

हीरा सिंह– नथुआ बुरा मत मानो। तुम मेरी उम्र के हो। मैं इसलिए आपको ही समझा सकता हूँ। अब इन पके फलों को क्या समझाऊँ। पके फलों का क्या भरोसा। कब टपक जाय। इन्होंने जो करना था। सो कर लिया। अब इनके बच्चे भी नहीं होते है। इनकी नसबंदी करो या मत करो। कोई खास परिणाम निकलने वाला नहीं है। अच्छा चलो। मैं इन बुजुर्गों के सामने तुमसे पूँछता हूँ। एक बार को में आपकी बात मान लेता हूँ कि परिवार में ज्यादा आदमी अच्छे होते हैं। ठीक है। अब तो तुम खुश हो।

अब एक आखिरी बात मुझे बताओं। घर में अधिक आदमी होने से ज्यादा खाँएगे। ज्यादा बीमारियाँ होगी। ज्यादा कपड़े लाने होगे। ज्यादा विवाह करने होगे। उनके लिए ज्यादा घर बनवाने होगे। इन

सब पर कमाने से अधिक खर्च होगा, कि नहीं। इतना ही नहीं, ब्याज में पूरा जीवन चिंता से ग्रसित रहोगे। जिसके कारण पूरी जिंदगी बह-बह कर निकाल दोगे।

नथुआ— हाँ सो ठीक है। देवा रे देवा। यह बात मेरी समझ में पहले क्यों नही आई। अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत।

हीरा सिंह— नहीं नथुआ। सुबह का भूला जब शाम को घर लौट आवै। तब उसे भूला नहीं कहते है। जो होता है। अच्छा ही होता है। जब जागो तब ही सवेरा होता है। सदा छोटे परिवार में ही खुशियों का संसार है। जब सब गाँवों अथवा शहरों में रहने वाले गरीब लोग एक-दो बच्चे के बाद नसबंदी करवाकर अपना छोटा परिवार करेंगे। तब ही हमारी उन्नति होगी। तब ही स्वतंत्रतता की पहली किरण हमारे घरों प्रवेश कर पाएगी। घर धन धान्य से पूर्ण होगा। इसलिए छोटे से परिवार में ही उन्नति का राज है।

❑



# परिवर्तन

नगौला शहर अलीगढ़ से लगभग बीस मील की दूरी पर नहर की तलहटी में बसा बड़ा पुराना गाँव है। गाँव में हर जाति धर्म के लोग रहते हैं। गाँव के चारों ओर आम के बाग इसकी खुबसूरती को चार चाँद लगा देते है। वृक्षों से लिपटी लताएँ फूलो से लदी रहती हैं। ऐसा प्रतीत होता है। गोवा की हरी भरी भरी वादियों ने नगौला में आकर डेरा डाल दिया है। इस गाँव के हर आँगन में सुबह शाम मोर नाचते नजर आ जाते हैं। यह गाँव पक्षियों का विशेष बसेरा स्थल बन चुका है। गाँव की प्राकृतिक छटा ही निराली है।

गाँव की कुल आबादी लगभग आठ हजार के करीब होगी। सबसे अधिक वोट चमारों के ही हैं। इसके बावजूद आज भी कोई चमार जाति का व्यक्ति चुनाव नहीं जीत पाया है। इसका मुख्य कारण चमार खेमा का दस गुटों में बट जाना रहा है। चाहे हार जाएँ। मजाल है। कोई किसी के पक्ष में अपना समर्थन दे दे। ज्यादातर लोग ठाकुरों की जी हजूरी करने में खुश रहते हैं। सब एक जगह रहेंगे। एक जगह खाएँगे। मगर वोट दूसरों को ही देंगे।

इस प्राकृतिक रूप से समृद्ध शाली गाँव में एक बात निराली है। चुनाव का मौसम आते ही पूरा गाँव कई खेमों में बट जाता है। इस गाँव के अधिकतर लोग काना-फूंसी और जासूसी करने में माहिर माने जाते हैं। चुनाव की तारीख नजदीक आते ही चर्चाओ का बाजार गर्म होने लगता है। हर दिन एक नया सगूफा छूटता है। उस पर पूरे दिन बहस चलती रहती है। शाम ढलने के साथ झुटपुटा होते ही लोग

अलाव पर जमा होने लगते हैं। चर्चाओं का दौर सुरा के जाम की तरह देर रात चलता रहता है। हर कोई अपने तजुर्बे की बात नमक मिर्च लगाकर सुनाता है। यह जीवन की भट्टी पर पके अनुभव बिना बात नहीं सुनाए जाते। प्रजांतत्र के रुपहले सुनहरे सपनों के द्वार को युवाओं के खोलने के उतावलेपन को देख कर धैर्य धारण करने के लिए सुनाए जाते हैं।

गाँव के बुजुर्ग, बुजुर्ग ही नहीं हैं। वे गुजरे जमाने के युवा भी रहे होते हैं। उनके पास जवानी में प्रजातंत्र के इस रुपहले दरवाजों को खोलने में असफल हुए प्रयासों का अपार अनुभव होता है। वे चाहते हैं। जिन गललियों के कारण कभी समय ने उनका साथ नहीं दिया था। वे युवाओं को अपने अनुभवों की कसौटी के सहारे धीरे-धीरे बढ़ने के उद्देश्य से कहते हैं। बेटा कुल्हाड़ी कभी भी पेड़ को नही काट सकती है। जब तक लकड़ी का बेंटा उसमें न पड़ा हो। इसका मतलब एकदम सूरज की धूप की तरह साफ है। सदैव हमारी असफलता अपने भेदिए के कारण होती हैं। अपनों के द्वारा ही हमारी पीठ में छुरा भोंका जाता है। चुनाव जीतना कोई बड़ी बात नहीं है। चुनाव जीतने से पहले अपनों का विश्वास जीतना बहुत जरूरी है।

रामदीन अलाव पर बैठे सभी की बातें बड़ी संजीदगी से सुन रहे थे। उनके सिर के बाल ही नहीं भौंहे पर भी चाँदी की तरह सफेदी छा गई थे। पूरे गाँव की सातों जाति में बस वही उम्र में सबसे बड़े आदमी रह गए थे। जैसे राम की सेना में जामवंत थे। वैसे ही चमार टोला में राम दीन थे। उनके देखते-देखते देश को स्वतंत्र हुए पचास साल हो गए। फिर भी छोटी जाति के लोगों के लिए विकास के दरवाजें अयोध्या में श्री राम की जन्मभूमि की तरह आज तक बंद पड़े हैं। वे आज कुछ कहने का मन बना चुके थे।

राम दीन बोले! भाइयों हमेशा से हमारी हार का मुख्य कारण हमारी आपसी फूट और हमारे मन का डर है। सदैव अपने को छोटा समझना है। भाग्य के सहारे जीवन काटना हमारी नियति बन चुकी



है। जब हम हड्डी तोड कर कड़ी मेहनत करके खाना खाते हैं। तब किसी से डरना कैसा। हम हिंदू हैं। हम भारत के नागरिक हैं। हमें समान अधिकार हैं। लोग जाने क्या क्या बड़ी-बड़ी बातें सुनाने आते हैं और गधें के सींग की तरह गायब हो जाते हैं। इतना तो हम भी जानते हैं कि हमें डा. अंबेडकर ने संविधान में बराबरी का हक हासिल करवा दिया है। फिर भी हम अपने को गुलाम समझते हैं। गुलामी करते हैं। हम ही अपने बच्चों को गुलामी करने का पाठ पढ़ाते हैं। आखिर यह सब कब तक चलता रहेगा। अब तो सुधर जाओ। एक हो जाओ।

राज बहादुर इतना सुनकर चुप न रह सके। राम दीन की बातों पर अपनी मुहर लगाते हुए बोले। आपकी बात चाचा सोलह आने सहीं है हम गुलामी में जीते हैं। हम एक नहीं दो तरह के गुलाम हैं। एक वो गुलाम हैं जिनके पुरखे जमींदारों के यहाँ बँधुआ रहे हैं। जाति बिरादरी के नाते हमारे बीच में रहते हैं। बड़ी-बड़ी कसमें खाते हैं। रात के अँधेरे में सौच के बहाने सभी खबर अपने सगों को पहुँचा देते है। दूसरे वे गुलाम हैं जो गरीबी में भी सदैव मन से स्वतंत्र रहे। आज भी गुलामी की जंजीर को तोड़ने को तत्पर रहते हैं। इन दोनों तरह के गुलामों में एक बात आम हैं वह यह है कि ऊँची जाति का बच्चा जो अभी निकलकर भी सीधा नहीं हुआ है। हमारे बुजुर्गों को अबे तबे, तू तड़ाक कहकर बुलाता है। धमकी भी देता है। कहने मात्र से ही हमारे बुजुर्ग लोगों के गोड़ काँपने लगते हैं। हमें झूँठा डर भी डरा देता है। डर आखिर क्या है। गैरत भरा खोखला जीवन जीने की लालसा है। वो लोग हमारे पूरे समाज को ही नहीं। हममें से एक दो ही को मारते हैं। उनका उद्देश्य हमारे अंतर मन में डर बैठाना होता है। वो चाहते हैं। लोग हमेशा डरे रहें।

हम मरने का नहीं। सबसे ज्यादा डर का शिकार हुए हैं। सभी को एक न एक दिन मरना ही होता हैं फिर आज क्यों न मर जाएँ। जब मरना ही है। तब आज और कल मरने में क्या फर्क हैं। यहाँ हिंसा

करने वालों को दंडित करना हिंसा नहीं है। आप बखूवी जानते हैं। मित्रता बराबर वालों में ही होती है। अपने हक की लड़ाई के लिए डटकर मुकाबला करना अति आवश्यक होता है। हमें हर हालत में डर छोडकर मरना सीखना होगा। एक होकर लड़ना होगा। तभी समाज तरक्की कर सकता है। तब हम एक क्या हजारों चुनाव जीत सकेंगे।

आपको शायद याद है। कल पंडित ज्ञान प्रकाश की बंदर धमकी। चमरिया के जाकतो। कल अपनी चाँद से लोहे के तवे बाँधकर आना। पहले तुम सबको मार-मार के तुम्हारे शरीर की खाल उधेडूगा। इतना ही नहीं उस उधड़ी खालों में भूसा भरवा कर गाँव की सीमा पर न लटकवा दूँगा। इतना भयानक फैसला सुनाकर गए है। हमें लगता है। पंडित ज्ञान प्रकाश, पंडित की औलाद नहीं, किसी चमार की औलाद है। भाइयों अब चमरई का काम पंडित करेंगे। यह सुनते ही सब हँसने लगे।

राज बहादुर बोले यह हँसने की बात नहीं हैं। सोचने की बात है। हम सब लोग बड़े-बड़े मृत पशु के ऊपर रांपी लेकर ऐसे फैलते है जैसे दर्जी किसी कपड़े के थान को काट रहा हो। हमें विपरीत परिस्थितियों में मानवता के नाते अपनों की रक्षा के लिए राँपी लेकर इसी तरह दुश्मन पर फैलना है। उस समय बस एक ही बात सोचनी है। ये सब कपड़े के थान की तरह बेजान मरे हुए पशु है। इनका कतर बौत करके ठिकाने लगाना। हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

राज बहादुर अपने गाँव में बच्चों के साथ गर्मियों की छुट्टी बिताने के लिए आए हैं। जो पेशे से डॉक्टर हैं। संयोग से इसी समय चुनाव पड़ गया हैं। उनके देखते देखते ही पाँच लोग पंचायत चुनाव में खड़े हो गए हैं इस बार चुनाव लड़ने के लिए उनके पिता भी फार्म भर आए हैं। इसलिए उन्होंने शाम को मुहल्ले की पंचायत बुलाने का फैसला किया है। उसमें उन्होंने प्रस्ताव रखा है। इस बस्ती में से कोई एक ही खड़ा होना है। नहीं तो सभी चुनाव हार जाएँगो। फिर चुनाव का कोई मतलब नहीं रह जाता है। इस मुद्दे पर आधी रात तक गाँव



के लोगों में बहस चलती रहीं। इस विचार-विमर्श और तर्क का कोई नतीजा न निकल सका।

राज बहादुर कोई नतीजा न निकलते देख बोलो। ये सभी छटे हुए खलीफा है। इस तरह इनमें से कोई अपना नाम वापस नहीं लेने वाला है। एक रात क्या एक साल में भी खुशामद करने से कोई फैसला होने वाला नहीं है।

यहाँ पर उपस्थित सभी पंच मेरी बात माने तो फैसला करने का अभी एक रास्ता बचा है। आप सभी मिलकर इसी समय मेरे पिता के साथ चुनाव लड़ने वाले पाँचो पंचों को इस कोठरी में ताला लगाकर बंद कर दो। फैसला करने तक इनका खाना-पानी, दिशा मैदान फरागत सब बंद। आपस में फैसला करके पाँचों सुबह होने तक एक आदमी का नाम बता दें। कौन चुनाव लड़ेगा। और क्यो लड़ेगा। जब तक आपस में फैसला नहीं करेंगे। तब तक इसी कोठरी में बंद रहेंगे।

यह फार्मूला अचूक सिद्ध हुआ। कहाँ कोई किसी की बात सुनने को तैयार नहीं था। अब चार घंटे में ही सबकी बोलती बंद हो गई। सुबह चार बजे ही पंचो का फैसला आ गया। उनमें से बस एक आदमी मंगल सिंह ही चुनाव लडेगें। वही उम्र से सबसे बड़े है। इस शर्त के साथ कि उन्हें सभी को पर्चा भरने का खर्च वापस करना होगा।

एकता में बहुत बड़ी शक्ति होती है। आप अपनी एकता की ताकत का स्वयं अंदाज लगा सकते हैं। हर डर एकता और आत्म-विश्वास से दूर होता। आत्मविश्वास और हिम्मत तभी बड़ती है। जब अपने ऊपर हर वार का प्रति उत्तर दने के लिए बुद्धि बल हो। यह सत्य है कि एकता की शक्ति के साथ आत्म विश्वास का बल साथ हो तो मार्ग में आने वाली सभी बाधाएँ छू मंतर हो जाती हैं। हम अपनी एकता और आत्म विश्वास के बल पर समाज में बड़े से बड़े परिवर्तन ला सकते हैं। परिवर्तन से ही विकास संभव है। ❐

# मुझे बाइ-बाइ कहना

नागाली हिल पर बसी धनाड्यों की कॉलोनी को कौन नहीं जानता। इस कालोनी में प्रवेश करते ही बड़े-बड़े आलीशान बंगलों की लंबी कतारें दिखाई देती हैं। एक से एक खूबसूरत महलनुमा मेहरावों की तरह इन इमारतों को देखकर ऐसा लगता है जैसे पेरिस की पौश कॉलोनी की लंबी चौड़ी सड़को पर घूम रहे हैं। बड़ी और लंबी-लंबी लग्जरी कारें बगल से फुर्र से निकल जाती हैं और पता भी नहीं चलता है। यहां पैदल चलने वाले मात्र बंगलो में काम करने वाले आदमी और औरतें ही दिखाई देती हैं।

शाम को इस पहाड़ी का नजारा देखते ही बनता है तरह-तरह के झाड़ फानूसों की रोशनी शीसे से बनी खिड़कियों से छलकर बाहर ऐसे दिखाई देती है जैसे पेड की पत्तियों से छनकर आती चाँदनी हो। बंगले के बाहर मर्करी बल्वों की रोशनी रात को दिन में बदल रही होती है।

इस पहाड़ी पर रात को युवा जोड़े टहलते दिखते हैं जो अपने ख्वाबों में खोए और बातों से एक दूसरों को गुदगुदाते मीलों चले जाते हैं। यहाँ अधेड़ और वृद्ध जोड़े भी बांह में बांह डाले ऐसे निकलते हैं जैसे उनकी अभी-अभी शादी हुई है। गोवा में यह कोई नई बात नहीं है। इस पहाड़ी की एक और विशेषता यह है कि रात को घूमते हुए गोवा की राजधानी पणजी का हवाई दृश्य की छटा अनोखी और देखते ही बनती है। ऐसा पहाड़ी की अधिक ऊँचाई के कारण होता है।



विजेन्द्र सिंह अपने छोटे से परिवार के साथ इसी कॉलोनी में रहते हैं। उनके परिवार में पत्नी कविता, दो पुत्र हैं छोटे पुत्र शिव हैं। दोनों अपने पुत्रों पर जान छिड़कते हैं। उनका छोटा पुत्र शिव सींकिया पहलवान है। गुम सुम रहना उसकी आदत बन गई है। खाना भी बड़ी मुश्किल से बहुत मनुहार करने के बाद खाना। उनकी आदत बन गई है। एक-से-एक अच्छे विदेशी खिलौनों का घर से अंबार लगा है। एक कमरा तो बस खिलौना से ही भरा हुआ पड़ा है वे फिर भी खेलते कम हैं। गुस्साऐ ज्यादा रहते हैं। उनके आसपास के बंगलो में भी कोई छोटा बच्चा नहीं है, शायद इस कारण भी उसका स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा हो गया है।

विजेन्द्र सिंह अपने पुत्र शिव को प्रतिदिन विले डायस क्लव मीरामार पर ले जाते हैं ताकि उनका मन बहल जाए। इस क्लव में शाम को बड़ी चहल पहल रहती है। साथ में हलका मधुर संगीत भी बजता रहता है। यहाँ आने वाले परिवारों के साथ उनके बच्चे भी आते हैं। क्लव में शिव को कैम्पा लेकर हाउजी खेल देखना बहुत अच्छा लगता है। हाउजी गोवा के लोगों के मनोरंजन का प्रमुख खेल माना जाता है। इस खेल में बच्चे बड़े और वृद्ध भी बड़े चाव से खेलते हैं। दो रुपये की टिकट लेकर सभी भाग्य आजमाते हैं। यह खेल आधी रात तक चलता रहता है।

अक्सर शिव को खाना खाते ही नींद आ जाती है परंतु आज पडोस के बंगले से जोर-जोर से बच्चों की आवाज सुनकर वे जग जाते हैं। पिता से पूछते हैं— डैड व्हाट हैपिण्ड। क्या हुआ। पड़ौस से रोने की आवाज आ रही है। माँ शिव के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहती है— शिव लगता है कि तुम्हारे साथ खेलने के लिए पड़ोस में बच्चे आ गए हैं।

सुबह सवेरे ही दरवाजे की घंटी गन घना उठी। विजेन्द्र सिंह ने जैसे ही दरवाजा खोला। दरवाजे पर विदेशी परिवार था। गुडमोर्निंग से स्वागत हुआ।

आई.एम. रावर्ट फ्रॉम इंग्लैंड। प्लीज मीट माई वाइफ जैनी एण्ड चिल्ड्रन मार्को एण्ड टैमी, आंगतुक ने अपने परिवार का परिचय दिया।

प्लीज कम इन। यू आर वैलकम। गोरी चमड़ी वाले परिवार का अभिनंदन करते हुए विजेन्द्र सिंह बोले।

सर क्षमा करना। हम आपके पड़ौस में कल रात को ही इग्लैंड से भारत आए हैं। हम यहाँ किसी को नहीं जानते हैं, न ही कोई आस-पास होटल ही है। चाय पीने की इच्छा हो रही थी इसलिए आपसे मिलने आए हैं। क्या आप हमें सहायता कर सकते हैं?

विजेन्द्र सिंह! ओह श्यौर! आप बिल्कुत चिंता न करें। आज आप हमारे मेहमान रहें तो हमें बहुत खुशी होगी। वैसे भी शायद आपने पढ़ा होगा कि भारतीय मेहमान नवाजी में उस्ताद माने जाते हैं।

निमंत्रण स्वीकार कर मिस्टर रावर्ट अपने परिवार के साथ ड्राइंग रूप में सोफे पर ठंडी साँस लेते हुए बैठते हैं।

मिस्टर रावर्ट प्लीज मीट माई वाइफ कवता सिंह एण्ड सन शिव। गुड मोर्निग, नाठस टू मीट यू। तब तक आया चाय के साथ केक, बिस्कुट और चिकन पैटीज लेकर आ जाती है।

दोनों जुड़वा बच्चे मार्को एवं टेमी मदर जैनी की ओर देखते हुए होटों पर जीभ फिराने लगते हैं। जैनी तुरंत उनका इशारा समझ आँखों के इशारे से मना कर देती है।

विजेन्द्र सिंह औपचारिक रूप से चाय पान के लिए आमंत्रित करते हैं।

मार्को एवं टेमी दोनो एक साथ पैटीज पर टूट पड़ते हैं।

रावर्ट! मिस्टर सिंह, माफ करना पिछली रात दोनों बच्चे भूखे ही सो गए थे। हमारे पास सिर्फ बिस्कुट ही थे। उन्हीं से किसी तरह काम चलाया था। अभी शिप से कार नहीं आई है। फोन भी काम नहीं कर रहा है नहीं तो होटल से ही कुछ खाना मगा लेते। तकलीफ के लिए क्षमा करना।



शिव को आज अपने नए दोस्त पाकर बहुत खुशी हुई। वे शीघ्र ही मार्को एवं टैमी के साथ घुल मिल गए। विदेशी बच्चों से बात चीत करने में उन्हें कोई खास दिक्कत महसूस नहीं हुई। सुबह उठते ही घर के माहौल में अँग्रेजी की हाँडी चड़ा दी जाती है। तो रात ग्यारह बजे, सोने के बाद ही बंद होती है। इसीलिए गोवा के बच्चे जन्म लेने के बाद सबसे पहले अँग्रेजी के संपर्क में पहले आते हैं। सच में वे अँग्रेजी में साँस लेते हैं। अँग्रेंजी में सोचते हैं। अँग्रेजी में रोते हैं। अँग्रेजी में हँसते हैं। अँग्रेंजी में खेलते हैं। अँग्रेजी में बोलते हैं। अँग्रेजी में हारते हैं। अँग्रेजी में जीतते हैं। यहाँ के लोगो पर पाश्चात्य संस्कृत में रचे बसे हैं। इसका मुख्य कारण गोवा पर पुर्तगालियों का कई सौ वर्षों तक शासन करना रहा है।

मार्को एवं टैमी भी बहुत खुश हैं उन्हें इग्लैण्ड और गोवा के वातावरण में कोई विशेष अंतर महसूस नहीं हुआ है। मात्र गर्मी को छोड़कर। यह कमी किसी हद तक एअरकण्डीशन ने दूर कर दी है। दोनों जुड़वा भाई बहन शिव से दो वर्ष छोटे हैं।

जैनी अपने पति और मिस्टर विजेन्द्र सिंह के बीच चल रही बातचीत का भरपूर आनंद ले रही थी। गरमागरम चर्चा में नई-नई जानकारियों का आदान-प्रदान चल रहा था। बीच-बीच में कविता सिंह और मैडल जैनी दोनों आपस में बातें करने लगती हैं।

रावर्ट ने अंतिम प्रश्न करते हुए जानना चाहा। मार्केट कितने समय खुलती है। हमें शॉपिग करने जाना है?

गोवा में बहुत रॉयल मिजाज के लोग रहते हैं। सभी काम जरूरत के अनुसार तथा समय से करते हैं। बाजार अपने निश्चित समय जैसे— सुबह दस बजे से ठीक एक बजे तक। शाम को ठीक चार बजे से सात बजे तक खुलता है। दिन में एक बजे से चार बजे तक बाजार हर हालत में बारहों महीने बंद रहता है। चाहे आप पचास हजार का सामान एक बजे खरीदना चाहें, तब भी सामान चार बजे ही मिलेगा। लेकिन अब धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है।

अच्छा! ठीक है मिस्टर विजेन्द्र सिंह हम समय का पूरा ध्यान रखेंगे। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

मार्को एवं टैमी ने भी शिव और उसके माता-पिता को धन्यवाद के साथ बाइ-बाइ कहा।

उस दिन रावर्ट ने अपने परिवार के साथ खूब खरीददारी की। हर आवश्यकता की वस्तु खरीदने के बाद घर आपूर्ति करने के लिए दुकानदारों को तय कर लिया। जो समय पर हर वस्तु फोन करने पर उपलब्ध करवाने के लिए तैयार हो गए। इसके साथ ही उनके जीवन के रथ की रफ्तार धीरे-धीरे बढ़ने लगी। जीवन हँसी-खुशी और आराम से गुजरने लगा।

मार्को और टैमी प्रतिदिन शिव के बंगले में साथ-साथ खेलते और आनंदित होते। धीरे-धीरे दोस्ती गहरी होती गई। एक समय ऐसा आया। किसी को किसी के बिना चैन न पड़ता। किसी कारणवश मार्को एवं टैमी शिव के बंगले पर छुट्टी के दिन नहीं पहुँचते। तब शिव उनके घर जा पहुँचते। वहाँ खूब खाते-पीते हुए देर तक खेलते रहते।

कभी-कभी दिन निकलते ही मार्को और टैमी शिव के बँगले में आ धमकते। वे जब घर में प्रवेश करते तब फौजी जवानों की मुद्रा में सीना तानकर, बाँहें फैलाकर आते। जैसे उनका अपना ही बंगला है। तब उनका उसी गर्म जोशी के साथ घर में स्वागत किया जाता। घर में जब सभी नाश्ता करते। तब मार्को और टैमी भी डाइनिंग टेबिल पर खूब छककर खाते। बाद में जब वे दोनों जाने लगते। तब शिव उन्हें छोड़ने उनके बँगले तक जाते। वहाँ से लौटने के बजाय साथ में खेलने लगते। जब तक कि उन्हें कोई बुलाने न आए। इस प्रकार नन्हें मुन्ने खूब खुश रहने लगे। छुट्टियों के दिनों में अब पहले जैसी ऊब न रही बल्कि अब बहार ही बहार आने लगीं थीं।

इतवार का दिन था। शिव अपने बँगले के खिलौनों के कमरे में माथा थामे बैठे हुए थे। जब वे अकेले होते तो दरबान उनके कमरे



के सामने खड़ा रहता परंतु इससे उन्हें कोई लेना देना न था। उस दिन मार्को और टैमी अपने घर से शिव के बँगले में आए और बिना किसी से पूछे सीधे शिव के कमरे में घुस गए। उन्होंने शिव को खिलौनों के कमरे में चिंतित मुद्रा में बैठे देखा। कमरे की हालत खराब थी। पूरे कमरे में चारों और खिलौने बिखरे हुए पड़े थे।

शिव कमरा गंदा लग रहा है। इन खिलौनों को एक जगह रख दें। तब ठीक रहेगा। खेलने के लिए जगह भी हो जाएगी। आते ही मार्को बोला।

शिव! आज मेरा मूड ठीक नहीं है।

मार्को! कोई बात नहीं है। तुम बैठे रहो। हम तुम्हारी मदद कर देंगे, फिर क्या था। दोनों जुड़वाँ भाई बहन मार्को और टैमी अपने छोटे-छोटे हाथो से खिलौने उठा-उठा कर नियत स्थान पर तब तक रखते रहे। जब तक सभी खिलौने इकट्ठा न हो गए। उसी समय शिव के पिता ने कमरे में प्रवेश किया। जो अभी मर्सीडीज कार से अपनी इस्टेट के विवाद के संबंध में मुख्यमंत्री से चर्चा करने के बाद लौटे थे।

पिता कमरे में प्रवेश करते हुए पूछ बैठे। शिव यह क्या बदतमीजी है। आपके दोस्त मार्को और टैमी आपके खिलौने उठा उठा कर रख रहे हैं। आप शहंशाह की तरह बैठे हुए हैं।

शिव! झेपते हुए सँभल कर बोले। नहीं मार्को और टैमी ने खुद ही मेरी मदद करने के लिए कहा था। इसमें मैं क्या कर सकता हूँ।

मार्को और टैमी। बताओ शिव जो कह रहे हैं। क्या वह सही है। यश अंकल। हम दोनों शिव की मदद कर रहे हैं।

हँसते हुए विजेन्द्र सिंह दूसरे कमरे में चले गए। कुछ देर बाद रावर्ट अपने बच्चों को बुलाने के लिए बँगले पर आए।

विजेन्द्र सिंह। रावर्ट मेरा बेटा शिव आपके बेटा-बेटी पर दादागिरी करता है। इस प्रकार उन्होंने सारी घटना सुना दी।

रावर्ट- श्री सिंह की इस बात पर जोरदार ठहाका लगाकर हँस पड़े। वे बोले मार्को और टैमी शिव से छोटे हैं इसलिए वे शिव का रिगार्ड और रैस्पैक्ट करते हैं। तुम चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा।

शिव अपने डैडी की इस बात से बहुत नाराज हो गए। जब दूसरे दिन मार्को और टैमी शिव के घर आए। शिव उनसे न बोले। तब मार्को से न रहा गया। उसने पूछा क्या बात है। हम से क्यों नाराज हो। हमने कोई गलती नहीं की है। फिर भी आप हमें सजा देने पर तुले हुए हो। यह क्या है। हमारे देश के बच्चे कभी ऐसा नहीं करते हैं। यह कैसा व्यवहार है कि जुर्म के बारे में बिना स्पष्टीकरण माँगे ही सजा दे रहे हैं। आप समझते क्या हैं अपने आपको?

शिव को इतना सुनते ही और अधिक गुस्सा आ गया। गुस्से में भिन्नाते हुए कहा। मैं तुम लोगों का मुँह देखना नहीं चाहता हूँ। कृपया आप अपना मुँह बंद कर लें।

इतना सुनते ही मार्को और टेमी की आँखों में आँसुओं का सागर उमड पड़ा। झर-झर आँसुओं की झड़ी सी लग गई। बेचारे फफकते-फफकते हुए अपने घर की ओर उलटे पाँव लौट पड़े। उनके मन में रह-रह कर एक हूक सी उठने लगी। अब आखिर कहाँ और किसके साथ खेलें। भारत में और कोई दूसरा दोस्त भी तो नहीं है। अब क्या करें। कहाँ जाए। इसी उधेड बुन में खोए हुए स्वीमिंग पूल के पानी में अपनी परछाईं देख कर उनकी सारी परेशानियाँ एक पल में उड़न छू हो गई। वे बहुत खुश होने लगे। सावन की काली घटा की तरह पल भर में घिर आए गम के काले बादल हवा के एक हलके झोंके से जाने किस दिशा में बह गए। इसका उनको पता भी न चला।

शिव अपने बँगले की पहली मंजिल से दोनो की कारगुजारियाँ बड़े ध्यान से देख रहे थे। उन्हें उनकी खुशी बिल्कुल बर्दास्त नहीं हुई। वे उन दोनों से बड़े थे। इसलिए दोनों के ऊपर बड़े होने का रौब बरकरार रखने के लिए ऊपर से ही अपनी उँगली के इशारे से पहले



मार्को को अपनी ओर बुलाया। यह संबोधन उन्होंने विशेष रूप से अँग्रेजी में किया। मार्को कम हियर?

मार्को बेचारा डरता-डरता बँगले की दीवार के पास आया। मार्को में तुमसे बात नहीं करना चाहता हूँ। अब तुम जा सकते हो। यू कैन गो नाउ। बेचारा मार्को अपना सा मुँह लेकर टैमी के पास चला गया।

शिव ने फिर टैमी को बुलाया। टैमी कम हियर। बेचारी गुमसुम सी बनी गुडिया की तरह डरते-डरते बँगले की दीवार के पास आई। ऊपर से ही शिव ने कहा। मैं न कभी तुम्हारा मुँह देखूँगा और न कभी बात करूँगा। अब तुम भी जा सकती हो।

मार्को और टैमी के बँगले पर जाकर शिव ने दूसरे दिन उनसे मांफी माँगी। फिर से तीनों के मन उजली चाँदनी की तरह निर्मल और साफ हो गए। तीनों में दोस्ती हो गई। नन्हें दिलों में गहरी कालिख नहीं। बल्कि हल्की गोधूल की परत होती है जो थोड़े से आँसुओ से और प्यार भरी बातों से साफ हो जाती है। जैसे बरसात में गहरे काले बादलों से भरा आसमान कुछ ही समय में घनघोर बारिश के बाद धुली चाँदनी की तरह साफ हो जाता है।

मार्को और टैमी बहुत खुश हुए। वे बोले— शिव, तुम्हारे अलावा गोवा में और कौन है। तुम्ही तो हो जो हमसे प्यार करते हो। हमारे साथ खेलते हो। हम भी हमेशा तुम्हारे साथ ही रहते हैं। हमसे इस तरह नाराज न हुआ करो। तुम्हारे नाराज होने से सब कुछ सूना-सूना सा लगता है। तीनों खेल में मगन हो गए।

शिव जब मार्को और टैमी के साथ खेल रहे थे। उनके पिता ने क्लव चलने के लिए कहा। मैं हैडी के साथ क्लव जा रहा हूँ। तुम दस मिनट यहीं रुको मैं अभी आता हूँ। सुनो। जब मैं कार में बैठ जाऊँ। तब तुम दोनो मुझे बाइ-बाइ कहना। समझे। फिर क्या था। दोनों ने हाँ में अपना सिर हिलाकर सहमति व्यक्त की।

शिव तैयार होने लगे। वे तैयार होने की धुन में मार्को और टैमी को कही गई बात भूल गए। अच्छे कपड़े पहनकर जैसे ही तैयार हुए।

अपनी काले शीशों वाली मर्सीडीज कार में बाहर आकर झट से बैठ गए।

मार्को और टैमी! शिव को बाइ-बाइ करने के लिए बड़ी बेसब्री से इंतजार करते रहे। जब गाड़ी उनकी आँखों के सामने से निकल रही थी। तब भी दोनों भूखी-भूखी आँखों से बाट जोहते रहे कि शिव अपना हाथ कार से बाहर निकलेगे। तब दोनों बाइ-बाइ करेगे। जब गाड़ी निकल गई। दोनों ने हाथ भी हिलाया। वे दोनों हाथ हिलाते-हिलाते सड़क तक बाहर आ गए। वे दूर तक जाती मर्सीडीज कार को भी इस उम्मीद में हाथ हिलाते रहे। शायद शिव प्रति उत्तर में हाथ हिलाएँगे और वापस जाने को कहेंगे। वे दोंनो साँझ के थके ओझल होते उजाले समान उदास मन से अपने बंगले में लौट गए।

❐



## जीवन दान

संतोष दिन भर काम की तलाश करते-करते थका मादा अपने गाँव लौटने की बाट जोह रहा था। उसके लिए इंतजार करना कोई नई नहीं बात नहीं थी। इस तरह बस के इंतजार का सिलसिला कई महीने से चल रहा था। हर दिन नौकरी मिलने की आशा के साथ उदय होता। दिन भर नौकरी की तालश करते-करते थकान के साथ अस्त हो जाता था। फिर भी मंजिल मिलने का कहीं अता-पता नहीं था। उसे दिन-रात बस एक ही चिंता खाए जा रही थी। कितनी मुश्किलों के बाद भूखा प्यासा रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। उच्च शिक्षा के बाद भी आज तक उसकी जाति ने पीछा नहीं छोड़ा है। उसके ऊँची जाति के सभी सहपाठियों को कभी की नौकरी मिल चुकी है। हर बार उसका अछूत होना नौकरी मिलने में सबसे बड़ी बाधा थी। ऐसी बात नहीं है कि नौकरी का टोटा पड़ा हुआ था। वे हँसते हुए कहते। अछूत को नौकरी क्यों। वह तो सेवक हैं। टहल सेवा तक ही ठीक है। हमारे बराबर बैठेंगे। जैसे बराबरी का हक इनके बाप दादों की जर खरीद जागीर है। वह सदैव लंबी साँस भरकर कहते। समुद्र को भी कोई बाँध सका है भला। अब तूफान उठने वाला है। उसको इनके बाप दादा क्या रोकेंगे। सब्र कर संतोष। तेरे दिन भी बदलने में अब बहुत देर नहीं है। फिर से वो दिन आएंगे। जब लोहे के पेड़ हरे होंगे।

उसे वास्को से कानकोन को जाने वाली सात बजे की अंतिम बस मिली। उसमें बड़ी मुश्किल से बैरना औद्योगिक क्षेत्र में बैठने के लिए जगह मिल गई। इस बस में चालक के पीछे वाली तीन सीटें महिलाओं

के लिए आरक्षित थी। इस सभी सीटों पर महिलाएँ बैठी हुई थीं। धीरे-धीरे बस खाली होती गई। अभी बस को अपने अंतिम अड्डे पर पहुँचने के लिए दो घंटे की यात्रा करनी शेष थी। संतोष ठीक महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों के पीछे बैठा हुआ था। वह अपने में खोए हुए सोच रहा था। आखिर यह सिलसिला कब तक चलता रहेगा। वनवास की तरह पीड़ा देने वाला अंत हीन सफर आखिर कब समाप्त होगा।

मैं अब टूट चूका हूँ। मेरी हिम्मत जवाब दे चुकी है। कब तक बूढ़े माँ-बाप पर बोझ बना रहूँगा। इन विचारों का द्वन्द उनके अंतर्मन में भारी उथल-पुथल कर रहा था। अपने विचारों की उधेड-बुन के मंथन में अचानक उनका ध्यान बस की सीट के नीचे अपने पैरों में चला गया। सीट के नीचे के फर्श पर लाल कालीन सी दिखाई दी। वह उसे देखकर शंका हुई। वह लाल कालीन को अनदेखा करते हुए अपने विचारों के सागर में डूब गया। उसके कुछ देर बाद पैरों के उसे नीचे गर्मी का सा अहसास होने लगा। वह एक बार फिर सोचने लगा। क्या बात है कि आज इतनी बारिश में भी पैर में नीचे से गर्मी महसूस हो रही है। उसने इसकी वास्तविकता जानने के लिए उत्सुकता वश अपनी सीट के नीचे ध्यान से देखा। सीट के नीचे लाल कालीन में हलचल सी दिखाई दी। जिसे कुछ देर पहले उसने अन देखा कर दिया था। उसे यह देखकर बड़ी हैरानी हुई कि बस में वह लाल कालीन नहीं बल्कि लाल खून में सीटों के नीचे फैला हुआ था।

संतोष का दिल किसी अनजान मुसीबत की आहट को महसूस कर धक-धक करने लगा। उसने अपने आपको बहुत रोकने की कोशिश की। वह फिर भी अपने आपको न रोक सका। उसके अपने सामने वाली सीट पर देखा। सामने की सीट पर एक औरत अर्ध चेतनावस्था में अकेली बैठी हुई थी। उसकी आँखें लगभग बंद होना चाहती थी। वह अपने आपको पता नहीं किस तरह सँभाले हुए थी।



संतोष ने उस अनजान औरत से पूछा। बहन आप ठीक तो हैं अथवा आपको कोई परेशानी है। यह सुनते ही बस के यात्रियों की निगाहें उस औरत पर आकर केंद्रित हो गई। औरत प्रश्न सुनते ही सकपका सी गई। वह अपने आपको सँभलते हुए बोली। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मुझे कोई परेशानी नहीं है। साथ ही अपना एक कपड़ा बगल से उठाकर सीट पर बिखर गए खून पर फैला दिया। बस की पीली मटमैली मद्धिम रोशनी के प्रकाश में औरत ने अपनी शर्म और हया को छिपाने की लाख कोशिश की। अपितु शर्म और हया से स्याह पड़ गए रंग को छिपा न सकी।

जब संतोष से न रहा गया। उसने पुनः प्रश्न किया। बहन मुझे आपकी तबियत ठीक नहीं लगती है। आप बेहोशी की हालत में है। इस हालत में आपके साथ कोई अनहोनी भी हो सकती है। आप मुझे सच सच बता दो आखिर बात क्या है।

वह औरत शर्म के सागर में डूबती हुई बोली, मैं अभागिन गर्भवर्ती स्त्री हूँ। आज मेरे ईश्वर मुझसे रूष्ट हो गए हैं। मुझे पता नहीं क्या हो गया। जिस वजह से मेरा गर्भपात हो गया है। आप मेरी चिंता मत करो। मैं ठीक हूँ। इसके साथ ही उसकी आँखों में उमड़ आए ज्वार की धवल अविरल धारा बह निकली।

संतोष ने देखा। औरत के शरीर से बहुत अधिक खून बह जाने के कारण पूरा शरीर पीला पड़ता जा रहा है। चेहरे पर मुर्दाई सी छाई हुई है। वह बस किसी तरह से आँखें खोले हुए थी। जो बंद होती जा रही थी। वह बेहोशी की हालत में भी अपने को ठीक कहे जा रही थी। बस दो घंटे की ही तो बात है। मैं घर पहुँच जाऊँगी। सब ठीक हो जाएगा।

बहन! अपने आपको सँभालो। तुम्हें अपनी जान की बिल्कुल भी चिंता नहीं है।

मैं क्या कर सकती हूँ भया। बस के आखिरी स्टैंड पर उतर जाँऊगी। उसके नजदीक ही मेरा घर है।

बेचारी इस अबला की हालत ठीक नहीं है। संतोष ने यह बात बस में बैठे यात्रियों को बताई। उसने चालक को बस किसी नजदीकी अस्पताल में ले चलने का भी अनुरोध किया।

इतना सुनते ही बस के अधिकांश यात्री संतोष पर बरस पड़े। वे गला फाडकर जोर-जोर से चिल्लाने लगे। एक तो इतनी जोर की घनघोर बारिश हो रही है। इस कारण बस धीरे-धीरे चल रही है। हम सबको घर जाने में वैसे भी बहुत देर हो चुकी है। तुम हो कि पूरी बस के यात्रियों को अस्पताल में ले जाने पर तुले हुए हो।

तभी एक बुजुर्ग की टूटती सी आवाज आई। भाई। तुम जल्दी से अस्पताल चलो। इस अभागिन के पहले प्राण तो बच जाय। जिसे जहाँ जाना है। तुम सभी बाद में फैसला कर लेना।

दूसरी ओर से जोर की आवाज आई। नही। नहीं। किसी भी हालत में बस अस्पताल नहीं जाएगी। तुम होते कौन हो। हमारे ऊपर हुकुम चलाने वाले।

तभी एक कड़कती हुई आवाज ने सभी यात्रियों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। हम समय से अपने घर पहुँचना चाहते है। रात गहरा रही है। तुम्हें मुसीबत में फँसने का बहुत शौक है। तो तुम इसके लिए स्वतंत्र हो। तुम हमें बक्स दो भाई।

पंडित दीनानाथ भट इस उपयुक्त समय पर कहाँ चुप रहने वाले थे। उन्होंने सबका ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा। भाईयों। ठाकुरजी की आरती का समय हो रहा है। मुझे ठाकुरजी की आरती करनी है। मैं सब कुछ कर सकता हूँ अपने भगवान को नाराज नहीं कर सकता हूँ। इस समय बस सीधी अपने अड्डे पर ही जाएगी। बस अस्पताल में तो हर्गिज नहीं जाएगी। अब किसी ने भी अस्पताल जाने की बात कही। तो भगवान उससे नाराज हो जाएगें। फिर भगवान के कोप से उस आदमी को कोई नहीं बचा सकता है।



संतोष को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। सभी यात्री पंडित जी की हाँ में हाँ मिलाने लगे। उसने लोगों के व्यवहार से क्षुब्ध होकर पंडित जी से प्रार्थना करते हुए कहा। इस अवला स्त्री की जान खतरे में है। बेचारी का असमय में ही गर्भपात हो गया है। वह शर्म के मारे कुछ नहीं कह पा रही है। यह भी उसी भगवान की जान है। आप खुद समझदार हैं। इस समय एक इंसान की जान से ज्यादा भगवान की आरती हो सकती है क्या।

मूर्ख। इस औरत से भगवान की बराबरी कर रहा है। पता नहीं कुलटा कहाँ से किसका पाप लेकर आई है। तभी तो भगवान ने इसे इसके पाप की सजा दी है।

यह सुनते ही बस में बैठी औरते हाय हाय करने लगीं। उनकी आँखे गर्म आँसुओं से नम हो चुकी थी। इस विपत्ति की घड़ी में वे लोगों से दया की भीख माँग रही थी। पंडित जी आपको शर्म नहीं आती है। आप मदद करने की बजाय बेचारी पर लांछन लगा रहे हैं। इस अबला के अंदर भी भगवान की दी हुई जान है। कुछ उस भगवान से डरो। जिसकी आरती करने की दुहाई दे रहे हो।

दीनानाथ बोले। जान होगी। मुझे इससे क्या। मैं इस कुजात कुलटा के लिए भगवान की आरती किसी भी हालत में नहीं रोक सकता हूँ।

संतोष ने अपना ध्यान पंडित जी के ऊपर से हटाकर बस चालक से पूछा। यहाँ पास में कोई अस्पताल है।

हाँ है। यहाँ से लगभग पंद्रह किलोमीटर दूर पर फादर पाल चैरिटी अस्पताल है। वहाँ आने जाने में मुख्य मार्ग से हटकर लगभग एक घंटे का समय लगेगा। चालक ने कहा।

यात्री गण। एक घंटा। नही नहीं। यह नहीं हो सकता है। काम करके भूखे प्यासे थके हारे आए हैं। हम बाल बच्चों वाले है। हम सभी जल्दी से जल्दी घर पहुँचना चाहते हैं। हम बिना वजह क्यों राह

चलते लोगो की मुसीबत अपने सिर लेने लगे। ईश्वर सबको मुसीबत उसके करमों के अनुसार देता है।

संतोष– देखो इस अबला के साथ के सिर पर आई मुसीबत करमों का फल नहीं बल्कि एक हादसा है। यह हादसा किसी के साथ भी घटित हो सकता है। आज इस अबला नारी के साथ घटित हुआ है। जो किसी की बेटी। किसी की बहन। किसी की पत्नी है। यह सबसे बढ़कर एक स्त्री है। आज एक अबला नारी पर विपत्ति पड़ी है। इसकी मदद करनी ही होगी। नहीं तो अनर्थ हो जाएगा। ईश्वर हम सबको कभी माफ नहीं करेगा। इसकी मौत हो गई तो पुलिस केस बन जाएगा। सारी जिंदगी जेल में चक्की पीसते पीसते मर जाओगे। आप चाहे किसी धर्म के मानने वाले हों। आपका भगवान, भगवान बुद्ध, ईश्वर, अल्लाह, ईसा मसीह, वाहि गुरू जो भी हो। एक जीते जागते इंसान का कत्ल करने के जुर्म में कभी आपको माफ नहीं करेंगें।

पंडित दीनानाथ को अपना पलड़ा हलका महसूस हुआ। तो उन्होंने अपना अकाट्य ब्रह्मास्त्र छोड़ते हुए पूछा। तू कौन जात का है रे। किसका छोरा है। बड़ी हमदर्दी दिखा रहा है। तुझे तनिक भी भगवान के नाराज होने का डर नहीं है। इस कुलटा पर बड़ी दया आ रही है। बड़ा धर्म वाला बना है। एक साथ कई प्रश्नों की बौछार कर दी।

संतोष– मैं संतोष अछूत हूँ श्री खचेरू अछूत अधर्मी का बेटा।

अच्छा तभी तो सोचू हूँ। ये बिना धर्म करम वाला कौन का छोरा है। जो भगवान से भी नहीं डर रहा है। अरे तुम्हारी तो जाति ही ऐसी है। तुम जैसे शूद्र तो सदा गंदे काम करते हो। सदा गंद में रहते हो। तभी तो सदियों से तुम और तुम्हारी जाति के लोग नर्क भोग रहे है।

पंडित जी। हम नर्क भोग नहीं रहे है। हमको सदैव नर्क भोगने के लिए मजबूर किया जाता रहा है। यह काम आप, आपके बाप, बाप के बाप-दादा, दादा के परदादा और परदादा के लक्कड दादा मनु ने बहुत पहले मनु शास्त्र में आप जैसे परजीवी, मुफ्तखोर वंशजों को



सबका सिरमौर बनाने के लिए, शूद्रों की नस्लों को पढ़ने से वंचित करके किया था। तब से लेकर आज तक सदियाँ बीत गई। आपने हमें कभी आदमी नहीं समझा। हमसे सदैव बेगार करवाई। कभी खाने को नहीं दिया। आदमी तो दूर कभी आप लोगों ने हमें जानवरों के बराबर भी नहीं समझा। जानवर को रोटी तो दे देते हो। हमें कभी भरपेट रोटी भी नसीब न होने दी आपने। हमारी जाति नहीं होती। तो तुम्हारी नस्लें और सभी सवर्ण जातियाँ बीमारियों के कारण कब की मर खप गई होती।

आप लोगो ने तो अपना छोटा सा रास्ता निकाल लिया है। गंगा नहा लिया बस हो गए पवित्र। पंडितों ने आज तक नहाने-खाने के शिवाय और किया ही क्या है। नहाकर कोई पवित्र नहीं होता है। यह घर-परिवार, खेतखलिहान, वातावरण, समाज, दुनिया सभी काम करके नहाने से पवित्र होती है। एक हमारे लोग ही हैं। जो सफाई हो या कड़ी मेहनत सब काम करके नहाते हैं। हम लोग ही सब काम सदियों से करते आए हैं। आज भी इंसानियत हम में ही है। आप लोग सभ्य कहलाने वाले खादी ओड़कर हर तरह के दुष्कर्म करते हो। आप लोगों ने हमारे साथ क्या गाँधी के विचारों के साथ भी बलात्कार किया है। आप हम लोगों को क्या देगें। आप लोग को अपनी माँ-बहनों की इज्जत, अपने फायदे की खातिर दूसरों को सौंपते हुए शर्म नहीं आती है। हमारी माँ-बहनें जन्म लेते ही तुम्हें नर्क से निकालती हैं। तुम्हारे हलक में उँगली डालकर सफाई करती है। आपकी जच्चा-बच्चा का जीवन हमारी माँ-बहनें ही बचाती आई हैं। तभी तो आप जैसे कुलीन एवं उच्च वर्ण वाले लोग भगवान की पूजा अर्चना करने वाले मानव संवेदना विहीन पंडित बनते है।

अच्छा। लगता है। यह मेरी जाति की औरत है। तभी तो तुझे इतना दर्द हो रहा है। पंडित दीनानाथ भट एक साँस में बोल गए।

मुझे नहीं मालूम है। पंडित जी। यह औरत कौन है और किस जाति की है। और कहाँ की रहने वाली है।

बहन आप कौन जाति की हैं। संतोष ने उस औरत से पूछा।

भइया। मैं कानकोन के रहने वाले पंडित कृपा शंकर कोरेगांवकर की पुत्रवधू हूँ। मेरा नाम रमा पाण्डे है। घर में सब बीमार है, नहीं तो मुझे इस हालत में कार में छोड़ने के लिए आ रहे थे। डॉक्टर ने यात्रा करने के लिए मना भी किया था। फिर मैंने सोचा क्यों इन्तजार करवाऊँ। बस में अकेली चली आई। यह मेरा दुर्भाग्य ही है। मेरे साथ यह हादसा हो गया।

लो। पंडित जी सभालो अपने खून को। मुझसे क्या-क्या बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे। अब क्यों आपकी बोलती बंद हो गई। संतोष ने गहरी साँस भरकर कहा।

बेटा संतोष। मुझे माफ करना। मैं मंदिर की महन्ती के मद में चूर होकर अंधा हो गया था। इंसानियत को ही भूल गया था। इंसानियत। किसी मंदिर में भगवान की पूजा अर्चना से बढ़कर होती है। यह मैं आज समझा हूँ। जब अपने आप पर बीतती है। तब किसी के दुख दर्द का सही मूल्यांकन होता है। ईश्वर मेरे सभी अपराधों को क्षमा करना।

अरे। बहू मुझे इस अक्षम्य अपराध के लिए माफ करना। मैं अनजाने में तुम्हारे लिए क्या-क्या अनाप-शनाप बक गया। तुम्हारा मुँह भी शाल से पूरा ढका हुआ था। पहचानने में गलती हो गई।

कोई बात नहीं पंडित जी। मैं सोच रही थी कि अभी दो घंटे में घर पहुँच जाँऊगी। मैं शर्म-हया के कारण आप लोगों को कुछ बताना भी नहीं चाहती थी। मेरे कारण आप लोगों के बीच बिना बात बहुत कहा सुनी हो गई। मैं इस कहा सुनी से बहुत घबरा गई थी। बड़े घर की बहूँ हूँ। मेरी वजह से बिना बात इतना बतंगड़ बड़ गया। बेचारे संतोष को मेरी वजह से आप लोगों से क्या-क्या कहना पड़ा। मैं खुद आप लोगों की गुनहगार हूँ। मुझे माफ करना।



चालक। मैं क्या करूँ। आप सबका क्या फैसला है।

ठीक है। बस चालक। आप बस को सीधे अस्पताल के कम्पाउण्ड में ले जाकर रोकना। किसी को रास्ते में नही उतारना है। बस के सभी यात्री साँस रोके अस्पताल आने का इन्तजार करते रहे। बस अस्पताल के अंदर आकस्मिक चिकित्सा भर्ती कक्ष के सामने जाकर रुकी।

आकस्मिक चिकित्सा विभाग में भर्ती के लिए कोई भी खून में सनी लथपथ स्त्री को छूना नहीं चाह रहा था। संतोष ने ही गोद में उठाकर रमा को स्ट्रेचर पर डालकर भर्ती करवाया। रमा संतोष की बांह पकड़कर रो पड़ी। भइया तुमने मुझे आज नया जीवनदान दिया है। ❐

## रम्पो का चेहरा

सर्दियों की रातें बला की लम्बी होती हैं। लेकिन गरीबों का क्या सोना होता है? सारी रात करवट बदलते या हुक्का गुड़गुड़ातें गुज़र जाती है। ठंड दूर करने का और कौन सा साधन धरा होता है। अभी भोर होने में कुछ देर है। इस साल तो हड्डी को चीर देने वाली कड़ाके की सर्दी पड़ रही है।

नहर के किनारे दबथला गांव में हर जाति के लोग रहते हैं। उन्हीं घरों में सुखराम चमार का भी घर है। गांव के सभी सवर्ण उसे सुक्का चमार के नाम से बुलाते हैं।

भोला ठंड के कारण अभी सो ही रहा है परंतु उसकी पत्नी उसे उठने के लिए कई बार कह चुकी है। वह है कि उठने का नाम ही नहीं लेता है। अन्त में जब उसके नहीं रहा गया। तब उसने अपने पति को झकझोर कर उठा दिया। "...अपने कक्का कूं न देख आओ! कैसें? आज तो वह उठे भी नहीं हैं," भोला अपने कक्का की बात सुनते ही चौंक पड़ा? तुरन्त उठा। आज न तो कक्का ने उसे आवाज दी, और न भजन ही गाए? उन्हें कुछ हो तो नहीं गया? वह चादर ओढ़ता हुआ लइयन-पइयन क्षण भर में द्वार पर पहुंच गया, द्वार क्या? दो पल्लू मढ़ैया थी जिसके द्वार पर बाजरा की करब को अरहर की लकड़ी से बांधकर टटिया बना दी गई थी। उसे रोकने के लिए अन्दर से आड़ी मजबूत लकड़ी लगाई गई थी ताकि-कुत्ता बिल्ली अंदर न जा सकें।

"कक्का? कक्का?" भोला ने मढ़ैया के द्वार से ही पुकारा। परन्तु जब उसे अन्दर से आवाज न सुनाई दी तो उसने जोर से पुकारा,



"कक्का, जवाब क्यों नहीं दे रहे हैं?" पर कोई आवाज न सुनकर वह घबरा सा गया। उसने मढ़ैया की टटिया हटाकर अंदर झांककर देखा। शरीर कथूला से ढंका हुआ था। उसने तुरन्त कथूला हटाकर देखा। आंखें और मुंह खुला हुआ देखकर वह धक् रह गया। फिर भी मन में तसल्ली देने के लिए उसने शरीर छूकर देखा। शरीर एकदम ठंडा पड़ चुका है। फटे-पुराने कपड़ों से सीकर बनाए हुए कथूला में इस कड़ाके की सर्दी से कैसे बचा जा सकता है? फूंस से बनाई गई झोंपड़ी में रात को हवा सन-सन करती आती रहती है।

भोला लगभग चीख पड़ा "अरे मेरे कक्का" रम्पो भी पति का रोना-पीटना सुनकर द्वार पर आ गई। वह अपने ससुर की एक-एक बात याद करके रो रही थी। "अरे मेरे कक्का! अब तुम्हारे बेटा को कौन धीर बधावैगौ, हाय! अब तुम्हारे नाती को कौन गोद में खिलावैगी, हाय! कक्का हमें तुम क्यों छोड़कर चले गए," मुहल्ले की औरतें चुप कराने में लगी थीं, परन्तु उसने चुप होने का नाम नहीं लिया।

मुहल्ले भर के आदमी-औरत सुखराम की मढ़ैया पर इकट्ठे हो गए। कुछ औरतें सुखराम की पुरानी बातें याद करने लगीं। झुनिया कहने लगी— "डोकर बड़े अच्छे थे। अपने काम से काम रखते थे। उन्होंने सारी उम्र गरीबी में ही गुजार दी, लेकिन भोलू के लिए तो मरे-जीते थे।" पुनियां ऐसे अवसर पर कहां चुप रहने वाली थी। वह बोली, "भोला को छोटे से पाला था। इसके लिए अपनी जवानी भूल गए थे। भोला की अम्मा तो जन्म देते ही मर गई थी। एक के बाद एक सात बच्चों को जन्म देने से उसका सोने जैसा शरीर कम उम्र में ही गल गया था।"

सकटू राम मुहल्ले में सबसे बड़ी उम्र के रह गए हैं, पूरे मौहल्ले के छोटे-बड़े सभी उन्हें बापू कहकर ही संबोधित करते हैं। उनका स्वभाव भी संतों की तरह है। लड़ाई-झगडें और मन-मुटाव से उन्हें कभी कोई लेना-देना न रहा। उनकी खासियत है कि मुहल्ले में कोई

भी मरे वहां सबसे पहले पहुंचते। थोडी-बहुत सहानुभूति व्यक्त करने के बाद मृतक की अर्थी तैयार करने में लग जाते।

सुक्खा की अर्थी क्या? मढ़ैया के सिरों पर बरसात से गल गई रस्सी से ढीले हो गए बासों को खींचकर गंड़ासे से उन्हें फाड़-बांधकर अर्थी तैयार कर ली।

बापू ने भोला से कहा, "भैया अपने कक्का के लिए कफन सामग्री और घी मंगवा ले? उन्हें आखिरी विदा तो ठीक तरह से कर दें।"

भोला रोकर कहने लगा। "बापू घर में तो एक रुपया भी नहीं है। मैं अभी पं. रामकिशन के पास जा रहा हूँ। कुछ रुपया उधार लेकर आऊं" वह लपकते हुए पंडित जी की हवेली पर पहुंचा। "पंडित जी हैं क्या?" अंदर से भारी आवाज में पंडित रामकिशन बाहर आते हुए बोले, "कौन है रे? काहे गला फाड़कर आवाज लगा रहा है। मैं कोई बहरा हूँ।"

"मैं भोला हूँ सरकार।"

पंडित रामकिशन का विशालकाय शरीर है। छोटी-छोटी मूंछे और आ सिर पर लम्बी चोटी लटक रही है। असरदार आवाज में वह बोले– "क्या बात है भोला?"

"सरकार! अब कक्का नहीं रहे। वह मुझे छोड़कर चले गए।" भोला कातर हो गया।

पंडित रामकिशन बड़े सुर्ता आदमी हैं। उड़ती चिड़िया के पंख गिन लेते है। वह आश्चर्य-चकित होते हुए बोले, "क्या?" सुक्का मर गया? अरे भाई वह तो बहुत बुरा हुआ। खैर होनी को कौन टाल सकता है, परन्तु बताओ कि तू कैसे आया है?"

"सरकार कक्का की लहास लगाने के लिए कुछ रुपयों की जरूरत है। घर में एक पैसा नहीं है।" कहते हुए वह फिर रोने लगा।

पं. रामकिशन गंभीरतापूर्वक सोचते हुए बोले– "भोला, सो तो ठीक है, पर तेरे बाप ने पहले पैसे ही नहीं लौटाए हैं। अब तू और रुपए लेने के लिए चला आया।"



गिड़गिड़ाते हुए भोला रोकर पैरों पर गिर पड़ा। "माई बाप! आप ही हम लोगों का एक सहारा हैं। आपने आज रुपए न दिए तो बस्ती वालों में मेरी नाक कट जाएगी।" पंडित निश्चयात्मक स्वर में सिर हिलाते हुए बोले– "भोला यह तो सब ठीक है लेकिन मुझे तेरा भरोसा नहीं हैं। तेरे बाप की तीन बीघा जमीन है उसे लिखकर कागज पर अंगूठा लगा दे। जब तू रुपया लौटाएगा तो मैं तेरी जमीन का कागज तुझे वापस कर दूंगा।"

"सरकार मुझे सब मंजूर है।" भोला की आंखे धरती में गड़ गई।"

पंडित रामकिशन मन ही मन खुश होते हुए। "अच्छा तो ठीक है घेर में ढोर-डंगरन कूं चारा डालकर सानी लगा दे। हां, गोबर भी हटा देना। मैं पूजा-पाठ कर के आता हूँ।"

भोला ने जल्दी-जल्दी सारा काम निपटा दिया कि शायद रुपए जल्दी मिल जाएं। वह द्वार की ओर टकटकी लगाए बेसब्री से इंतजार करने लगा। तभी पंडित रामकिशन बाहर आते दिखाई दिए।

पंडित रामकिशन ने पहले रुक्का लिखकर उस पर भोला के हाथ का अंगूठा लगवाया। फिर उसे रुपए दिए। घर पहुँचते-पहुँचते लगभग दोपहर ढल चुकी थी। सांत्वना देने वाले बस्ती के लोग भी जा चुके थे। कुछ बुजुर्ग और पड़ोसी वहां उसके इंतजार में बैठे हुए थे। उसे आता देखकर फिर से लोग इकट्ठे होने लगे।

नथुआ मृतक के शरीर को नहलवाने में सहयोग करने लगा ताकि क्रिया-विधि शीघ्रता से निपट जाए। गंगाजल के छींटे लगवाए। शरीर कफन में लपेटकर अर्थी पर रख दिया। ऊपर से कांस की रस्सी लपेट दी।

दस लोगों ने मिलकर अर्थी उठाई तो स्त्रियां फिर जोर से रोने लगीं। रम्पो तो अर्थी से चिपक ही गई। बड़ी मुश्किल से लोगों ने उसे अर्थी से छुड़वाई। भोला का हाल बुरा था। फिर भी वह अपने आपको संभालते हुए अर्थी को पकड़कर साथ-साथ चलने लगा। उसके साथ

चमार टोला के बहुत से लोग चलने लगे। लगभग गांव के एक फर्लांग दूर तक अर्थी के पैर आगे की तरफ रखे गए। बाद में चौरस्ते पर अर्थी का सिर बदलकर आगे और पैर पीछे कर दिए गए। वहीं पर जौ के आटे से बना पिण्ड बदलकर रख दिया। यहां से अर्थी को भोला अपने चचेरे भाई नन्नू के साथ मरघट तक ले गया। वहां पर अच्छी सी जगह देखकर लाश को धीरे से उतार कर रख दिया।

बापू मरघट में पहुंचते ही चिता तैयार करने में लग गए। चिता तैयार होते ही बस्ती वालों ने लाश उठाकर चिता पर रखी। बाद में लाश को कंडों से ढक दिया। भोला ने आंसू भरी आंखों से अंतिम बार पिता को देखते हुए परिक्रमा के बाद सीधे हाथ में कपूर और सिक्का रखकर दाह लगाने की अंतिम रस्म पूरी की। चिता अग्नि के प्रचण्ड वेग से धू-धू कर जलने लगी।

छिद्दू अपनी बीड़ी सुलगाते हुए बोले, "भैया! सुक्का ने विवाह के समय नया कपड़ा पहना था कि आज नसीब हुआ है।" चिता अधजली हुई तब अग्नि कुछ धीमी पड़ गई। उसे तेज करने के लिए भोला ने घी और सामग्री डाली। पिता की जलती हुई खोपड़ी में कपाल क्रिया की लाठी मारकर, कपाल को फोडकर उसमें घी डाला। तब मनीराम कहने लगे। "सुकराम को जीते जी कभी घी के दर्शन नहीं हुए परन्तु अब आखिरी वक्त में चिता पर घी डाला जा रहा है ताकि उन्हें मुक्ति मिल जाय।"

मरघट से लौटने पर कुएं से पानी लेकर सभी ने हाथ मुंह धोया। मलूक चन्द ने अंत में बाल्टी भरकर छींटे लगाए। उसके बाद सभी अपने-अपने घर चले गए। गरीबी में मौत का शोक मुश्किल से एक या दो दिन ही मनाया जा सकता है।

भोला के कक्का की मौत हुए अभी मुश्किल से एक माह बीत पाया कि परसाराम के लड़के की शादी में पूरे मुहल्ले के लोगों को



दावत दी गई। भोला को भी निमंत्रण आया। वह अपने बेटे जीता के साथ दावत खाने लगा। यही मौकर होता है जब चमारों को भरपेट खाना मिलता है। सभी खूब छिककर खाते हैं। जब पूरी पंगत ने खाना खा लिया तो लोग उठकर चलने लगे। भोला भी सीधे स्वभाव, उठकर चलने लगा। तभी खाना खिला रहे लोगों ने उसे बांह पकड़कर रोक लिया।

छिद्छू बोले, "भोला! तेरे कक्का दावत खाने के लिए नहीं आए हैं उन्हें जरा जल्दी से भेजना।" यह सुनते ही भोला बिगड़ गया, "तुम सब मेरी खिल्ली उड़ा रहे हो?"

पंचम बोले, "भोला! तुम्हारी नजर में तुम्हारे कक्का मर गए होंगे, लेकिन हमारी नजर में वो अभी भी जीवित हैं। तुमने अभी उनकी राख में से निकालने के लिए तेरहवीं थोड़े ही कर दी है जो हम मान लें कि सुखराम मर गए। इसलिए तुम उनका परोसा लेकर अभी बताओ कि तुम अपने कक्का की तेरहवीं कब कर रहे हो? तुमने भी सबके यहां परोसा खाया है तो खवाना भी पड़ेगा। भाई।"

भोला ने परोसा न लेने की लाख मना की, पर बस्ती के पंच अपनी बात पर अड़े रहे। आखिर में पंचों की बात मानते हुए उसे अपने कक्का का परोसा लेना ही पड़ा। इतना ही नहीं उसे अगली पूर्णवासी पर अपने कक्का की तेरहवीं करने का वायदा भी करना पड़ा। वह परोसा लेकर जब घर आया तो उसकी पत्नी ने जिज्ञासावश पूछ ही लिया कि यह परोसा किसका लाए हैं। भोला गुस्से में तो था ही। इस गुस्से को पत्नी पर उतारते हुए बोला— "दीखता नहीं है यह परोसा कक्का का है। मुहल्ले के पंचों ने जबरन दिया है। इतना ही नहीं। मैं उनसे कक्का की तेरहवीं अगली पूर्णमासी पर करने का वायदा भी करके आया हूँ।"

इतना सुनते ही रम्पो का पारा चढ़ गया। "यह तुमने क्या कर दिया। जहां पेट भरने के लाले पड़े हैं, वहां तेरहवीं कैसे हो पाएगी। तुम तो हम सबको मारने की व्यवस्था करके आए हो।" इतना सुनते ही भोला गुस्से से लाल हो गया। वह दांत पीसते हुए बोला! "सासु की, मुंह बन्द नहीं करती है तू और मेरी जान खाए जा रही है।"

रम्पो धीरे से बोली, "मुझे क्या! जब तुम्ही बरबादी पर तुले हो। बाप की जो निशानी तीन बीघा जमीन है उसे भी बेचकर बस्ती वालों को खिला दो। मुझे और मेरे मुलमुला से बालक को गंगा में ढकेल आओ। अच्छा है कि तुम्हारे कक्का राख में से तो निकल आवेंगे। घर का हर फैसला करने का हक तो मर्दों का है। चाहे घर लुटा दें। मरद गलत होते हुए भी सही हैं। औरतों का सही निर्णय भी गलत।"

भोला को भीतर ही भीतर एक ही चिंता खाए जा रही थी कि कक्का की तेरहवीं कैसे करें। उसका दिन तो इसी उधेड़बुन में जैसे-तैसे इधर-उधर बैठकर कट जाता। पर रात काटनी एक विकट समस्या बन गई थी। पत्नी से तो बोल-चाल ही बंद हो गई थी। अब बस एक हुक्का ही उसका सहारा बचा था। वह उसे देर रात तक गुड़गुड़ाता रहता।

रम्पो पति की इस चिंता से भली-भांति परिचित थी, परन्तु वह जानबूझकर इस सिलसिले में बात नहीं करना चाह रही थी। एक रात वह गहरी नींद में सो रही थी कि अचानक किसी की सिसकियों की आवाज से उसकी नींद टूटी। उसने देखा कि भोला चारपाई पर पड़ा सुबक रहा है। वह उठकर उसके पास आई। प्यार से पति की पीट पर हाथ रखा। भोला पत्नी के हाथ के कोमल स्पर्श से चौंका, परन्तु पत्नी को देखकर कोई प्रतिक्रिया नहीं की। वह रोता रहा। तब रम्पो से भी न रहा गया। उसने झट से पति को सीने से लगा लिया। जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया हो झट वह पत्नी के कंधे पर सिर



रखकर फूट-फूटकर रोने लगा। दोनों बड़ी देर तक एक-दूसरे के कंधे पर सिर रखकर रोते रहे। रोने से दोनों का मन हल्का हो गया। गुस्सा प्यार के आंसुओं में बह गया।

रम्पो बोली, "मैं तुम्हारी दुश्मन थोड़े ही हूँ। मैं तो चाहती हूँ कि बड़े-बूढ़ों की जमीन बची रहे। तभी हम सबके पेट के गड्ढ़े भर पाएंगे।"

भोला पत्नी की चिरौरी करते हुए बोला, "अरी भाग्यवान, तू ऐसे नाराज हो जाएगी तो में भला कैसे जीऊंगा। मैं तेरे सहारे मेहनत-मजदूरी करके पेट भर लूंगा। अब तू ही बता कि जब बस्ती के पंच हमारे हाथ में खपरा देने पर तुले हुए हैं। तो मैं क्या करूं।"

रम्पो बोली– "देखो जी, पंच परमेश्वर के बाराबर होते हैं। तो उन्हें भी न्याय की बातें ही करना शोभा देती हैं, परन्तु इन पंचों ने तो आंखों पर पट्टी बांध रखी है। हमें दर-दर के भिखारी बनाने पर तुले हुए हैं। मैं ऐसे पंचों के फैसले पर थूकती हूँ। ये कहते हैं कि तेरहवीं करके कक्का राख में से निकल आएंगे और तेरहवीं न करें तो कक्का राख में ही पड़े रहेंगे। सब मूर्खों की सी बातें हैं। इन्हें खाना-पीना ही दीखता है। एक दिन मुंह चिपड़ने के लिए जिन्दगी भर हमारे मुंह पर मुद्दीका बांधने पर तुले हुए हैं। तुम तो मर्द होकर भी बस हुक्का पानी बंद करने से ही घबरा रहे हो। मैं इन पंचों के फैसले के खिलाफ विद्रोह का डंका बजाकर रहूँगी। मैं तुमसे भी कह देती हूँ, तेरहवीं करने का नाम भी मत लेना। नहीं तो में कुएं में कूदकर मर जाऊंगी।"

भोला पत्नी की मरने की बात से घबरा सा गया, उसकी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा। उसे बीते दिनों की याद आते ही सिहरन होने लगी। पिछले सप्ताह के सात दिन काटना उसे सात जन्म काटने के बराबर लगे थे। वह बोला, "भाड़ में जाएं ऐसे पंच और उनका

हुक्का पानी। हम दोंनो एक-दूसरे का सहारा बनेंगे। बेटा जीतसिंह के सहारे जिंदगी काट लेंगे।"

भोला ने ढिबरी बालते हुए देखा कि रम्पों का चेहरा भी सोने सा चमक रहा है।

❐

# डॉ. उमेश कुमार सिंह

**जन्म:** 3 फरवरी 1962, नगौला, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)।

**शिक्षा:** एम. ए. (हिंदी साहित्य) अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (ए. एम. यू.) अलीगढ़-202001, एम. फिल एवं पी-एच. डी. जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी (जे. एन. यू.) नई दिल्ली-110067

**प्रकाशित कृतियाँ:** गुरुनानक देव और संत रविदास, एक तुलनात्मक अध्ययन (आलोचना) वृंद नीति : समाज और संस्कृति (आलोचना) सह-संपादित कृतियाँ, सागर बोध, सागर शुक्ति, समुद्र मंथन एवं लहरेंआदि। भाषा संस्थान, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली में भाषा शिक्षण कार्य, दिल्ली साक्षरता समिति द्वारा अम्बेडकर नगर में वर्ष 1991 में चलाए गए सम्पूर्ण साक्षरता अभियान में सह समन्वयक तथा शिक्षक के रूप में मलिन बस्तियों में कार्य, राष्ट्रीय समुद्रविज्ञान संस्थान, दोना पावला, पणजी, गोवा में वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी के रूप में अनुवाद कार्य तथा आकाशवाणी केन्द्र, पणजी, गोवा से कहानी एवं कविता पाठ।

**संपादन:** गोमंत दर्पण पत्रिका (नराकास उत्तर गोवा), एवं सह संपादक, साहित्य सेतु सागर हिन्दी पत्र (गोवा)

**सम्मान:** गुरु रविदास राष्ट्रीय सम्मान वर्ष 2003, भारतेन्दु राजभाषा साहित्य शिरोमण सम्मान वर्ष 2006, एवं भारत सरकार के विशेष प्रशस्ति पत्र वर्ष 1998 से 2005 प्रतिवर्ष।

**सम्प्रति:** व्याख्याता, साहित्य विद्यापीठ, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

**सम्पर्क:** साहित्य विद्यापीठ, म. गां. अ. हिंदी यूनिवर्सिटी, पंचटीला, वर्धा-44200 (महाराष्ट्र)

**सचलभाष:** (91) 0-9423307797